

फेहरिस्त (विषय सूची)

उन्वानात	सफाह नंबर
1. विलादत—ए—महदी—मौऊद अलैहिस्सलाम	5
2. जोनपुर	5
3. विलादत—ए—मुबारक	5
4. हिजरत से पहले के वाकिआत	6
5. दानापुर	14
6. उम्मुल मुसद्दिकीन की तसदीक	14
7. हजरत सानी —ए— महदी रजि. की तसदीक	14
8. हजरत बंदगी मियाँ शाह दिलावर रजि. की तसदीक	15
9. कालपी	16
10. चन्देरी	17
11. मान्डो (मान्डू)	18
12. कलमात—ए—तस्बीह	21
13. चापानेर	22
14. हजरत बंदगी मियाँ शाह निजाम रजि.	23
15. उम्मुल मुसद्दिकीन का विसाल (इन्तिकाल)	25
16. दौलताबाद	26
17. अहमद नगर	26
18. बीदर	27
19. मोहर—ए—विलायत	27
20. गुलबर्गा	28

उन्वानात	सफाह नंबर
21. बीजापुर और रायबाग	29
22. सफर-ए-हज शुरू	29
23. मौजिजा (करिश्मा)	30
24. काबा का तवाफ-ए-महदी अलै.	31
25. पहला दावा-ए-महदियत	32
26. हुजूर पुर नूर रसुलुल्लाह (स.अ.व.) की रजा	33
27. अहमदाबाद	33
28. हजरत बंदगी मियाँ शाह दिलावर रजि. की आमद	34
29. दूसरा दावा-ए-महदियत	39
30. सोला साँतेज	
(हजरत बंदगी मियाँ शाह नेमत (रजि.) आमद और तसदीक)	40
31. सौदा	41
32. कौम-ए-महदी से मुतअल्लिक हुजूर पुर नूर	
(स.अ.व.) की पेशीनगोई	42
33. पीरान पटन	43
34. हजरत बंदगी मियाँ सैय्यद खुन्दमीर (रजि.)	
की आमद और तसदीक	46
35. हुदूद-ए-कसब	48
36. सबूत-ए-महदी अहादीस और आयात से	54
37. बड़ली	56
38. दावा-ए-मौक्कद	57
39. जालौर	65

उन्वानात	सफाह नबर
40. नागौर	66
41. शहादत की फजीलत	67
42. जैसलमेर	68
43. मियाँ रजि. को बदला-ए-जात फरमाया	70
44. सफर-ए-सिंध	72
45. काहा नसरपुर	72
46. फर्ज नमाज-ए-दुगाना फरमाया :	73
47. "मुनकिरीन की इक्तिदा ना करो"	74
48. इताअत गुजारी का दर्स	83
49. मुसद्दिकीन कौन?	84
50. नगर ठट्ठा (हुकुम-ए-इखराज को कुबूल न फरमाया।)	84
51. दीदार की गवाही।	85
52. सफर-ए-खुरासान	92
53. बारगाह-ए- ईलाही में अर्ज	94
54. कन्धार	95
55. फराह मुबारक	95
56. दावा-ए-महादियत की तहकीक के लिए आलिमों की आमद।	97
57. दीदार-ए-ईलाही के गवाह	98
58. फरमाया : हमारा ईमान मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) का इमान है!	100
59. सात (7) सलातीन की अरवाह (रूह) मुबारक की हाजरी	104
60. फरायज-ए-विलायत	108
61. काफिला आ पहुँचा	116

उन्वानात	सफाह नंबर
62. फरमाया “सैयद महमूद की औलाद हमारे सर का ताज है!	117
63. हसनैन-ए-विलायत	117
64. तालीम-ए-सैयदैन	124
65. शरअ की पासदारी (पाबन्दी और ख्याल)	127
66. हजरत इजरार्इल अलै. ने अन्दर आने की इजाज़त तलब की	130
67. इमामुना अलैहिस्सलाम ने पर्दा फरमा लिया, तदफीन!	130
68. आखिरी मौजिजा	131
69. मीरों सैयद महमूद हूबहू महदी हो गए।	132
70. महदी से खुन्दमीर जुदा नहीं!	133

अर्ज है कि ग्राँकदर राए

1. विलादत—ए—महदी माऊद अलैहिस्सलाम

वालिदैन के नाम:—हजरत मीरों सैय्यद मुहम्मद महदी माऊद अलैहिस्सलाम के वालिद का नाम सैय्यद अब्दुल्लाह और खिताब सैय्यद खान और आपकी वालिदा का नाम मुबारक बीबी आमिना था। जो इबादत गुजार थीं। रातो को जागकर अल्लाह की इबादत किया करती थी।

2. जोनपुर

वालिदा का ख्वाब :- एक रोज बीबी आमिना ने देखा कि रात के आखिरी हिस्से में चाँद आसमान से उतरा और बीबी के गिरेबान में आ गया। फिर उसके बाद बीबी बेहोश हो गई। बीबी के भाई कयाम—उल—मुलक ने जब यह बात सुनी कि बहन बेहोश हो गई थी तो आए और देखकर कहा यह कोई मर्ज नहीं मगर जज्बा—ए—हक है। होश में आने पर बीबी ने अपना वाकिआ बताया, यह सुनकर भाई ने कहा कि तुम्हारे को जो लड़का होगा वह खातिम—ए—विलायत—ए—मुहम्मदिया होगा, बहन की कदमबोसी की और कहा हमको और हमारी सात पुशतो को तुमने नवाजा है। लेकिन इस मामले को जाहिर ना करना चाहिए, ऐसा न हो कि लोग रश्क करें।

अभी महदी माऊद अलैहिस्सलाम पैदा नहीं हुए थे। वालिदा के पेट में से एक आवाज आती थी। जिसको वालिदा सुनती थी। कि महदी हक है।

3. विलादत—ए—मुबारक:—

उत्तर प्रदेश के शहर जौनपुर में पीर के दिन, चौदह (14) जमादि—उल—अव्वल, 847 हिजरी मुताबिक नौ सितम्बर 1443 ई. को हजरत महदी माऊद अलैहिस्सलाम पैदा हुए। जिसके बाद जौनपुर शहर के तमाम बुत सर के बल जमीन पर गिर गए और एक आवाज आई। कुलजा अल—हक्क

व जहकल बातिल इन्नल बातिला काना जहूका जिसका मतलब ये है। कह दो हक आया और बातिल मिट गया बेशक बातिल मिटने ही वाला था।”

जब ये आवाज हजरत मखदूम शेख दानियाल रह. के कानों में पड़ी, जो जोनपुर के मशहूर आलिम और सूफी थे। और जब हजरत ने बुतों के सर के बल गिरने की भी बात सुनी तो वो सैय्यद अब्दुल्लाह साहिब (महदी मौऊद अलैहिस्सलाम के वालिद) के घर आए और मिले। सैय्यद अब्दुल्लाह साहिब ने बताया कि यह बच्चा जब पैदा हुआ तो बिलकुल पाक साफ था और पेशाब और पाखाना नजर नहीं आता, ये अपने दोनों हाथ शर्मगाह पर रखता है। कपड़े पहनने के बाद हाथ हटाता है। बच्चे के रोने की आवाज सुनकर लोग जज्बा-ए-हक में डूब जाते हैं। मखदूम शेख दानियाल रह. के पूछने पर कहा कि “आज की रात मैंने हजरत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैही-व-सल्लम को ख्वाब में देखा फरमाते है कि “हमने इस बच्चे को अपना हम नाम दिया है। मीरों सैय्यद अब्दुल्लाह ने ये भी कहा कि :-

इमामुना का मुबारक हुलिया

बच्चा रोशन पेशानी, बुलन्द बीनी (नाक) और पैवस्ता (मिले हुए) अब्दुल्लाह रखता है। और रंग गंदुमी है। सैय्यद अब्दुल्लाह साहिब ने दुसरी बार मिलने पर शैख साहिब को यह भी बताया कि हमने इस बच्चे की कुनियत अपने दादा की कुनियत पर अबुल कासिम रखी है। इसकी पीठ पर मोहर जैसी शकल दिखाई देती है। इसके जिस्म का साया भी नहीं पड़ता।

4. हिजरत से पहले के वाकिआत

(इन्तिजार-ए-महदी शुरू हो चुका था)

नबीं सदी हिजरी में महदी मौऊद अलैहिस्सलाम की पैदाइश का लोगों को और खास तौर पर अल्लाह वालो को इन्तिजार शुरू हो गया था। चुनानचे मखदूम शैख दानियाल रहमत उल्लाही अलैह को हालात सुनकर ये यकीन हो

गया कि यह जमाना महदी मौऊद की पैदाइश का है। गालिबन यही लड़का महदी मौऊद होगा। शैख ने सैय्यद अब्दुल्लाह साहब को “बारक अल्लाह और मरहबा कहा

हजरत खिजर अलै. दूध लाए

हजरत खिजर अलैहिस्सलाम इसके पहले एक बार दूध लेकर सैय्यद अब्दुल्लाह साहब के घर उस वक्त आए थे। जब सैय्यद अहमद साहब पैदा हुए थे। सैय्यद अहमद महदी अलैहिस्सलाम के बड़े भाई का नाम है। सैय्यद अहमद साहब ने यह दूध पिया लेकिन उनको उल्टी हो गई। दूसरी बार हजरत खिजर अलैहिस्सलाम फिर दूध लाए, यह दूध हजरत महदी को पिलवाया गया और आपने पी लिया, कोई उल्टी नहीं हुई इस इत्तेला पर हजरत खिजर अलैहिस्सलाम ने कहा कि यही वो लड़का है। जिसका एक मुद्दत—ए—दराज से (यानि एक जमाने से) इन्तिजार था।

जब महदी अलैहिस्सलाम ने बात करना शुरू किया, सबसे पहले यही फरमाया के महदी मौऊद आया फिर उसके बाद भी कभी—कभी आप यही फरमाते।

तस्मिया ख्वानी (बिस्मिल्लाह) के पहले ही से आप हजरत मखदूम शैख दानियाल के मदरसे को अपने बड़े भाई सैय्यद अहमद साहब के साथ जाते थे। शैख बहुत ताजीम से आपको बैठाते थे।

तस्मिया ख्वानी (बिस्मिल्लाह)

जब हजरत महदी—ए—मौऊद अलैहिस्सलाम की मुबारक उम्र चार साल, चार महिने, चार दिन हो गई तो आप के वालिद मीरों सैय्यद अब्दुल्लाह ने बिस्मिल्लाह पढ़वाने जबरदस्त दावत का इन्तिजाम किया और हजरत मखदूम शैख दानियाल को कहलवाया कि वो बिस्मिल्लाह पढ़े (पढ़ाएँ)। चुनांचे हजरत मखदूम शैख दानियाल ने बिस्मिल्लाह पढ़ाई अल्लाह तआला के हुक्म पर

आमीन कहने को हजरत खिजर अलैहिस्सलाम आए और बिस्मिल्लाह के खत्म पर आमीन फरमाया।

मदरसे में दाखिला

बिस्मिल्लाह के बाद महदी अलैहिस्सलाम ने मखदूम शैख दानियाल के मदरसे को जाना शुरू कर दिया।

(हिफज—ए—कुरआन और तकमील—ए—उलूम)

सात साल की उम्र में आपने कुरआन—ए—शरीफ को हिफज फरमा लिया। बारह साल के हुए तो उस वक्त तक आपने तमाम इल्म हासिल कर लिया था। (जो एक मौजिजा था)

“असद—उल—उलमा” का खिताब

इसके बाद तमाम आलिमों की मौजूदगी में हजरत मखदूम शैख दानियाल ने आपको “असद—उल—उलमा” का खिताब दिया जिसके मानी “आलिमों के शेर” के होते हैं।

अमानते:

इसके बाद हजरत खिजर अलैहिस्सलाम ने हजरत मखदूम शैख दानियाल के साथ खोकरी मस्जिद आने को कहा, और वो जो अमानते हुजूर पुर नूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मिली थी उनको हजरत महदी मौऊद अलैहिस्सलाम के हवाले फरमा दी। एक तो मुकफिल (ताला लगा हुआ) संदूक था जिसमें एहकाम—ए—विलायत थे। दूसरा पसरखुदा—ए—खजूर था। संदूक में तालीम जिक्र—ए—खफी और विलायत के ये एहकाम थे।

1. तस्दीक—ए—महदी फर्ज (यानि महदी मौऊद की तस्दीक करना पहला फर्ज)।

2. तर्क-ए-दुनिया।
3. तलब-ए-दीदार-ए-खुदा (अल्लाह को इसी दुनिया में देखने की तलब रखना)
4. उजलत अजखलक (अल्लाह के लिए उसकी याद के लिए अपने आप को गोशा नशीन कर लेना)
5. जिक्र-ए-खुदा द्वांम (चौबीस घंटे अल्लाह को याद करते रहना, यानि अल्लाह का जिक्र करते रहना)
6. तवक्कुल तमाम बर जात खुदा। (अपने तमाम मामिलात में सिर्फ अल्लाह पर भरोसा रखना)
7. सोहबत-ए-सादिकीन। (सच्चो और अल्लाह की तलब में सादिक लोगों की सोहबत में रहना, ताकी हर वक्त अल्लाह का जिक्र करते रहे और अल्लाह की तलब में रहे।
8. इन्कार-ए-महदी कुफर। (जो महदी का मुनकिर है वो अल्लाह के, रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के हुक्म से काफिर है।
9. हिजरत अज वतन (हर वो चीज जो अल्लाह की मुहब्बत में हायल होती है। उसको छोड़ना, इन में पैदाइश की जगह अपना शहर, मुल्क वगैरा भी आते है। लिहाजा उनको छोड़ना चाहिए।
10. उशर (अपनी जायज आमदनी का दसवाँ हिस्सा अल्लाह की राह में दे देना)
11. नौबत (रात के तीन पहर होते है। कम से कम एक पहर जो तीन घंटे का होता है। उस वक्त जागकर अल्लाह का जिक्र करना।

12. सवियत (अल्लाह की दी हुई कोई चीज नक्द या अनाज वगैरा को सब में बराबर-बराबर तकसीम कर देना या फिर जरूरत मंद लोगो में उनकी जरूरत के लिहाज से तकसीम कर देना)

इन एहकाम की हवालगी के बाद हजरत खिजर अलैहिस्सलाम ने इमामुना से जिक्र-ए-खफी की तालीम हासिल की और फरमाया कि अल्लाह तआला ने आपको हुक्म फरमाया है। कि जो कोई तेरे पास तलब-ए-हक लेकर आए उसको जिक्र-ए-खफी की तलकीन कर।

मुसदिक अव्वल-

हजरत ख्वाजा खिजर अलैहिस्सलाम ने मखदूम शैख दानियल से कहा कि "यह मर्द महदी-ए-मौऊद है। हमने उसकी तस्दीक की और तलकीन पाई अब तुम भी तसदीक करो और तलकीन हो जाओ शैख ने आमन्ना व सददकना (हमने ईमान लाया और तसदीक की) कहा यानि तसदीक-ए-महदी की और तलकीन जिक्र-ए-खफी हासिल की। इसी तरह हजरत खिजर के फरमाने पर महदी अलैहिस्सलाम के बड़े भाई मीरों सैय्यद अहमद साहब ने भी तस्दीक और तलकीन की दौलत हासिल की।

मुबारक अक्द

जब हजरत महदी-ए-मौऊद अलैहिस्सलाम की उम्र-ए-मुबारक उन्नीस (19) साल की हुई तो आपका मुबारक अक्द (शादी) आप ही के चचा अमीर सैय्यद जलालुद्दीन की दुखतर बीबी अलाहदादी से हुआ। एक साल बाद बीबी खुनजा हदन जी तव्वलूद हुई और इसके दो साल बाद हजरत बंदगी मीरों सैय्यद महमूद सानी-ए-महदी की विलादत-ए-मसूदा (पैदाइश) हुई। अल्लाह तआला के हुक्म पर सैय्यद महमूद नाम रखा गया। आप से एक छोटे भाई मीरों सैय्यद अजमल हुए और एक बहन बीबी फातिमा खातून जन्नत-ए-विलायत हुई। इसी मुकाम पर हजरत महदी मौऊद ने हजरत

बंदगी मियाँ सैय्यद महमूद सैदनजी खातिम—उल—मुरशिदीन के मुतअलिक पेशीन गोई फरमादी थी। जो हर्फ ब हर्फ सही साबित हुई। “हस्नैन विलायत”के उनवान के तहत हजरत का जिक्र आएगा।

एक वक्त हजरत महदी—ए—मौऊद अलैहिस्सलाम को हजरत रसूलुल्लाह स.अ. व. की रूह—ए—मुबारक से मालूम हुआ कि “रियासत गौद (बंगाल) की फतह तुम को दी गई है। सुलतान हुसैन शरकी जो रियासत गौद के बाज गुजार थे। उनको भी मालूम हुआ कि मुल्क—ए—गौद फतह होने वाला है। एक रोज हजरत महदी अलैहिस्सलाम ने बादशाह को जब वो मिलने को आए थे। तो फरमाया के इस्लाम का मुर्द्द (फरमाँबर्दार) होना जायज़ है। लेकिन कुफर का मुर्द्द होना जायज़ नहीं।

जिहाद में शिरकत

हजरत महदी मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस जिहाद में शिरकत फरमाई और राजा दलपत सिंह जिस हाथी पर सवार था। बिस्मिल्लाह कहकर तीर मारा जो उस हाथी के सर पर (में) धँस गया, दलपत खुद पलटा, हजरत ने उस पर तलवार का वार किया तो दलपत का जिस्म दो टुकड़े हो गया और उसका दिल बाहर आ गया, दिल पर उस बुत की तस्वीर थी। जिसकी यह राजा परस्तिश करता था। यह देखकर महदी अलैहिस्सलाम ने फरमाया “सुब्हान अल्लाह गैर हक (बातिल) की परस्तिश ने दिल पर ऐसा असर किया तो हक यानि अल्लाह तआला की क्या शान होगी।

आगाज हालत—ए—जब्बा

इसके बाद आप हालत—ए—जब्बा में चले गए। हजरत महदी अलैहिस्सलाम यह हालत—ए—जब्बा ऐसी तारी रही कि आपको इस दुनिया की कोई खबर नहीं रहती थी, मगर अजान की आवाज सुनकर थोड़ी होशियारी आ जाती थी और आपकी जौजा मुत्तहरा उम्मुल मुसद्दिकीन बीबी अलाहदादी रजि.

वजू करवा दिया करती थी। हजरत नमाज पढ़ लेते और फिर उसी हालत में चले जाते। यह जज्बा सात साल तक रहा, लेकिन इस तमाम अर्से में न तो आपने दाना खाया और ना ही एक कतरा पानी पिया, बावजूद ऐसी हालत में न तो एक नमाज छूटी और ना ही कोई हरकत शरियत के खिलाफ आपसे सरजद हुई जो एक मौजिजा था। एक रोज बीबी अलाहदादी रजि. ने दरयाफत किया “मीराँ जी कई साल हो चुके कोई गिज़ा आपके पेट में नहीं पहुँची है, क्या हाल होगा? हजरत ने जवाब दिया “जो कुछ बन्दे (यानि महदी अलैहिस्सलाम) की गिज़ा है! बन्दे को पहुँचती हैं।

तजल्लियात-ए-इलाही

एक रोज बीबी ने हाल दर्याफत किया, हजरत ने जवाब में फरमाया हक तआला की तरफ से तज्जली-ए-उलूहयत पये-दर-पये (मुसलसिल) ऐसी होती है, कि अगर इन दरियाओं से एक कतरा किसी नबी-ए-मुर्सिल या वली-ए-कामिल को दिया जाए तो तमाम उम्र कोई आगाही (होश व हवास) ना रहे। हक तआला का फरमान होता है, कि-ऐ-सैयद मुहम्मद इस वास्ते से कि हमने तुझे खातिमे-विलायत मुहम्मदी किया है। और तुझसे फरायज अदा करवाते हैं। यह हमारा एहसान व फजल तुझ पर है। सात साल खत्म हुए, एक रोज हजरत महदी-ए-माऊद अलैहिस्सलाम ने बीबी से पानी माँगा और फिर जज्बे में चले गए, सुबह के वक्त होशियार होने पर मालूम हुआ कि बीबी रात भर पानी लेकर खड़ी रही थी। अपनी तरफ से वजू किया और दुगाना पढ़ा दो रक्आत तह-यतल वजू जिसको दुगाना कहते हैं। और इसके पढ़ने की ताकीद हजरत ने फरमायी है। और दुगाना ना पढ़ने वाले को बखील-ए-इबादत यानि इबादतो का कंजूस फरमाया है।

उम्मुल मुसद्दिकीन को खुश खबरी:-

दुगाना पढ़कर आपने बीबी के लिए खुदा से दीदार की दुआ की। हजरत ने बीबी के हक में यह भी फरमाया था। जिसका मतलब ये है, कि कयामत के रोज जिस किसी को बहरा-ए-खातिम-ए-विलायत-ए-मुहम्मदी अता होगा उन सब की मज्मूइ (जुमला) मिकदार बीबी को दी जाएगी के बीबी हजरत महदी-ए-मौऊद अलैहिस्सलाम की पासबानी और खिदमत करती रहीं।

जज्बा खत्म हुआ:-

हालत-ए-जज्बा जुमला बारह साल रहा पहले सात साल आप अलैहिस्सलाम ने कुछ खाया पिया नहीं मगर बाद के पाँच साल में कभी-कबार आपने कुछ खा लिया था। जिसकी जुमला मिकदार साढ़े सत्रह सैर (17½) अनाज हुई थी। फिर आप होशियारी की हालत में आ गए। हालत-ए-जज्बे में ना तो कोई नमाज कजा हुई ना कोई खिलाफ-ए-शरिअत हरकत हुई और ना ही आपने कोई दावा फरमाया। महदी अलैहिस्सलाम ने बीबी की इस खिदमत पर खुश होकर फरमाया-ए-बीबी तुम से खुदा खुश हुआ जिसने तुम्हारे घर वालों को बख्शा अगलो और पिछलो को भी। (यह रिवायत हाशिया-ए-इन्साफ नामा से ली हुई हैं)

हिजरत का हुक्म -ए-ईलाही आया

सुल्तान हुसैन शरकी ने हजरत की खिदमत में सात गाँवों की सनद खाना की जिसको आपने फाड़ दिया जौनपूर से हिजरत का हुक्म-ए-खुदा मिलने पर आपने हिजरत शुरू कर दी। सुलतान की ख्वाहिश साथ चलने की थी, लेकिन आपने सुल्तान को इजाजत देकर वहीं रुक जाने को फरमाया।

5. दानापुर

जौनपुर से हजरत के साथ सत्रह (17) लोग थे। ये काफिला दानापुर पहुँचा।

6. उम्मुल मुसद्दिकीन की तसदीक

एक रोज बीबी अलाहदादी रजि. ने मामिला होशियारी की हालत में अल्लाह तआला की तरफ से किसी बात की इत्तिल्ला मिलना) देखा जिसमें अल्लाह की तरफ से मालूम हुआ, जिसको बीबी ने सुना, “हमने तेरे शौहर को खातिमे—विलायत—ए—मुहम्मदी किया है। उसकी तसदीक कर।” बीबी ने इस बात का इजहार हजरत महदी मौऊद अलैहिस्सलाम के सामने किया, हजरत महदी मौऊद अलैहिस्सलाम ने तमाम हाल और मामिले को साबित रखा (यानि बीबी की बात की तसदीक फरमाई) और फरमाया कि हमको भी हक सुब्हानाहु तआला की तरफ से मालूम होता है। कि हमने तुझको महदी मौऊद किया है, लेकिन जब इसका वक्त आएगा इजहार हो जाएगा। बीबी ने कदम बोसी की और कहा, “मीराँ जी इससे पहले मुझसे कोई भूल चूक हुई हो तो माफ फरमाईए और गवाह रहिए कि मैं मीराँ की महदीयत की तसदीक करती हूँ और जात—ए—मुस्तफा अलैहिस्सलाम के मानिन्द खून्द—कार (आप) के साथ एतिकाद रखती हूँ।”

7. हजरत सानी—ए—महदी रजिअल्लाहु अन्हु की तसदीक—

यह बातचीत खैमे (डेरे) के बाहर हजरत बदंगी मीयाँ सैय्यद महमूद सानी—ए—महदी रजि अल्लाहु अन्हु ने सुनी तो जज्बा—ए—हक हुआ और मस्त व बेहोश होकर जमीन पर आ गए। हजरत महदी मौऊद ने आकर अपनी गोद में उठा लिया और खैमे में आ गए, बीबी का हाथ उस शहजादे के सीने पर रखकर हजरत महदी अलैहिस्सलाम ने फरमाया “देखो, इस्तस्ख्वान (हड्डी), गोश्त, खून और पोस्त भाई सैय्यद महमूद का ला इलाहा इल्लल्लाह हो चुका

है। उसके बाद आँ हजरत ने हाथ अपने सीने पर रखकर इन फरजन्द के सीने पर रखा और फरमाया कि जो कुछ यहाँ डाला गया है। वहाँ डाला गया है। इस तरह तीन बार फरमाया। होशियार होने पर हजरत मीराँ सैय्यद महमूद रजि. अल्लाहु अन्हु ने तमाम वाकिआ जैसे कि वालिदा ने बयान किया था। शुरू से आखिर तक बयान किया और तस्दीक की।

8. हजरत शाह दिलावर रजि अल्लाहु अन्हु की तसदीक

हजरत बंदगी मियाँ शाह दिलावर रजि अल्लाहु अन्हु को राजा दलपत से जंग के बाद सुल्तान हुसैन शरकी ने पाया था और कहा था कि ये गनीमत का सरमाया है। (जंग में जो भी सामान दुश्मन छोड़ भागे या जीतने वाले को जो माल मिले उसको माल-ए-गनीमत कहते हैं।) बारह साल हजरत शाह दिलावर रजि. अल्लाहु अन्हु को सुल्तान ने उनकी बहन को दिया जिनकी कोई औलाद नहीं थी। हजरत शाह दिलावर रजि अल्लाहु अन्हु घंटो अल्लाह के इश्क में डूबे रहते थे। ये देखकर सुल्तान और उनकी बहन ने महदी अलैहिस्सलाम की खिदमत में हजरत शाह दिलावर रजि अल्लाहु अन्हु को दे दिया था, उसके बाद आप हर वक्त हजरत महदी मौऊद अलैहिस्सलाम की खिदमत में रहे। दानापुर में हजरत सानी-ए-महदी के बाद आप ही ने तस्दीक की थी। उस मौके पर मुरीद फरमाते वक्त हजरत महदी मौऊद ने फरमाया “मुरीद अल्लाह हो जाओ” (तीन बार ऐसा फरमाया।) फिर अपना मुबारक हाथ उनके हाथ पर रखकर तीन बार फरमाया “मुरादुल्लाह हो जाओ अभी हजरत इमामुना अलैहिस्सलाम का मुबारक हाथ आपके हाथ पर ही था कि हजरत शाह दिलावर रजि अल्लाहु अन्हु जब्ब-ए-हक में चले गए। जिसके बाद हजरत को मियाँ दुर्राज की मस्जिद में ठहरा दिया गया और महदी-ए-मौऊद अलैहिस्सलाम आगे रवाना हो गए। यह कैफियत सात साल तक रही, लेकिन इस तमाम अर्से में हजरत शाह दिलावर रजि अल्लाहु अन्हु से कोई नमाज नहीं छूटी।

9. कालपी

इस मुकाम पर हजरत बंदगी मियाँ शैख भीख रजि अल्लाहु अन्हु एक और साहब के साथ गाँव में गए थे। वहाँ बाज लोग रो रहे थे। हजरत के पूछने पर लोगों ने बताया कि उनका सरदार मर गया है। हजरत शैख भीख ने इस मुर्दे को देखकर फरमाया यह शख्स (आदमी) नहीं मरा है। उसका हाथ पकड़कर कहा कि उठ जाओ, फौरन वो जिन्दा हो गया, यह देखकर वहाँ के लोगों ने हजरत को ही नवउजु बिल्लाह खुदा कहना शुरू कर दिया। इससे डर कर हजरत मियाँ भीख वहाँ से दौड़कर महदी अलैहिस्सलाम की खिदमत में आए, महदी अलैहिस्सलाम ने मज्मूए को दूर करने का हुक्म दिया और हजरत शैख भीख से असल वाकिआ सुना और फरमाया “बहर हाल तुम अपने हाथों आप रूसवा हुए हो।” इस वाकिए से महदी अलैहिस्सलाम फिकर—मंद हुए तीन दिन का रोजा जिसको सौम—ए—विसाल कहते हैं। रख लिया और दुआ माँगी।

मुनाजात—ए—महदी कुबूल हुई

ऐ बारे खुदा मेरे पैरुओं (पैरवी करने वालों) को बला—ए—करामत में मुबतिला ना फरमा हक तआला का फरमान आया कि तेरे वास्ते से तेरे पौरुओ को हमने करामत की बला से रिहाई दी।

दानिस्तन ईमान, गुप्तन क्रुफ अस्त :—

हजरत शैख भीख रजिअल्लाहु अन्हु को तज्जल्ली ए—रुही (दीदार) हुई और आपने इमामुना की मौजूदगी में नारा लगाया कि हक “अस्त” (सब हक हैं) इमामुना अलैहिस्सलाम ने फरमाया “सिर्फ कहते ही हो या देखते भी हो? शेख रजि अल्लाहु अन्हु ने फिर वही कहा इमामुना अलैहिस्सलाम ने फरमाया “दानिस्तन ईमान गुप्तन कुफ्र अस्त”

हाँ, जानना ईमान है। कहना कुफ्र है।

हजरत महदी मौऊद अलै. के अल्फाज “दानिस्तान ईमान गुप्तन कुफ्र अस्त” वाहिदतुल वजूद के मस्ले की शरिअत की रोशनी में बलीग (मुक्कमिल, भरपुर) तशरीह है। जहाँ तक हमारा महदूद मुतालआ है। इमामुना अलै. ने ये इर्शाद सिर्फ एक बार ही और मियाँ भीख से ही फरमाया किसी और मुआमिले पर आपने “दानिस्तान ईमान गुप्तन कुफ्र अस्त नहीं फरमाया।

बीबी भीकिया रजि अल्लाहु अन्हा

इस मुकाम कालपी में राजा की बेटी बीमार थीं, और इमामुना अलैहिस्सलाम के पसखुर्दे की तासीर से सेहतयाब हो गई, राजा ने आपको खिदमत—ए—इमामुना अलै. में पेश किया, हजरत महदी अलैहिस्सलाम ने कुबूल फरमा कर आप का नाम बीबी भीकिया रजि. रखा और बीबी अलाहदादी रजि. की खिदमत में पेश फरमा दिया, उम्मुल मुसद्दिकीन के बेहद इसरार पर इमामुना अलै. ने बीबी भीकिया रजि. से अक्द फरमाया चंद रोज बाद बीबी भीकिया रजि. का विसाल हो गया।

10. चन्देरी

चन्देरी में हजरत महदी मौऊद अलै. की शोहरत पहुँच चुकी थी कि ऐसे वली—ए—कामिल हक को बातिल से जुदा करने वाले खातिम—उल—अम्बिया सल्लल्लाहु अलैह व सल्लम के बाद न कोई हुई है और ना कोई होंगें।

सज्जादों का अंजाम :-

इस शहर के मक्दूम जादों ने हसद के मारे कहला भेजा कि यहाँ से चले जाएँ। हजरत महदी—ए—मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया कि हक तआला का फरमान हुआ कि आगे बढ़ जा तो हम हुक्मे खुदाबन्दी के बिना पर आगे जाएंगे। सज्जादों के आदमी दोबारा आए और तकरार करते हुए कहा कि

निकल जाओ और धमकी भी दी। इमामुना अलै. और तमाम साथी अल्लाह के हुकुम पर वहाँ से रवाना हो गये और एक जंगल में रात बसर की। दूसरे दिन दो आदमी जो चन्देरी में रह गये थे वापस आने पर बतलाया कि वहाँ लोग शराब पी रहे थे, एक ओहदेदार का लड़का एक शेखज़ादे के हाथों मारा गया जिस पर वहाँ के हाकिम ने तमाम शेखज़ादों पर कत्ल व ग़ारत का हुक्म जारी किया। घरों को आग लगा दी गई और औरतों, बच्चों के साथ बदतमीज़ी की गई। वहाँ के लोगों की जुबान पर यही था कि यह मुसीबत उन सैय्यद (यानि महदी मौऊद) की बद दुआ से पहुँची है। हजरत महदी माऊद अलै. ने फरमाया कि “बन्दगान—ए—खुदा से किसी को कोई तकलीफ नहीं पहुँचती, लेकिन उनके किरदार के सबब ऐसा हुआ है,” फिर ये आयत सुनाई जिसका तर्जुमा है” जो तुम पर मुसीबत पड़ती है सो उस गुनाह की वजह से जो तुम्हारे हाथों ने किया है।

11. मान्डो (मान्डु)

सुल्तान गयासुद्दीन:—

जब हजरत महदी अलै. मान्डु पहुँचे इस शहर में यह ख़बर फैल गई। सुल्तान गयासुद्दीन को यह मालूम हुआ, वह बादशाह थे, लेकिन उनके बेटे नसीरुद्दीन ने उनको कैद करवा दिया था। बादशाह गयासुद्दीन ने कहलवाया कि मैं आँ हजरत के कदम देखने खुद आता, लेकिन नहीं आ सकता। एक दो आदमियों को भिजवाइये, हजरत ने सुल्तान की मजबूरी को देखकर हजरत बंदगी मियाँ सैय्यद सलामुल्लाह रजि. (बिरादर—ए—निस्वती इमामुना अलै.) और हजरत मियाँ सैय्यद अबूबकर (दामाद हजरत महदी मौऊद अलै.) रजि. अल्लाहु अन्हुम को रवाना फरमाया। सुल्तान ने दोनों को निहायत एहताराम से बिठाया और महदी मौऊद अलै. के हालात सुने और तस्दीक की और कहा ये अख़्लाक सिर्फ महदी मौऊद के हो सकते हैं यकीन के साथ

मालूम हो चुका कि यही ज़ात महदी-ए-मौऊद हैं। वक्त आने पर इसका इज़हार हो जाएगा। आप लोग मेरी तस्दीक के गवाह रहें।

हजरत से मेरी तीन दरखास्तें अर्ज कीजिये।

सुल्तान की दरखास्तें

1. खातिमा ईमान पर हो।
2. मौत मज़लूमियत की हो और दर्जा ए शहादत मिले।
3. क़यामत के दिन गिरोहे महदी के साथ हशर हो।

सुल्तान की तीनों बातों को महदी मौऊद अलै. ने पसन्द फरमाया और बारगाहे-ए-खुदा में मकबूल भी हुई।

सुल्तान ने 60 (साठ) किन्तार (बैल के लिए हुये चमड़े को कहते हैं) ज़र व जवाहर और अशरफियों से भरे खाना किये और इनमें एक करोड़ महमूदी सिक्कों की तस्वीह भी थी। इमामुना अलै. ने लाने वालों और इनके साथ आने वालों में यह तमाम दौलत तकसीम कर देने का हुक्म दिया था। जो तकसीम कर दी गई। तस्वीह को एक लकड़ी से उठा कर आपने ढफ़ बजाने वाले साइल को अता फरमा दी। हजरत बन्दगी मियाँ सैय्यद सलामुल्लाह रजि. ने कहा मीरों जी तस्वीह ला कीमत (बहुत ही कीमती) है- हजरत अलै. ने जवाब में ये आयत शरीफ़ पढ़ी “कुल मताऊद्दुनियाँ कलीला” यानि दुनियाँ की हैसियत ही थोड़ी है।

एक आदमी ने सवाल किया कि मीरों जी यह सब दौलत आपके फकीरों का हक़ था जो मुस्तहक़ हैं उनको आपने क्यों नहीं दिया? (यह सवाल ग़ालिबन किन्तार लाने वालों में से या साथ तमाशा देखने आने वालों ने किया होगा।)

फकीरान-ए-महदी तालिबान-ए-खुदा होते हैं:-

जवाब में इमामुना अलै. ने फरमाया- “ये लोग (फकीरान-ए-महदी) सब चीजें छोड़कर महज (सिर्फ) खुदा की तलब रखते हैं और सिवाए जात ए खुदा के कोई और चीज़ नहीं चाहते, यह ज़ात-ए- बारी तआला के मुस्तहिक है वहीं उनको नसीब होता है।” और यह तमाम माल उन्हीं लोगों का हक था। जिनके वो मुश्ताक होकर ताजीम व तकरीम के साथ उसके पीछे आए थे। वो तालिब इसी मता (मत्आ) चीज़ के थे वो चीज़ उनको पहुँची।

एक किन्तार महदी अलै. की बगैर इज़ाजत रख ली गई थी, तकसीम नहीं की गई थी, मालूम होने पर रोकने वाले साहिब से पूछा तुमने क्यों रखा? इन साहिब की माफी माँगने पर माफी फरमाते हुए वो किन्तार जिसमें चाँदी के सिक्के निकले थे सवियत (सब में मसार्वा तकसीम) करने का हुक्म दिया, चुनांचे इस हुक्म पर सवियत कर दी गई। जब नमाज़ के वक्त हजरत महदी अलै. बाहर तशरीफ लाये तो देखा कि लोग कम आये हैं। बतलाया गया कि आज जो सवियत हुई थी बाज़ार को गये है, हजरत अलै. ने अफसोस जाहिर किया और फरमाया कि थोड़ी सी चीज़ की वजह से ये लोग बन्दा-ए-खुदा (यानि जात-ए-महदी) की सोहबत, नज़र और नमाज बाजमाअत से बाज़ रह गये, अगर वो तमाम मिकदार (यानि सारे किन्तार) उन्हें मिल गई होती तो इन लोगों का क्या हाल होता?

महदी की ये शान है:-

सुब्हानअल्लाह- सुब्हानअल्लाह

हजरत महदी मौऊद अलैहिस्सलाम की ये रविश (आदत) मुबारक थी कि तालिबान-ए-मौला का अपनी मुबारक सोहबत और नज़र से दूरी पसन्द न थी।

क्योंकि आप महदी मौऊद अलै.की एक नजर एक हजार साल की मकबूला इबादत से बेहतर थी। तो ऐसी हस्ती-ए-पुरनूर से थोड़ी सी दूरी से भी तालिबाने मौला के लिए बहुत बड़ा नुकसान होता है। इसके अलावा हजरत अलैहिस्सलाम को नमाज में ताखीर का होना या बगैर जमाअत के नमाज से तालिबान-ए-मौला का नुकसान भी नापसन्द था। बाज लोग (खास कर मुनकिरीन-ए-महदी) यह एतकाद रखते है कि महदी ज़ाहिरी माल व दौलत जमीन से निकालकर तकसीम करेंगे ताकि लोग मालदार हों।

12. कलमात-ए-तस्बीह

इसी शहर मान्डु में हजरत बन्दगी मियाँ अल्लाहदाद हमीम रजिअल्लाहु अन्हु हजरत महदी मौऊद से मिले और तस्दीक की। महदवियों की मशहूर तस्बीह के अल्फाज़ आप ही को ख्वाब में सुनाई दिये, फिर इमामुना अलै. को आपने सुनाए इमामुना अलै. ने पसन्द फरमाया, उस वक्त से तस्बीह का सिलसिला शुरू हुआ। जो नौबत के हर पहर के खत्म पर दी जाती है। मौजूदा ज़माने में भी मुमकिन है कि नौबत का मुबारक अमल जारी हो इसके अलावा बाज मुर्शिदीन के पास बाद नमाज़-ए-इशा रोज़ाना तस्बीह देने का तरीका जारी है। और तमाम दायरों में आज भी बहरेआम के बाद तस्बीह का तरीका जारी है। इन्शाअल्लाह ये सिलसिला कयामत तक जारी रहेगा, चाहे किसी को बुरा ही क्यों ना महसूस हो।

मियाँ सैय्यद अजमल का विसाल

इसी मुक़ाम पर हजरत बन्दगी मीराँ सैय्यद अजमल का विसाल हो गया। दूसरी रबीउल अब्बल को हुजूर-ए-पुरनूर मुहम्मद मुस्तुफा सल्लल्लाहु अलैही व सल्लम के उर्स मुबारक का पकवान हो रहा था। हजरत महदी मौऊद अलै. ने यह दावत की थी, पकवान जारी था, हजरत सानी-ए-महदी

रजि. की गोद में छोटे भाई हजरत सैय्यद अजमल थे, अचानक दहकती हुई देग में गिर गये और विसाल हो गया।

हजरत सानी-ए-महदी रजि. को तसल्ली:-

इस वाकिए से हजरत सानी-ए-महदी रजि. बहुत रंजीदा हुए, इमामुना अलै. को इस बात की इत्तिला मिली, आप आए और बत्तौर तसल्ली फरमाए “क्यों ऐसे गमगीन और रंजीदा हो। अगर सैय्यद अजमल जिन्दा रहते तो तुम्हारे मुकाम को पहुँचते, लेकिन अल्लाह तआला ने तुम्हारे मुकाम पर किसी को नहीं पैदा किया।” तीन बार फरमाया और बहुत तसल्ली दी। (देखिये मौलूद मियाँ अब्दुरहमान रजि.)

हजरत मीराँ सैय्यद अजमल को एक पुराने कब्रिस्तान में जहाँ अट्ठारह हजार (18,000) आदमी मदफन थे, दफन किया गया। अल्लाह तआला का फरमान महदी अलैहिस्सलाम को पहुँचा कि ए सैय्यद मुहम्मद इस कब्रिस्तान के तमाम अहल-ए-कुबूर को सैय्यद अजमल के वास्ते से हमेशा के लिए बख्श दिया।”

13. चापानेर

मान्डु से यह पुरनूर काफिला चाँपानेर पहुँचा हजरत महदी अलै. के बयान को सुनने हजारों लोग जमा होते थे। बयान-ए-कुरआन और पसखुर्दा मुबारक की तासीर से लोग अपने होश व हवास में न रहते, और दुनिया से मुँह मोड़ लेते थे।

सुल्तान महमूद बेगड़ा :-

यह बात सुल्तान महमूद बेगड़ा (गुजरात के बादशाह) को मालूम हुई, उसने दो आलिम और दो अमीर भिजवाए कि मालूमात हासिल करें। महदी अलै. का बयान जारी था। सब पूरी तवज्जह से सुन रहे थे। किसी ने इन

लोगों की तरफ तवज्जह नहीं की इस बात से दोनों अमीर मोअतकिद हो गये और तल्कीन होकर वापस हुए। अलबत्ता आलिमों पर जो दुनियाँदार थे किसी ने तवज्जह नहीं की थी, जिससे इनको रंज हुआ, वापस आकर उन्होंने बादशाह से कहा कि मीराँ सैयद मुहम्मद वली-ए-कामिल व अकमल है, लेकिन बादशाह की ताज़ीम नहीं करेंगे। और बादशाह को तर्क दुनिया करना पड़ जायेगा।

अलगर्ज इन आलिमों के बहकावे में आकर सुल्तान महमूद इमामुना महदी अलै. की कदमबोसी और मुलाकात से महरूम रहा। हज़रत महदी अलै. ने फरमाया—

उन्होंने (आलिमों) बुरा किया क्योंकि तर्क दुनिया की तौफ़ीक़ मिनजानिब अल्लाह (हक़ तआला) है, दे या न दे। एक बार अगर वो आता तो ज़रूर उसको कुछ नफ़ा पहुँचता।

14. हज़रत बन्दगी मियाँ शाह निज़ाम रजि.

इसी मुकाम चापॉनेर में हज़रत बन्दगी मियाँ शाह निज़ाम रजिअल्लाहु अन्हु ने हज़रत महदी अलै. से मुलाकात की। अभी वो रास्ते ही में थे कि अल्लाह तआला का फरमान आया।

“ऐ सैयद मुहम्मद हमारा बन्दा आता है, हाथ पकड़ कर हम तक पहुँचा दे।”

यहाँ आने से पहले हज़रत शाह निज़ाम मदीना मुनव्वरा में शेख-उल-इस्लाम से मिले थे, तो उन्होंने कहा था कि ऐ मियाँ निज़ाम तुम्हारा ज़र्फ़ इस कदर बुजुर्ग (बड़ा) है कि सिवाये-खातिम-ए-विलायत-मुहम्मदिया सल्लल्लाहु अलैही व सल्लम के सिवा किसी से न भरेगा। “तुम उस जात-ए-आली का इन्तेज़ार करो।”

आठवीं सदी हिजरी खतम हो चुकी थी। नवीं हिजरी शुरू होने पर अल्लाह वालों को महदी-ए-मौऊद का इन्तेज़ार शुरू हो गया था। जैसा कि इमामुना अलै. के मामू मलिक खियामुल मुलक, मखदूम शैख़ दानियाल और सुल्तान गयासुद्दीन ने फरमाया था, आगे और भी हजरत का इन्तेज़ार-ए-महदी और यकीन पढ़ने को मिलेगा।

अलगर्ज अल्लाह तआला के हुक्म पर इमामुना अलै. बाहर तशरीफ लाये और शाह निज़ाम से बातचीत के बाद उनको जिक्र की तलकीन फरमाए। वो भी हजरत महदी अलै. के साथ आखिरी वक्त तक रहे। हजरत बन्दगी मियाँ शाह निज़ाम के हक में हजरत महदी-ए-मौऊद अलै.ने ये बशारतें फरमाई हैं।

मनाकिब हजरत शाह निज़ाम रजि. :-

1. देखे भी और चखे भी
2. दरिया नोश
3. मस्त मस्त होशियार-होशियार
4. कश्फ-ए-मलामत
5. आयत-ए-कुरआन का तुर्जमा ऐसा कि गाफिल नहीं करती इन्हें खरीद व फरोख्त अल्लाह के जिक्र से।
6. गवाही देने वाले अल्लाह के दीदार की चश्म-ए-सर से दार-ए-दुनिया में।
7. एक रोज हजरत अबूबकर सिद्दीक रजि. के सिफात का जिक्र था कि तीन सौ और चन्द सिफात थीं। बन्दगी मियाँ शाह निज़ाम ने पूछा उनमें से कोई सिफत हम में हैं? यह सुनकर महदी अलै. ने फरमाया कि "वो (तमाम सिफात) खुद सरापा तुम में हैं।"

15. उम्मुल मुसद्दिकीन का विसाल (इन्तिकाल)

चापानेर में उम्मुल मुसद्दिकीन बीबी अलाहदादी का इसी मुकाम पर विसाल (इन्तिकाल) हुआ, उससे पहले निज़अ के वक्त हज़रत महदी अलै. ने फरमाया “ऐ बीबी दायरे की बहने इन्तेज़ार में हैं कुछ कहो। बीबी ने फरमाया “हज़रत महदी अलै. के सदके से बारह साल हुए सर की आँख से खुदा को देखी और सजदा की। (हाशिया इन्साफ नामा)

अमल—ए—रसूलुल्लाह (स.अ.व.) की पैरवी

विसाल के बाद बीबी के कपड़ों में से एक सोने का तिनका निकला तो हज़रत महदी अलै. ने फरमाया “इसको गर्म करो और बीबी के तलवे को दाग दो, पैग़म्बर अलै. ने ऐसा ही किया है।” (अहले सुफ़फ़ा में एक सहाबी के इन्तेकाल के बाद उनके कपड़ों में एक दीनार था, जिसके बाद हुज़ूर (स.अ.व.) ने फरमाया कि एक दाग दें।)”

महदी अलै. के इस हुक्म की इत्तेला हज़रत बन्दगी मियाँ सैयद सलामुल्लाह रजि. को हुई जो कब्र खुदवाने गये थे तो दौड़े (भागते) हुए आये और कसम खाकर कहा ये तिनका बीबी का नहीं बल्कि साहिब जादी बीबी फातिमा का है।

हज़रत महदी अलै. ने तिनका जिसका है उनको वापस करने का हुक्म दिया और फ़रमाया “बन्दे को भी मालूम था कि बीबी मुफ़लिस थीं, खुदा के सिवा कुछ नहीं रखती थी लेकिन बन्दा शरिअत मुहम्मदी का ताबें हैं।”

मुनकिरीन—ए—महदी इस ख्याल में हैं कि महदी आकर माल जमीन से निकाल कर तकसीम करेंगे।

सवियत :-

सवियत मुसद्दिकीन बीबी अलाहदादी (रजि.) के विसाल मुबारक के बाद से सवियत का तरीका शुरू हुआ। (अल्लाह के नाम पर आई हुई कोई चीज या रकम वगैरह को सब लोगों में बराबर-बराबर बाँट देने या शदीद जरूरतमंदों को उनकी जरूरत के लिहाज से कुछ बढ़कर देने को सवियत कहते हैं।) वरना इस से पहले सब फुकरा और अहलो-अयाल-ए-महदी एक ही देग से खाते थे। जिसका इन्तेजाम बीबी रजि. फरमाती थीं।

16. दौलताबाद

चापानेर से हज़रत महदी मौऊद अलै. और आपके साथ के सब लोग बारहा बुरहानपुर दौलताबाद तशरीफ लाये। बाज औलिया अल्लाह के मुताल्लिक आपने बशारतें दीं।

खुद को गरीब कहना ही कमाल:-

एक बुजुर्ग का नाम शैख जैनुद्दीन जैनुल हक और दूसरे बुजुर्ग का नाम बुरहानुद्दीन था और वे खुद को गरीब कहा करते थे। दोनों के ताअल्लुक से पूछने पर हज़रत ने फरमाया खुद को गरीब कहना ही उनके कमाल की दलील है। आप थोड़ी देर के लिए हज़रत सैयद मुहम्मद आरिफ की कबर के सिरहाने ठहरे। यह बुजुर्ग शेख मुम्मन के नाम से जाने जाते थे। इमामुना अलै. ने फरमाया मुम्मन मत कहो इनका नाम सैयद मुहम्मद है।

17. अहमद नगर

दौलताबाद से आपका यह पुरनूर काफिला अहमद नगर पहुँचा। बादशाह मलिक निजामुल मुल्क बहरी को पहले नसीहत फरमाई और पान का पसखुर्दा इनायत फरमाया, मियाँ बीबी दोनों ने खाया, खुदा ए तआला ने लड़का अता फरमाया जो बुहनि-निजाम उल मुल्क मशहूर है- वो दक्कन का वली हुआ वो

खुद को इस कौम-ए-महदविया का खादिम समझता था। उसने हज़रत बन्दगी मियाँ शाह निज़ाम रजि. बन्दगी मियाँ शाह नेमत रजि. और बन्दगी मियाँ शाह दिलावर रजि. को अपने मुल्क बुलवाया। इसने अपनी लड़की महदी अलै. के साहिबज़ादे बन्दगी मीराँ सैयद हमीद के बेटे बंदगी मीराँ हज़रत सैयद मीराँजी ऊर्फ़ मीराँ साहब मियाँ की खिदमत में दी थी। हज़रत बन्दगी मियाँ शाह दिलावर रजि. ने इस बादशाह के हक़ में निज़ात की बशारत फरमाई थी।

18. बीदर

बादशाह बीदर मलिक बरीद ने ख्वाब देखा कि एक बहुत बड़ा शेर शहर के बाहर एक दरवाजे से दाखिल होकर दूसरे दरवाजे से निकल गया है। कुछ दिनों बाद हज़रत महदी मौऊद अलै. बीदर तशरीफ लाये। ऊलमा व मशाएखीन (मुर्शिदीन) ने ख्याल किया कि बादशाह ने जो ख्वाब देखा था, उस ख्वाब का इशारा हज़रत महदी मौऊद अलै. ही सलाम की जात से ही था।

हज़रत अलै. के सहाबा को गैब से यही आवाज़ आती थी कि “हमने तेरे मुर्शिद को महदी मौऊद किया है, तू इस पर इमान ले आ।” सहाबा जब इस बात की इत्तेला हज़रत अलै. को देते तो आप फरमाते थे। “बन्दे को भी हक़ तआला की जानिब से ऐसा ही मालूम होता है, जिस वक़्त अल्लाह तआला जाहिर (आशकारा) करना चाहता है इस अमर (बात) को आशकारा फरमाएगा। तुम जाओ और अपने जिक्र (काम) में मसरूफ़ रहो।

19. मोहर-ए-विलायत

हज़रत मियाँ शैख़ मोमिन तवक्कली रजि. जो एहल-ए-मारिफ़त (अल्लाह को पहचानने वाले थे) यकीन के साथ जान चुके थे कि यही जात महदी मौऊद है। अक्सर औकात ये महदी-मौऊद अलै. को वजू करवाकर हज़रत अलै. के वजू का गिरता हुआ पानी पी लिया करते थे। एक रोज आपने हज़रत को खाने की दावत दी। और गुस्ल (नहाने) करने की दरखास्त की

और जब हज़रत अलै. के जिस्म अतहर पर पानी डालने लगे उस वक़्त हज़रत अलै. की पीठ पर मौजूद—मोहर—ए—विलायत देखी और उसको बोसा दिया। हज़रत शैख मोमिन रजि. ने फरमाया था कि “बरोज—ए—हश्र (कयामत के दिन) अगर अल्लाह तआला मुझ से पूछेगा कि हमारी दरगाह में तू क्या तोहफा लाया है? तो कहूँगा कि इलाही ये दोनों आँखे लाया हूँ जिनसे मैंने खातिम—उल—वली की मोहरे विलायत देखी है।”

मोहर—ए—नबूवत की तरह मोहर—ए—विलायत—

यह बात याद रखने की है कि हज़रत रसूलुल्लाह सल्ल. अलै. व सल्लम की पुश्त—ए—मुबारक (मुबारक पीठ) पर मोहर—ए—नबूवत थी। जिसकी ज़ियारत हज़रत सलमान फारसी रजि. ने की थी।

आरिफ—ए—कामिल हज़रत काजी अलाउद्दीन बीदरी मुलाकात के लिए देर से आये क्योंकि कपड़े धो रहे थे। पूछे बगैर ही हज़रत इमामुना अलै. ने फरमाया। “दिल को पाक कर कपड़ों को धो या ना धो, क्योंकि सफेद कपड़ों पर निजात नहीं, ख्वाब ए गफलत की नींद ना सो।”

ये हज़रत इमामुना अलै. के पास आ गये। और हमेशा खिद्मत—ए—इमामुना अलै. में रहे और इमामुना अलै. के पहले दावा—ए—महदीयत— ब मुकाम—ए—काबा की गवाही हज़रत शाह निज़ाम रजि. और काजी साहब रजि. ने दी थी।

20. गुलबर्गा

रूह—ए—ख्वाजा ने अर्ज किया:—

हज़रत महदी मौऊद का इरादा डामोल जाने का था, लेकिन हज़रत ख्वाजा बन्देनवाज गेसू—दराज रह. की रूह की दरखास्त पर गुलबर्गा आए। वो अपने खलीफा के ख्वाब में आये, तोपी और शिजरा (बुजुर्गो के नाम) का

सन्दूक उठाकर ले जाने लगे और फरमाया, “हमारा ज़माना हो चुका। अब जमाना—ए—ज़हूर—ए महदी है।” हज़रत महदी अलै. जब यहाँ तशरीफ लाये तो दरगाह का कुफल खुद ब खुद खुल गया। आप अलै. रोजा—ए—ख्वाजा में दाखिल हुए, दरवाजा खुद ब खुद बन्द हो गया। और वहां बहुत देर तक ठहरे रहे। बाहर आने पर बतलाया कि जिसका मतलब यह कि ख्वाजा साहब ने चन्द रोज़ तक दावा—ए—महदीयत किया था, जब हकीकत मालूम हुई तो उन्होंने तौबा कर ली थी। इस बात (दावा—ए—महदीयत) पर शर्मिन्दगी को खत्म करने उन्होंने मुझे बुलवाया था।

ख्वाजा साहब के मुताअलिक हज़रत महदी अलै. ने फरमाया कि ज़ात—ए—सैयद मुहम्मद (ख्वाजा साहब) में बू—ए—रसूलुल्लाह पाई जाती है।

21. बीजापुर और रायबाग

गुलबर्गा से हज़रत महदी मौऊद अलै. बीजापुर तशरीफ लाए, वहाँ शाह हमज़ा वली—ए—कामिल के रोज़े में ठहरे थे। बीजापुर या बिदयापुर से आप रायबाग तशरीफ लाये और जामा मस्जिद में कियाम किया। वहीं से हज को जाने बदर ड़ाबोल (ड़ाभोल) तशरीफ लाए।

22. सफर—ए—हज शुरू

हज़रत महदी अलै. ने अल्लाह पर भरोसा रखने की तालीम दी है। जब यह मुबारक सफर शुरू हुआ तो आपने फरमा दिया “जो खुदा खुशकी पर देने पर कादिर है वही तरी (पानी) पर भी देगा।” साथ पानी तक रखने से आपने मना फ़रमा दिया।

जुमला तीन सौ साठ (360) मर्द हज़रात. साथ थे। यहाँ ये बात याद रखनी चाहिये कि जब इमामुना अलै. ने जौनपुर से हिज़रत का आगाज

फरमाया था उस वक्त आपके साथ बशुमूल अफ़राद-ए-खानदान सतरह (17) अफ़राद थे।

सफ़र शुरू हो गया, चंद मंज़िलो के बाद अचानक तूफान शुरू हुआ जो सुबह से शाम तक रहा। काफिले वाले परेशान हो गये और रोने गिड़गिड़ाने लगे।

हज़रत बन्दगी मियाँ सैयद सलामुल्लाह रजि. की बैचेनी और जहाज़ के डूबने के ख़ौफ़ खाने पर इमामुना अलै. ने फरमाया “खामोश रहो बन्दा कौन है?” फिर फरमाया, बन्दा क्या करे?” और किस वक्त तुमसे कहा था कि बन्दा खुदा-ए-तआला के हुक्म को टाल सकता है। मियाँ सैयद सलामुल्लाह रजि. ने अर्ज किया “मीराँ जी आप फरमा दीजिए कि आपके हाथ में खुदा-ए-तआला के खज़ानों की कुंजी नहीं है। उस वक्त हज़रत महदी अलै. ने फरमाया “अगर साहब (यानि अल्लाह तआला) अपने खज़ानों की कुंजी अपने बन्दे के हाथ में दे तो बन्दे की क्या ताकत है जो साहिब (अल्लाह) की रज़ा (मर्जी) के बगैर खज़ानों का कुपल खोल सके।

23. मौजिज़ा (करिश्मा)

इसके बाद आप मुस्कुराते हुए उठे और जहाज के किनारे पर आकर अपने हाथ से समन्दर की तरफ इशारा फरमाया। साथ ही तूफान ठहर गया सहाबा के पूछने पर आपने बतलाया “दरिया की मछलियाँ मुझे देखने के लिए निकली थीं ये बन्दा एक गोशे में था, मुझे ना देखकर वो शोर व गुल व फरयाद में पड़ गई थीं। जब मैं जहाज के किनारे पहुँचा तो मछलियों ने मुझको देख लिया और अपनी जगह पर लौट गई, तूफान ठहर गया।”

एक रिवायत है कि एक मछली वो थी जिसने यूनुस अलै. को अपने पेट में सम्भाल कर रखा था। इससे खुदा-ए-तआला का वादा था कि तुझको महदी-ए-मौऊद को दिखवा दूँगा। इस मछली ने महदी अलै.को देख लिया।

इस सफ़र में फाके भी पड़े। कुछ दिनों बाद एक किशती जिसमें खाने पीने और पकाने का सामान था। जैसे चावल-पानी-लकड़ी और हन्डियाँ। किशती वाले ने लाकर कहा कि ये चीजें अल्लाह ने भेजीं हैं। (यानि अल्लाह ने दिया है।) हज़रत महदी अलै. ने इस फतूह को कुबूल फरमाया “ लो ये रिज़क हलाल-ए-तैयब हैं। एक सहाबी के दिल में ख्याल आया कि एक वली अल्लाह का मज़ार रास्ते के दरमियान नजदीक था, हज़रत महदी अलै. उस वली की ज़ियारत के लिए वहाँ नहीं गये। अब वो जगह कहाँ और उस जगह पर पहुँचना कहाँ? हज़रत महदी अलै. ने एक तेज नज़र उन सहाबी पर डाली, सहाबी के नजरों के परदे हट गये, क्या देखते हैं कि हिन्दुस्तान के शहरों में आराम फरमा औलिया हैं। (यानि जिनके मज़ारात हिन्दुस्तान में हैं।) इस जगह हाज़िर होकर जहाज़ की रस्सियाँ अपने कंधों पर लिये खींचते चले जा रहे हैं। यह देखकर उन सहाबी ने हज़रत महदी मौऊद अलै. के हुज़ूर पुर नूर में आकर माँफी मांगी।

24. काबा का तवाफ-ए-महदी

जब काबे को पहुँचने के बाद महदी अलै. तवाफ के लिए आये तो हज़रत बदंगी मियाँ शाह निज़ाम रजि. ने देखा कि :-

काबा खुद महदी मौऊद अलै. का तवाफ कर रहा है।

इस वाकिये से मालूम होता है कि महदी-ए-मौऊद अलै. की मुबारक हस्ती काबे काबा है। जिस तरह असहाब-ए-फील काबे की अज़मत को घटाने और मिटाने आये थे और नाकाम हुए। (तफसील के लिए सूरह अलमतारा देखें)

इसी तरह अज़मत-ए-महदी को घटाने वाले मॉडर्न असहाबे फील भी इन्शाअल्लाह अब और आइन्दा हर जमाने में नाकाम व नामुराद रहेंगे।

25. पहला दावा महदियत

काबे के तवाफ—ए—महदी के बाद हज़रत महदी अलै. ने रूक्न व मुक़ाम के दरमियान लोगों की एक बड़ी ताअदाद के बीच में अपनी महदियत का पहला दावा (जिसको दावा—ए—गैर मोअक्किदा कहते हैं।)

यूँ फरमाया “मनित्तबानीफ होवा मोमिन”

जिसने मेरी पैरवी की वो मोमिन है।

उस वक्त हज़रत बन्दगी मियाँ शाह निज़ाम रजि. और हज़रत काजी अलाउद्दीन बदरी रजि. ने आमन्ना व सद्दकना (हमने मान लिया व तस्दीक की) कहकर हज़रत महदी अलै. के हाथ पर बैअत की। हज़रत खिज़र अलै. जो एक अरबी के भेष में थे, आमन्ना व सद्दकना फरमाया और दोबारा बैअत की। बाज और लोगों ने भी बैअत की। हज़रत महदी अलै. ने आयत कुरआनी से नसीहत शुरू फरमाई। बाज अरब भी बैअत हुए। आपने ज्यादा लोगों से बैअत नहीं ली।

दौरान कियाम इसी मुक़ाम पर फाके पड़े। शरीफ़—ए—मक्का से सवाल करने की आपने मांगने वालों को इजाज़त नहीं दी। और फरमाया।

“मोमिन के लिए सिवाय खुदा की जात के कोई चारा नहीं है।” एक रोज किसी ने पूछा कि अगर किसी ने तर्के दुनियां किया या तर्के तदबीर किया और वो फक्र—व—फाके से बेताब हो गया तो क्या करें?

“फरमाया मर जाये।” तीन बार यही फरमाया।

26. हुजूर पुर नूर रसुलुल्लाह (स.अ.व.) की रज़ा

इस जगह से जब आपने रिसालत पनाह हुजूर पुर नूर सल्ला. अलै. व सल्लम की ज़ियारत का इरादा फरमाया, तब हुजूर स.अ.व. ने रज़ा दी तुमको मदीना आने की जरूरत नहीं तुम्हारे दावे का वक्त करीब है तुम वापस जाओ।

इसी रज़ा के बाद आप जद्दाह से हिन्दुस्तान आये।

27. अहमदाबाद

आप देशोबादीव बन्दर और खम्बायत अहमदाबाद तशरीफ लाये। इस मुकाम पर आपका कियाम ताज़खान सालार की मस्जिद में अट्ठारह महीने (18) रहा।

हुजूर स. अ. व. की कामिल इत्तेबा:-

1. हज़रत महदी मौऊद अलै. का तरीका या रविश मुबारक सिर्फ यही थी जो कि आपकी ही शान थी। हुजूर स.अ.व. की तरह फ़राइज़ और मुअक्किदा सुन्नतों की अदाई।
2. हर वक्त गिर्या फकर-ए-ताम यानि हद से ज्यादा नादारी दुनियां की कोई चीज़ रूपया वगैरह आप पास नहीं रखते थे। तवक्कुल तमाम बर जात-ए-खुदा (हर मामले में अल्लाह पर कामिल भरोसा)
3. ज़िक्र-ए-इलाही की जानिब दावत फरमाते थे।

बयान-ए-कुरआन बा जुबान-ए-महदी-ए-मौऊद अलै. की ये तासीर थी कि बयान को सुनकर बाज़ लोग बेहोश हो जाते थे।

बयान-ए-कुरआन सुनने के लिए लोग मस्जिद सहन, दीवारों और दरख्तों पर बैठ और ठहर कर सुना करते थे। दूर और नज़दीक के लोग एक सा सुनते थे। और हर आदमी को उसकी मादरी जुबान में बयान और उसका

मतलब सुनाई देता था। जो एक मौजिजा था। महदी मौऊद अलै. के इस मौजिजे के सदके में उन्नीसवीं सदी के शुरू या दरमियान में लाऊडस्पीकर इजाद हुआ जिस से दूर व नजदीक के लोगों को एक सा सुनाई देता है। फिर उसके बाद ऐसे आलात् इजाद हो चुके हैं कि अक्वाम मुत्तहिदा (न्यूयार्क अमेरिका) में जब किसी मुल्क का सफ़ीर अपनी माद्री जुबान में तकरीर करता है तो उसका तर्जुमा दीगर जुबानों में हो जाता है।

इमामुना अलै. के बयान का ये मौजिजा भी था कि गुनहगार तौबा कर लेते थे, जो कोई मुरीद होता, फौरन दुनिया की मुहब्बत दिल से दूर हो जाती, जिक्र से उसको राहत मिलती, जो बात बरसों में हासिल न होती महदी मौऊद अलै. के सदके और वसीले से चन्द लम्हों में हासिल हो जाती।

तासीर—ए—सोहबत— इमामुना अलै.

तासीर सोहबत इमामुना अलै. का ये आलम था कि आलिम इल्म से, मुर्शिदीन रुश्द व हिदायत से, वजीर अपनी वजारत से, अमीर अपनी दौलत से, अहले दुनियाँ अपने कारोबार—ऐ— दुनियां से मुहँ फेर लिया करते। और हमेशा आपके साथ रहते। जुदाई या दूरी गवारा न करते।

28. हज़रत बंदगी मियाँ शाह दिलावर रजि अल्लाहु अन्हु की आमद

हज़रत बंदगी मियाँ शाह दिलावर रजि. का जज़्बा सात साल तक रहा। खुदा के फज़ल और महदी मौऊद अलै. के वसीले से इन तमाम सातो बरसों में हालात—ए—जज़्बे के बावजूद न तो कोई खिलाफ शरीअत अमल हुआ और ना ही एक नमाज़ छूटी। जज़्बा खत्म होने पर आप होश में आये और महदी मौऊद अलै. के ताअल्लुक से दरयाफ्त किया कि कहाँ हैं? खादिमों ने महदी अलै. की रवानगी के मुताअल्लिक बताया। यह सुनकर आपको अफ़सोस हुआ और आपने महसूस किया कि महदी मौऊद अलै. की जिस्म—ए—अतहर की

खुशबू मगरिब की सिम्त से आ रही है। फौरन उठे दिन और रात की फिक्र किये बिना महदी अलै. की खुशबू को रहबर बनाकर चल पड़े। अहमदाबाद पहुँचे, जहाँ हज़रत महदी अलै. हज से वापस आ चुके थे, जब नजर पड़ी तो हज़रत महदी ए मौऊद अलै. ने फरमाया “नज़र को तह करो” फौरन पूरी तरह होश में आ गये। फिर तो विसाल मुबारक महदी मौऊद अलै. तक साथ रहे। हज़रत शाह दिलावर रजि. के हक में हज़रत महदी अलै. ने बहुत सी बशारतें फरमाई हैं।

हज़रत बदंगी मियाँ शाह दिलावर रजि. के हक में फरमान—ए—महदी अलै.

दिलावर मत कहो—शाह दिलावर कहो। मियाँ दिलावर अशरफों से बढ़कर अशरफ हैं।

हक सुबहानहु तआला ने मियाँ दिलावर पर अर्श (सात आसमान के ऊपर) से तहतुस्सरा (सातवीं ज़मीन) से नीचे तक को ऐसा रोशन किया है “जैसे कोई शख्स अपनी हथेली में राई का दाना रखता हो।” हज़रत शाह दिलावर रजि. को ज़ाहिर करने वाले वाकियात बहुत हैं लेकिन इस जगह चन्द ही लिखे गये हैं।

हज़रत बदंगी मियाँ मलिक बुरहानुद्दीन रजि. :-

हज़रत बन्दगी मियाँ मलिक बुरहानुद्दीन मलिक रजि. जिस वक्त आये उस वक्त महदी अलै. आयत “ लन्तना लुल बिरा हत्ता तुनफिकु मिम्मा तुहिबून (हरगिज न पाओगे खैर को जब तक खर्च न करोगे अपनी महबूब चीज़) बिर (खैर) के मायने ज़ात—ए—खुदा ए तआला होने का इशारा हज़रत महदी अलै. ने फरमाया। हज़रत मलिक रजि. ने यह सुनकर तलवार और घोड़ा खिदमत—ए—महदी अलै. में पेश किया। महदी अलै. ने दरयाफत फरमाया ये किसलिए, मलिक रजि. ने अर्ज किया ये मेरी जान की हिफाज़त करते हैं

महदी मौऊद अलै. ने फरमाया "तो तुमको अपनी जान ज्यादा प्यारी है।" खुदा ए तआला तुम से तुम्हारी जान तलब करता है। उसको ना तलवार की जरूरत है और ना घोड़े की और ये बन्दा भी घोड़े और तलवारें जमा करने को नहीं आया।"

हज़रत मलिक रजि. ने यह सुनते ही फर्ज तर्क—ए—दुनियां अदा किया और हज़रत की सोहबत इख्तियार की। आप को कतई जन्नती की बशारत इमामुना अलै. ने फरमाई।

हज़रत बदंगी मियाँ मलिक गोहर रजि. :-

हज़रत बदंगी मियाँ मलिक गोहर रजि. बादशाह—ए—गुजरात के एतिमाद वाले खास और करीब रहने वाले थे और कीमियागिरी (सोना बनाने की तरकीब) जानते थे।

महदी ए मौऊद अलै. के ताअल्लुक से मालुम होने पर आये। तस्दीक की, तर्क—ए—दुनिया किया और सोहबत इख्तियार की।

हज़रत बन्दगी मियाँ मलिक गोहर का शुमार महदी—ए—मौऊद अलै. के बारह (12) कतई जन्नती असहाब में होता है।

इसी मुकाम अहमदाबाद में इमामुना अलै. का मुबारक क़याम 18 महीने रहा। यहीं पर हज़रत बन्दगी मियाँ शाह अब्दुल मज़ीद नूर नोश रजि. हाजिर—ए—ख़िदमत ए महदी अलै. हुए और दरबार—ए—महदी अलै. से कतई जन्नती की बशारत पाए। आपके भाई हज़रत बन्दगी मियाँ शाह आमीन मोहम्मद रजि. हाजिर—ए—ख़िदमत—ए—महदी अलै. हुए और इमामुना ने कतई जन्नती फरमाया मियाँ आमीन मोहम्मद रजि. बड़े आलिम थे। हज़रत महदी अलै. ने फरमाया कि तुम को मेरे बाद सय्याहत दर पेश होगी। (यानि सफर करोगें) और असहाब—ए—कहफ पर (जिनका ज़िक्र कुरआन में आया) से गुज़र होगा। इनको बेदार करके बन्दे की तस्दीक करवाना।

हज़रत महदी अलै. के इस इरशाद से मालुम हो रहा है कि आप अलैहिस्सलाम की तस्दीक किस कदर जरूरी है कि सोये हुए लोगों पर भी तस्दीक—ए—महदी अलै. फ़र्ज है। बेदार और जागने वाले इस पर गौर करें कि क्या वो मुसद्दिक हैं। यानि महदी मौऊद अलै. की तस्दीक की दौलत से मालामाल हैं या इनकार की जिल्लतों में गिरफ्तार हैं। या तस्दीक से फिरकर इन्कार का तौक अपनी गरदनों में डालकर दोज़खियों में अपना नाम लिखवा चुके हैं।

हज़रत महदी मौऊद अलै. के परदा फरमाने के बाद हज़रत बन्दगी मियाँ आमीन मोहम्मद रजि. ने बहुत से मुल्कों का सफर किया। हजारों लोगों ने तस्दीक—ए—महदी अलै. की दौलत पाई। इस तब्लीक का ये असर हुआ कि खुदा के फज़ल से आज तक रूस और चीन में महदवी मौजूद हैं। चीन के महदवी तो फरायज—ए—विलायत “हिज़रत” पर अमल कर रहे हैं और हर छः (6) महीने के बाद सारा माल व अस्बाब उसी जगह छोड़कर दूसरे मुक़ाम को हिज़रत कर जाते हैं। तफसीलात के लिए देखिये हज़रत सैयद याकूब सलीम साहब मरहूम की किताब हिदायत सफहा नं. 42।

जैसा कि आपने ऊपर पढ़ा है रूस व चीन के अलावा दुनिया के मुख्तलिफ हिस्सों में महदवी रहते और बसते हैं। चूंकि हमारा आपसी रब्त नहीं है इसलिए मालूमात नहीं हैं। पाकिस्तान बंगलादेश वगैरह में भी महदवी आबाद हैं। अगर कोई ये समझे कि महदवी सिर्फ हिन्दुस्तान में ही रहते हैं तो ये बात बराबर नहीं है।

हज़रत मियाँ हाजी माली:—

हज़रत मियाँ हाजी माली जो हिन्दु माली के बेटे थे और शुरू ही से अल्लाह की जुस्तजू और तलाश ए हक में रहते थे और अपने खानदानी पेशे में दिलचस्पी नहीं लेते थे। किसी से सुना कि काबतुल्लाह (अल्लाह का घर) है

और ये भी सोचा कि घरवाला घर में मिलेगा। हज को जाने का भी इरादा कर लिया था। रास्ते में हज़रत खिज़र अलै. ने मिलकर आपको कलमा पढ़वाया और नमाज़ का तरीका बतलाया और कहा कि अल्लाह, से मिलाने वाले आजकल अहमदाबाद में हैं। तुम वहाँ जाओ, तुम्हारी मुराद पूरी होगी। मियाँ हाजी माली अहमदाबाद में हुज़ूर अलै. से मिले। महदी मौऊद अलै. ने जिक्र-ए-खफ़ी की तलकीन फरमाई।

जिसके बाद उनको दीदार ए इलाही हो गया। तीन दिन तक दीदार से मस्त व मुस्तगरक रहे, चौथे दिन विसाल (इन्तिकाल) हो गया। आपकी तदफ़ीन के चालीस दिन बाद भी कब्र के फूल ताजा रहे। इत्तेला मिलने पर हज़रत महदी अलै. ने हुकुम दिया कि फूल हटा कर कब्र बराबर कर दी जाये ताकि लोगों में इस वाकिये से कब्र परस्ती का रूझान पैदा न हो। खुदा की शान से महदी अलै. का ये मौजिज़ा ज़ाहिर हुआ। हवा ऐसी चली कि फूल उड़ गये कब्र की मिट्टी उड़ गई और निशान ए कब्र बाकी न रहा।

इमामुना अलै. की शोहरत बहुत हो गई कि एक मर्द आया है कि जो कोई उस को देखता है ना इल्म में उससे आगे बढ़ सकता है ना मशीखत (मुर्शिदी) अपनी कायम रख सकता है और ना हाल-ए-दुनियां में से कोई शख्स अपने किसी काम पर बरकरार रह सकता है। और हर एक अपने आप से बाहर हो जाता है। दुनियाँ तर्क करना और जिक्र-ए-हक के लिए खिलवत (गोशा नशीनी) इख्तियार करता है।

इसी जमाने में बहुत से उलेमा-ए-रब्बानी और सुलहा-ए-हक्कानी (अल्लाह वाले आलिम और नेक लोगों) को बा जरिए कश्फ (ग़ैब से अल्लाह की तरफ) से मालुम हो चुका था कि यही ज़ात-ए-पाक ने दावा बा तकरार (दोबारा या बार-बार) नहीं फरमाया था। इन अल्लाह वालों ने हज़रत की जात से पूरी काबिलियत पा ली थी। कश्फ से भी इनको मालूम हो चुका था कि यही ज़ात महदी आखिर-उज्ज़मान-मौऊद ए रहमान हैं लेकिन दावे के

मुन्तज़िर थे क्योंकि रूकन-ए-असली (अहम बात) सुबूत ए महदीयत में दावा है जैसा कि नबूवत दो रूकून (दो अहम बातें) रखती है। एक दावा दूसरी इज़हार ए मौज़िजा है।

29. दूसरा दावा ए महदीयत

एक मुद्दत के बाद हज़रत महदी अलै. ने अल्लाह के हुक्म पर दूसरी बार दावा-ए-महदीयत ताज खान सालार की मस्जिद में फरमाया कि "हक़ तआला का फरमान होता है कि तू महदी-ए-मौऊद है" यह सुनकर सब अहले ईमान ने आमन्ना व सद्दकना कहा और इताअत इख्तियार की।

अब तक आप यह पढ़ते आये हैं कि लोग मुसलसिल महदवी होते जा रहे थे। अब ये पढ़िये कि लोगों ने इनकार भी किया और हदीस शरीफ में सदाकत व सच्चाई वाज़ेह हुई।

हुज़ूर पुरनूर स.अ.व. ने फरमाया था कि जब महदी (दरमियानी ज़माने में) आये तो उनकी मुख़ालेफत खुसुसन उलेमा व फिक़हा (यानि आलिमों और मज़हबी बातों के जानने वाले) ही करेंगे क्योंकि उनकी रियासत बाकि नहीं रहेगी।

मुनकिरीन से फरमाया :-

चुनाँचे चन्द मुनकिरीन आये वो लोग दिल में कुछ सोचकर और महदी अलै. को अज़माने आये थे। हज़रत महदी अलै. ने जो लोगों को दावते इल्लल्लाह (अल्लाह की तरफ आने की बातें) फरमा रहे थे, इन मुनकिरीन की तरफ रूख किया और ये आयत तिलावत फरमाई-

तरजुमा- मैं तुम से नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के खज़ाने हैं और ना ग़ैब की बातें जानता हूँ और ना ये तुम से कहता हूँ कि मैं फरिश्ता हूँ, मैं तो सिर्फ़ उसी की पैरवी करता हूँ जो मुझे वही की जाती है- ता आखिर" यह

सुनकर उन मुनकिरीन को सख्त हैरत हुई, उन्होंने जान लिया कि यह हमारा ही जवाब है। कुछ देर तक तो मुनकिरीन अपने में न रह सके, घरों के रास्ते तक भूल गये, सिर्फ ये ही बात समाई रही कि इस्लाम यही है। फिर थोड़ी देर के बाद ये हक बात उनको उनके हसद और दुनियादारी की वजह से बातिल और गुमराह नज़र आई। और नउजोबिल्लाह हज़रत महदी मौऊद अलै. को जादूगर और काहिन कहा। और लोगों को हक से रोकने की खातिर कहा कि कहाँ जाते हो? वो मर्द (यानि हज़रत महदी मौऊद अलै.) जादूगरी की तासीर रखता है। उसका चेहरा देखने के बाद दिल अपनी जगह नहीं रहता।

दुनियाँदार आलिम ही मुखालिफ—ए—महदी:—

ऐसे ही दुनियादार आलिमों ने सुल्तान महमूद को गुमराह किया और इमामुना अलै. और आपकी जमाअत के इख़राज पर आमादा किया। बादशाह का पैग़ाम मिलने पर हज़रत और तमाम साथी वहाँ से रवाना होकर एक करिया (छोटा सा गाँव) सोला—साँतेज तशरीफ ले गये।

30. सोला साँतेज

हज़रत बन्दगी मियाँ शाह नेअमत रजि. की आमद और तसदीक :-

इसी मुक़ाम पर हज़रत बन्दगी मियाँ शाह नेअमत रजि. ने हज़रत महदी अलै. से मुलाकात की। हुआ यूँ कि आप हुकुमत की नज़र में एक बागी की तरह मतलूब थे। आपके हाथ से कुछ लोगों और एक लड़के की जान भी चली गई थी। हुकुमत के सिपाही तलाश में थे आपके साथी पच्चीस सवार थे, जब इस करिया यानी सोला सान्तेज पहुँचे अजान की आवाज़ पर रूक गये, साथियों ने रूकने की मुख़ालिफ़त की, लेकिन आपने नमाज़ अदा की। नमाज़ पढ़कर आप पूछते हुए ख़िदमत आली महदी अलै. में पहुँचे, इमामुना अलै. ने फरमाया “आओं मियाँ नेअमत तुम नेअमत से मामूर (भरे हुए) हो”, उसी वक्त आप मुरीद हुए, दुनियाँ तर्क की और तमाम गुनाहों से तौबा की। पिछले

वाकिआत इमामुना अलै. को सुनाए, हज़रत महदी अलै. ने सुनकर फरमाया, “खुदा के गुनाह खुदा माफ करेगा लेकिन अल्लाह के बन्दों के गुनाह बन्दो से ही माफ करवाना चाहिये।

मियाँ नेअमत रजि. उसी वक्त माँफी मांगने निकले। सबसे पहले उस आदमी (अब्दुल्लाह हब्शी) के पास आये जिनके बेटे की जान आपके हाथ से चली गई थी। अब्दुल्लाह हब्शी ने आपकी तब्दीली देखी तो अपने बेटे का खून माफ़ कर दिया। अज़ान के बाद जो नमाज़ पढ़ी थी— उसी वक्त आपमें तब्दीली आ गई थी सिपाही भी जो तलाश में थे न पहचान सके थे। फिर सोहबत—ए—इमामुना की बरकत से ऐसी तब्दीली आ गई थी कि अब्दुल्लाह हब्शी ने माफ़ कर दिया। आप उन लोगों के पास जाते गये और माफी माँगते गये, उल्टा उन लोगों ने आप से माफी माँगी।

मनाकिब हज़रत बंदगी मियाँ शाह नेअमत रजि. :-

इसके बाद आप सोहबत—ए—इमामुना में आ गये और बहुत सी बशारतें पाईं। मसलन आपको मिकराज—ए—बिदअत (बिदअत की कैची) फरमाया। आँहज़रत अलै. ने “मियाँ नेअमत मर्द—ए—कल्लाश (फनाफिल्लाह बाकि बिल्लाह) हैं फरमाया।

31. सौदा

सोला सान्तेज से ये पुरनूर काफिला सौदा पहुँचा जो अहमदाबाद और पीरान पटन के बीच में हैं। एक मख़्दूमजादा बच्चा इमामुना अलै. की ख़िदमत में आया था, उसकी माँ के कहने पर उसका बाप लड़के की तलाश में इमामुना अलै. के पास आया। इमामुना अलै. तौहीद—ए—इलाही का बयान फरमा रहे थे और लोगों को अल्लाह की तरफ आने की दावत दे रहे थे। इस मर्द ने जब महदी—ए—मौऊद अलै. का पुर नूर चेहरा देखा तो दिल में सोचा हुआ सब भूलकर हज़रत अलै. की तरफ मुतवज्ज़ह हो गया। इतने में अल्लाह के नाम

पर कोई मिठाई आई, हज़रत अलै. ने तकसीम करने का हुक्म दिया, सवियत (सब में बराबर तकसीम) कर दी गई— सबके बराबर एक टुकड़ा इमामुना अलै. की खिदमत में पेश किया गया। कुछ देर बाद गन्ने के टुकड़े भी आए। सबके बराबर गन्ने में से आपकी खिदमत में एक हिस्सा पेश किया गया। आपने पहले से हाथ में रखी हुई मिठाई बाजू वाले साहब को दी और फरमाया “मोमिन जख़ीरा न कुनद” यानि मोमिन जख़ीरा नहीं करता या मोमिन को जख़ीरा न करना चाहिये। इस बात को सुनते ही उस आदमी पर एक जज़्बा तारी हुआ और वो रोने लग गया। बेटा बाप से डर रहा था— बाप ने कहा कि बेटा तू क्यों भागता है? मैं भी इस कदम मुबारक (यानि महदी मौऊद अलै. के मुबारक कदमों) को देखकर ऐसा बेखुद हो गया हूँ कि जो वादा तेरी माँ से (तुझको वापस घर लाने का) किया था नहीं कर सकता। इसने तर्क—ए—दुनिया की और बीबी को कहलाया कि हज़रत इमामुना अलै. के मुबारक कदमों से अलहदा नहीं हो सकता—अगर तुमको मुझसे गर्ज है तो आओ वरना तुम्हारा इख़्तियार तुम्हारे हाथ है।

32. कौम—ए—महदी से मुतअल्लिक हुजूर पुर नूर स.अ.व. की पेशीनगोई

किताब तमहीद में यह हदीस मुबारक है कि हज़रत नबी करीम स.अ.व. अलै. ने अबू ज़र रजि. से यह फरमाया “ऐ अबू ज़र क्या तुम जानते हो कि मुझे किस बात का ग़म है? और मेरी फिक्र क्या है? और मुझे किस बात का इश्तियाक (शौक) है? अबू ज़र रजि. ने अर्ज किया या रसूलुल्लाह” स.अ.व. हमें ख़बर दीजिए आपको किस बात का ग़म है, क्या फिक्र है और किस चीज का इश्तियाक है? तो आँहज़रत स.अ.व. ने फरमाया—

आह! मुझे अपने भाईयों की मुलाकात का शौक है, जो मेरे बाद होंगें, इनकी शान अम्बिया (नबियों) की शान होगी वो अल्लाह के पास शहीदों के

मुकाम वाले होंगे, जो अल्लाह तआला की खुशनुदी की तलब में (अल्लाह को खुशकरने की खातिर) माँ-बाप-भाई-बहिनो, बेटो-बेटियों से अपनी दौलत और ज़रिया-ए-मइशत (रोटी-रोज़गार आमदनी के तमाम जरिये) अल्लाह के वास्ते छोड़े रहेंगे। अपने आप को तवाज़ो (इन्केसारी) से हकीर किये रहेंगे। नफ़सानी ख्वाहिशात, दुनिया की लगुबियत (दुनिया की बेकार चीज़ों) की तरफ राग़िब न होंगे। सहाबा रजि. ने पूछा कि या रसूलुल्लाह स.अ.व. वो लोग कब आयेगें? तो आँहज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैही व सल्लम ने फरमाया चार सौ और पाँच सौ साला (यानि नौ सौ साल)

33. पीरान पटन

हज़रत महदी अलै. पीरान पटन में खान सरवर के हौज़ के किनारे ही उतरे हुए थे। यहाँ आप का मुबारक क़याम 18 महीने रहा। हज़रत शाह रूकनुद्दीन मज़ज़ूब ने ज़ियाफत की रोटियां और मौज़ (केले) खाने को भिजवाये जो ना तो कम पड़े और ना ही बचे। किसी के ताअज्जुब करने पर इमामुना ने फरमाया “शाह साहब अहले बातिन (बातिन के जानने वाले, साहब ए कश्फ) है, वो हाल बन्दे के इस्तक़बाल के लिए छह (6) मील आगे बढ़कर आये थे।

जुम्मा के दिन इमामुना अलै. नमाज़-ए-जुमा के लिए तशरीफ ले जा रहे थे, रास्ते में हज़रत शाह रूकनुद्दीन का हुजरा था, चूँकि शाह साहब मज़ज़ूब थे, कपड़ों का होश नहीं रहता था, ग़ैब से इमामुना अलै. के आने की इत्तिलाह हुई तो ख़ादिमों से फरमाया— लाओ वो मेरा जामा मुझे पहना दो, शरीअत का निगहबान आता है, जब इमामुना अलै. पर नज़र पड़ी तो ज़मीन को बोसा देकर फरमाया :- ए दीन के ताज, दीन के सुतून, खैर मक़दम, मरहबा नेक आना हुआ, आशिक बेकरार और परेशान थे और आपकी आमद का इन्तिज़ार कर रहे थे। बन्दा भी आपके ख़ादिमों में से है लेकिन मुश्किल

ये है कि शरीअत की इत्तेबा में माजूर है। हजरत महदी मौऊद अलै. ने चलते हुए जवाब दिया और आगे तशरीफ ले गये।

बाज़ आलिमों ने मुल्ला मोइनुद्दीन के साथ होकर इमामुना अलै. से बहस का इरादा किया और हजरत शाह रूकनुद्दीन मजजूब रहमतुल्लाहे अलैह के पास खुशखबरी और अपने हक में दलील लेने के ख्याल से आये। शाह साहब ने बहुत गजबनाक होकर फरमाया “तुम लोग हक से मुकाबला करते हो, फौरन तुम पर कहर-ए-हक नाज़िल होगा। तमाम दीन के चोर, मुसलमानों के रहज़न (रास्ते में लूटमार करने वाले) जमा हुए हैं। चूहों की तरह घंटी तैयार करके लाए हैं लेकिन बिल्ली के मुकाबले का कौन है? जो आकर उसके गले में ये घंटी बाँध दे। फिर फरमाया, सैय्यद मुहम्मद का खन्ज़र इस क़दर तेज और दराज (लम्बा) है कि तुम्हारे हलक तक पहुँच कर तुम्हारी आँतों को फाड़ डालता है।”

खिलाफ-ए-उम्मीद उलेमा को ये जवाब मिला था। सब के सब शर्मिंदा होकर वापस हुए, कोई भी हजरत महदी अलै. से बहस को न आया।

काजी दुबला शहर की फिक्र में:-

एक और नकल यह है कि मुल्ला मोइनुद्दीन से किसी ने पूछा कि तुमने मीराँ सैय्यद मुहम्मद से मुलाकात क्यों नहीं की? जवाब दिया- हम बखूबी जानते हैं कि सैय्यद मुहम्मद हक पर हैं और जो कुछ वो फरमाते हैं हक है, उनके साथ हुज़्ज़त व दलील से बात करने की ताक़त हम नहीं रखते- इन से मिलने के बाद जो कुछ वो फरमाएँ मान लेना लाज़िम हो जाता है, इस वजह से हमने उनसे मुलाकात नहीं की। पूछने वाले ने फिर पूछा “तुम खुदा को क्या जवाब दोगे कि जान बूझकर हक बात को कुबूल ना कर रहे हो।”

खुदा को यह जवाब दूँगा:—

मुल्ला मोइनुद्दीन ने यूँ कहा:—

“ईलाही सैय्यद मुहम्मद से मैंने मुलाकात की और उनकी दावत को कुबूल नहीं किया, ताकि दीन—ए—इस्लाम की कुव्वत बरकरार रहे और तबाह व बरबाद न हो।” (यानी महदवी हो जाने से इस्लाम की कुव्वत बाकी नहीं रहती) (उज़्र—ए—लंग खूब रहा) फिर मुल्ला ने कहा “मैंने नहीं सोचा कि अगर उनसे मिलूँ तो चूँकि वो हक पर हैं उनके कौल को कुबूल करना लाज़िम होगा।

1. जब मैं कुबूल कर लूँ तो तमाम उलेमा—ए—वक्त कुबूल कर लेंगे।
2. उलेमा कुबूल कर लेंगे तो सुल्तान महमूद बादशाह भी कुबूल कर लेगा। जब बादशाह कुबूल कर ले तो तमाम अहले—लशकर (फौज) भी तसदीक कर बैठते। और सैय्यद मुहम्मद तर्क—ए—दुनियां करने को कहते हैं। बादशाह और उसका लशकर सब फकीर हो जाएंगे तो गुजरात के अतराफ कुपफार तख्ता उलट देंगे और दीन—ए—इस्लाम ताराज (बरबाद) हो जाएगा इसी सबब से हमने मुलाकात नहीं की।

मुल्ला की बात मालूम होने पर हज़रत महदी अलै. ने फरमाया “तेरे लिए जात की फिक्र थी, बादशाह के फीलखाने (हाथीघर) की फिक्र से तुझे क्या काम?

बशारतें गुजरात के बारे में :—

इमामुना अलै. ने पीरान पटन और गुजरात के ताअल्लुक से यूँ फरमाया था कि :—

इमान की बू आती हैं।

इश्क जौनपुर से उठा और गुजरात ने उसे झेल लिया।

मुल्क-ए-गुजरात खान-ए-इश्क हैं।

तमाम मुल्कों में गुजरात अगूठी में नगीने जैसा है।”

इन गुजरातियों ने हमको थका दिया हर चन्द हक तआला की तरफ से इनको दिया ही जाता है यह बस नहीं कहते।”

इस मुकाम पर मलिक बक्खान हज़रत महदी अलै. से बैयत (मुरीद) हुए और दिल में सोचा कि (हज़रत बंदगी मियाँ) सैय्यद खुन्दमीर जैसे मुर्शिद के तलबगार हैं यही जात है।

34. हज़रत बन्दगी मियाँ सैय्यद खुन्दमीर सिद्दीक –ए – विलायत रजिअल्लाहु अन्हु की आमद और तस्दीक

मलिक बक्खान रजि. से इमामुना अलै. की जात-ए-पुर नूर की बात मालूम होने पर हज़रत बन्दगी मियाँ रजि. शर्फ-ए-मुलाकात के लिए रवाना हुए, मुलाकात हुई और मियाँ पर बेहोशी का आलम तारी हो गया। इमामुना अलै. ने फरमाया मेरे बिरादर सैय्यद खुन्दमीर यह बेहोशी की रविश अपने खानदान की नहीं है होशियार हो जाओ, फिर बन्दगी मियाँ रजि. का सर-ए-मुबारक अपने जान्-ए-मुबारक पर रखकर जिक्र-ए-खफी की तलकीन फरमाई।

अपने दहन-ए-मुबारक (मुबारक मुँह) से पान का पसखुर्दा अता फरमाया। होशियार करके नमाज़ के लिए लाए। इस मुलाकात पर महदी मौऊद अलै. ने फरमाया था। “हमारे भाई सैय्यद खुन्दमीर सिद्दीक हैं। (हज़रत बंदगी मियाँ रजि. को सिद्दीक-ए-विलायत रजि अल्लाहु अन्हु कहते हैं) और यह भी फरमाया था “बन्दा और यह एक जद्दी/हुसैनी सैय्यद है। (यानि एक दादा की औलाद)

जब हज़रत महदी अलै. नमाज़-ए-असर के लिए आए तो बन्दगी मियाँ रजि. को ऐसा दिखाई दिया कि चार फरिश्तों ने सर-ए-मुबारक पर आरा चलाकर सर अलग कर दिया। अल्लाह तआला की तरफ से सवाल किया गया हमारे हुजूर क्या तोहफा लाया है? अर्ज किया ए-बार-ए खुदाया औरत बच्चे नहीं रखता यूं यह सर तुझ पर कुर्बान है। हुक्म हुआ जो हमारा ख्वाहॉ (चाहने वाला) (यानि खुदा को पाने की आरजू रखने वाला) हो अपने सर से हाथ धो दे। अगर हमारी ज़ात को हासिल करना चाहता है तो अपना सर दें। मियाँ रजि. ने अर्ज किया एक सर क्या कदर रखता है 100 सौ सर हों तो कुर्बान कर दूँ।

असर, मगरिब, और इशा तीन नमाज़ें मियाँ ने बिना सर के ही अदा फरमाई। उसके बाद हुक्म-ए-खुदा हुआ तेरा सर हमारी अमानत है जिस वक्त हम तलब करें अदा कर। तीन दफ़ा पूछा गया कि तू जो कुछ चाहता है चाह- मियाँ रजि. ने अर्ज किया:-

“तेरी जात का तालिब हूँ और कुछ नहीं”

नमाज़-ए-इशा के बाद हज़रत महदी अलै. के हुक्म पर मियाँ रजि. ने अर्ज किया **“मीराँजी फूट पड़े वो आँखे जिन्होंने महदी को देखा हो बन्दे ने अपने खुदा को देखा।”**

तमाम वाकिआ बयान होने पर हज़रत मीराँ अलै. ने फरमाया।

हाँ भाई सैयद खुन्दमीर जो कुछ तुमने देखा तहकीक है, **खुदा को खुदा देखता है।** चिरागदान फ़तीला और रोगन के साथ तुम आये थे मगर चिराग-ए-विलायत से रोशन होना बाकि था, अब चिराग ए विलायत से रोशन किया जा चुका।

इस मुकाम पटन में हज़रत महदी अलै. ने फरजन्द दिलबन्द हज़रत बंदगी मीरों सैयद महमूद सानी-ए-महदी रजि. को कसब की इज़ाजत दी और यह फरमाया

“हर जा के बाशेद बा याद-ए-खुदा बाशेद”

तर्जुमा:- “जहाँ कहीं भी रहो अल्लाह के जिक्र के साथ रहो।”

हज़रत सानी-ए-महदी रजि. चापानेर तशरीफ लाए।

हुदूद-ए-कसब क्या हैं? उनकी तफसील बयान की जाती है।

35. हुदूद-ए-कसब

1. खुदा पर भरोसा करें, कसब पर नज़र न करें। जैसा कि कुरआन शरीफ में है” अगर तुम अल्लाह पर इमान लाए हो तो उसी पर भरोसा करो, अगर तुम मुसलमान हो।”
2. पाँच वक्त नमाज़ बा जमाअत अदा करें। अल्लाह तआला का इरशाद है।” कायम रखे नमाज़ और देते रहो ज़कात और रूकु किया करो रूक करने वालों के साथ।
3. आयत का मफहूम- जो अल्लाह की याद करते हैं खड़े और बैठे और लेटे हुए और गौर करते हैं आसमानों और जमीनों के पैदा होने में। नीज़ फरमान-ए-खुदा है- फिर जब तुम नमाज़ पूरी कर चुको तो अल्लाह की याद करते रहो खड़े बैठे और लेटे।
4. हिर्स ना करें थोड़ी सी गिज़ा और सतर-ए-औरत पर इक्तिफा (बस) करें।

मफहूम-ए-आयत:- तुमको ग़फलत में रखा मज़ीद की हिर्स ने यहाँ तक कि तुमने कब्रें जा देख लीं (यानी क़ब्र में जा पहुँचे।)

5. पूरा उश्न (उशर) अल्लाह की राह में दें।

इस सिलसिले में मफहूम-ए-आयत-ए-कुरआनी है और खर्च करो अल्लाह की राह में। या जो कोई लेकर आवे नेकी तो उसके लिए इस नेकी का दस गुना है।

6. तालिबान-ए-खुदा की सोहबत में रहें।

जो लोग अल्लाह की तलब में सच्चे और सादिक होते हैं, उनकी सोहबत फर्ज है जैसा कि आयत कुनु-मा-अस्सादेकीन यानि सादिकों के साथ रहो का हुक्म-ए-कुरआनी है।

7. हमेशा अपनी ज़ात पर मलामत करें।

अपने आप को मलामत करने वाला नफ़्स ही नफ़्स ए मोमिन है। जिसकी क़सम अल्लाह तआला ने खाई है फरमाता है कि- “और कसम खाता हूँ मलामत करने वाले नफ़्स की।

इस सातवीं हद की अहमियत इसलिए है कि मलामत के कोड़े से नफ़्स मगरूर नहीं होता और दबा रहता है। अलबत्ता नफ़्स ताक में रहता है कि मौका मिलने पर बहका दूँ मलामत नफ़्स के जहर का बेहतरीन इलाज है। नफ़्स नेकी पर आदमी को मगरूर करता है तो खुश होने के बजाय नफ़्स से पूछना चाहिये कि और नेकी क्यों ना हो सकी? जो ना मिला उसको देखते रहने से भी नफ़्स को दबाया जा सकता है। एक बुजुर्ग ने यह इलाज बताया कि अपनी नेकियों को छुपाओ और बुराइयों को ज़ाहिर करो बल्कि हो सके तो अपनी ज़ात से कामिल कराहियत करते रहे।

8. हर दो वक़्त की हिफाजत करें, सुल्तान उनहार यानि फज़र की नमाज़ से तुलु-ए-आफ़ताब तक और सुल्तान-उललैल यानि असर की नमाज़ से

इशा तक कोई दुनियावी काम ना करें बल्कि दोनों वक्त सिर्फ (मुसल्ले) पर (हो सके तो बा जमाअत) जिक्कुल्लाह (अल्लाह के जिक्र) में मशरूफ रहें।

इरशाद बारी—ए—तआला है जिसका मफहूम यूँ हैं:—

और अपने परवरदीगार की याद करता रह, जी ही जी में गिड़गिड़ाता और डरता रह और धीमी आवाज़ से बोलने में सुबह और शाम और ना रह गाफिल।

9. अज़ान के बाद काम करना जायज नहीं। अगर कसब करे तो हराम हैं।

मफहूम—ए—आयत:—

“ऐ लोगों जो इमान लाए हो जब अजान दी जाये नमाज़ के लिए जुमा के दिन तो लपको अल्लाह के जिक्र की तरफ और छोड़ दो खरीद व फरोख्त।”

योम—ए—जुमा के अलावा जब हर नमाज़ की जब अजान दी जाय तो मोमिन का फरीज़ा है कि वो तैयार हो जाए नमाज़ और जिक्र के लिए।

10. झूठ ना कहे, — जो कुछ कुरआन में आया है उस पर अमल करे और तमाम ममनूआत से परहेज करें।

हुक्म—ए—इलाही है कि और बचते रहो झूठ से। साथ ही ये हुक्म भी है कि और जो कुछ तुमको पैगम्बर दें ले लो, और जिस चीज़ से मना फरमाएँ से बाज़ रहो।

और अल्लाह से डरते रहो, बेशक अल्लाह की मार बहुत सख्त हैं।

मलिक उस्मान बाड़ीवाल जो मुसद्दिक—ए—महदी अलै. थे उन्होंने बहुत ही एजाज़ व इकराम से हज़रत सानी—ए—महदी रजि. को अपने बाग़ में ठहराया, सुल्तान महमूद बेगड़ा से हज़रत की तशरीफ आवरी का जिक्र किया,

बादशाह ने अपने दो खास आदमियों को हज़रत के इस्तकबाल के लिए भिजवाया इनके हमराह हज़रत सानी—ए—महदी रजि. तशरीफ़ लाए— मुलाकात के बाद सुल्तान ने निहायत अकीदत से हज़रत की खिदमत में दो सौ (200) सवारों का मन्सब, बेरम गाँवों (विरम गाँव) और सान्चुरी की जागीरें नज़र की।

हज़रत मलिक बक्ख़न रजि. के बैअत होने का वाकिआ आप पढ़ चुके हैं। इनके घर वाले मलिक बरख़ुरदार पुकारते थे। इस नाम से इमामुना अलै. ने भी मुख़ातिब फ़रमाया था।

हज़रत मलिक बरख़ुरदार रजि. ने एक नया जूतों का जोड़ा खिदमत ए इमामुना अलै. में पेश किया और अर्ज़ किया आपके पुराने जूते दे दीजिए इसकी टोपी बना लूंगा और इसी टोपी की बरकत से अल्लाह तआला मुझे नजात देगा। हज़रत महदी अलै. ने फ़रमाया “ए मलिक बरख़ुरदार ये जूतियाँ किस चीज़ से बनी हुई हैं?” फिर फ़रमाया “ऊपर बकरी का चमड़ा नीचे गाय का चमड़ा। पस इतनी मुद्दत जो तुम बन्दे की सोहबत में रहे तुमको यही मालूम हुआ कि महदी इस बकरी और गाय के चमड़े से निजात दिलाता है। सुनो तो भला अगर बन्दा मोहब्बत की रूह से (मोहब्बत से) अपना पोस्त भी तुमको पहना दे और जो कुछ बन्दा असर और मगरिब के दरमियान कहता है तुम इस पर अमल न करो तो मेरा खुदा इस बात पर कादिर है कि बन्दे का पोस्त बन्दे को पहनाएगा और तुमको अज़ाब देगा।” हज़रत मलिक बक्ख़न (मलिक बरख़ुरदार) जब महदी अलै. की खिदमत में आये थे तो अपने साथ बहुत सा माल (रूपिया) भी लाये थे। कुछ माल अल्लाह की राह में दे दिया, कुछ अपने पास रख लिया। बाज़ दफ़ा लज़ीज पकवान कर लेते थे, जिससे खुशबु होती और दायरे के बच्चों को भूख की बैचेनी बढ़ जाती, इस बात को एक फ़कीर दायरा ने खिदमत—ए—महदी अलै. में अर्ज़ किया, उनकी तसल्ली के लिए हज़रत महदी मौऊद अलै. ने फ़रमाया “मियाँ नादार (मुफ़लिस मिसकीन) अल्लाह की अमान में हैं।

आपने मलिक बक्खन रजि. को तलब किया और पकवान का तरीका दरयाफ्त फ़रमाया। हज़रत मलिक रजि. ने अर्ज किया, पहले घी गरम करते हैं फिर उसमें मसाले डालते हैं, उसके बाद गोश्त को धोकर पानी शामिल करके इस बरतन में डालकर पकाते हैं। हज़रत अलै. ने फरमाया “देखो इस तरीके से पकवान की सारी खुश्बु निकल जाती है और लज्जत इसी खुश्बु में होती है, घी के बघार की आवाज़ भी सुनाई देती है और इसके धुएँ से आँखों को ज़रर (नुकसान) पहुँचता है।

इस मामले में जौनपुर का तरीका ख़ूब है कि गोश्त, मसाले, घी और पानी सब चीज़े ज़रूरी वज़न के मवाफ़िक ली जाती हैं इन सब को एक साथ पकाते हैं। जिससे खुश्बु बाहर निकलने नहीं पाती और आँखों को भी तकलीफ नहीं पहुँचती। यह सुनकर मलिक रजि. ने इमामुना अलै. के बताए हुए तरीके पर पकवाया, जो बहुत लज़ीज तैयार हुआ और इमामुना अलै. को दावत दी, खाना लाया गया। हज़रत महदी अलै. ने फरमाया।” खुदा रसीदा (अल्ला हवाले) उलमा के उर्स की बुनियाद डालने में क्या अच्छा मकसूद था कि इस खाने में से जो मैयत की रूह के इसाले—सवाब की नियत से पकाते हैं और बहुत से खाने वालों के दरमियान अगर कोई बन्दा ए खुदा भी खा रहा हो तो जब तक वो खाने में मशगूल रहे तब तक अगर मैयत पर अज़ाब हो रहा हो तो अज़ाब उतनी देर तक रोक दिया जाता है। “मलिक रजि. ने अर्ज किया “मीराँ जी ज़हे नसीब मेरे बाप की जिनका उर्स है खाने वाले महदी मौऊद अलै. हों।”

इस वाकिये से चन्द बातें मालूम हुई:—

1. जब कोई मुसद्दिक कासिब से फकीर हो जाता है तो उससे लज्जत एकदम नहीं छूटती, नफ़स एक कुत्ता है, उसको हड्डी डाल दें और जिक्र में मशगूल हो जाएँ। पकवान का तरीका शायद इसलिए बताया गया लेकिन इसमें ये बात भी समझा दी गई कि पकवान में भी वक़्त

बचाओं और हाँडी भूनने में जो तवज्जह सर्फ हो रही (इस्तिमाल) है उसको जल्द हटा लो और जिक्र में मशगूल हो जाओ।

2. दूसरी बात मरहूमिन के पकवान करो और अल्लाह वालों को खिलाओ, ताकि सवाब मिले और गुनाहों की वजह से होने वाले अज़ाब में कमी हो।

हज़रत महदी मौऊद अलै. ने खाने के बाद ये फरमाया “तुम्हारे बाप हमेशा—हमेशा के लिए बख़्शो गये।

पटन में ही हज़रत बंदगी मलिक इलाहदाद रजि. आये और तस्दीक और तलकीन से मुशर्रफ हुए। हज़रत मलिक इलाहदाद रजि. का ये कौल मशहूर और सिरत—ए—मुस्तकीम पर चलाने वाला है कि “खुदा के हुक्म से खातेमैन बराबर, महदी के हुक्म से सैयदैन बराबर।”

हज़रत बंदगी मलिक इलाहदाद खलीफ—ए—गिरोह रजि. के लड़के अक्सर बचपन में ही वफात पा जाते थे। इस वजह से आपकी जौज़ा बीबी मैमूना ने दाया के ज़रिये मलिक पीर मुहम्मद को महदी अलै. की खिदमत—ए—आली में भेजा कि हज़रत इस फरज़न्द हयात के लिए अल्लाह से दुआ करें। दाया ने मअरूजा किया कि ये मलिक इलाहदाद रजि. का बच्चा है इसकी हयात के लिए दुआ फरमायें—यह सुनकर हज़रत महदी मौऊद अलै. ने फरमाया—

“हम जिस—किसी के लिए दुआ करते हैं वो मर जाता है। दाया ये सुनकर और दाया की जुबानी मैमूना ये सुनकर रंजीदा हुई। हज़रत बंदगी मियाँ मलिक रजि. ने ये सुनकर मुस्कुराए और फरमाया—ग़म मत करो यह बच्चा सरसब्ज़ होगा, बड़ी उम्र पायेगा। महदी अलै. की दुआ से मर्ग—ए—मानवी (फना फिल्लाह—बाकी बिल्लाह) होती थी।

मुग़ल शहनशाह हिन्द हुमायूँ हज़रत महदी अलै. का मौतकिद था। चूनाँचे रिवायत है कि उसने हज़रत बंदगी मियाँ सैय्यद खुन्दमीर रजि. की तहरीर मक्तूब—ए—मुल्तानी को सोने के पानी से लिखवा कर अपने मुतालआ में रखा था। हज़रत बन्दगी मियां शाह कासिम मुजतेहद गिरोह रहमतुल्लाहे अलैह ने रिसाला—ए—अस्समी—ए—मुसदिकीन में तहरीर फरमाया है कि:—

हुमायूँ साकित और मायल ब तस्दीक था, उसके दो भाई हिन्दाल और कामरान हज़रत महदी अलै, की तस्दीक से मुशरफ़ हुए। (असामी मुसदिकीन) किताब “मक्तूब—ए—मुल्तानी” मुसन्निफा हज़रत बंदगी मियां रजि. तर्जुमा हज़रत मियां सैयद दिलावर उर्फ़ हज़रत गोरे मियाँ साहब किबला ने किया था। और ये किताब फारसी मतन के साथ “इदारा—ए—इशाअत कुतुब सलफुस्सालैहीन” से शाय़ा हुई थी जिसके इल्तिमास में मुतर्जिम साहब ने ऊपर बयान की गई रिवायत तहरीर फरमाई।

हज़रत बंदगी मियाँ मलिक मारूफ़ रजिअल्लाहु अन्हु:—

इसी मुक़ाम पीरान पटन में हज़रत बंदगी मियाँ मलिक मारूफ़ रजि. ने तस्दीक ए—महदी अलै. की और तर्क दुनियाँ करके हमेशा खिदमत व सोहबत ए—इमामुना अलैहिस्सलाम में रहे।

आपको इमामुना अलै. ने कतई जन्नती फरमाया है।

36. सबूत—ए—महदी अहादीस और आयत से

हज़रत मियाँ यूसुफ़ सोहेत रजिअल्लाहु अन्हु:—

हज़रत को एक मजबूत आवाज सुनाई दी थी कि “महदी मौऊद तवल्लुद हुए” हज़रत ने एक काग़ज पर सन, तारीख, दिन और घड़ी (वक़्त) लिख रखा था। जब महदी अलै. पीरान पटन तशरीफ़ लाए तो आने से पहले यह बात मशहूर हो चुकी थी कि “एक सैयद—ए—कामिल व मुकम्मिल ने

महदीयत का दावा किया है, आपने मुलाकात की और बयान—ए—मुबारक सुना, सोच लिया कि सिवा जात—ए—महदी अलै. के इस बयान की ताकत दूसरे किसी को नहीं, लेकिन क्या हो बेहतर होगा कि वो कागज मुझे मिले ताकि मुझे तसल्ली हो। वो कागज उस वक्त ना मिला, मुलाकात पर हज़रत महदी अलै. ने निशानदेही की कि फलॉ जगह पर वो कागज है। कागज मिलने पर वो आये और आपकी उम्र मुबारक दरयाफ़्त की। हज़रत ने आपके दामाद मियाँ अबू बकर रजि. से पूछने को कहा। हज़रत मियाँ अबूबकर रजि. ने उम्र के ताअल्लुक से बतलाया जो इस कागज में लिखे हुए तारीख़ दिन और साअत के लिहाज से बिल्कुल सच दुरस्त निकला।

बीदर में शेख़ मुम्मन रजि. ने जिस तरह इमामुना अलै. से गुस्ल करने की दरखास्त की और मोहर—ए—विलायत की ज़ियारत की थी, इसी तरह हज़रत यूसुफ़ सोहेत रजि. ने भी गुस्ल की दरखास्त की और मोहर—ए—विलायत की ज़ियारत की थी।

महदी अलै. ने फरमाया था “जो कोई भी मोहर—ए—नबूवत और मोहर—ए—विलायत देख ले नाज़ी (जन्नती) है।”

हज़रत ने महदी अलै. से अर्ज किया कि हुज़ूर महदीयत का दावा फरमायें तो बन्दा हुज्जत देने पर आमादा है।

हज़रत अलै. ने फरमाया मियाँ यूसुफ़ अपने काम (ज़िक्र) में रहो, हुज्जत देने वाली जात वही हैं जो महदी है। जब हज़रत यूसूफ़ सोहेत रजि. का इसरार बढ़ने लगा तो महदी अलै. ने फरमाया खुदा तुम्हें खामोश रखेगा, जिसके बाद उनकी जुबान बन्द हो गई, ज़्यादातर जज़्बे में रहे थे। हिजरत न कर सके थे, महदी अलै. के मुबशिशर हैं रजि.।

इमामुना अलै. के अक्सर सहाबा—ए—किराम (रजि.) आपके सामने अपनी मालुमात जो उनको ग़ैब से सुनाई देती थी या जो इलहाम (अल्लाह की तरफ

से मालूम होने वाली बात या बातों) से मालूम होते थे अर्ज किया करते थे। मसलन एक सहाबी ने यूँ कहा:—

मीराँ जी मुझको हक तआला की तरफ से मालूम होता है— “तुम्हारे मुर्शिद को हमने महदी—ए—मौऊद किया है, जाओ तस्दीक करो।”

इससे यह मालूम होता है कि आप ही की जात—ए—मुबारक महदी—ए—मौऊद है। आप दावा फरमाइये ताकि तस्दीक से मुशर्रफ हों।

लेकिन हज़रत महदी अलै. हर बार यही जवाब इरशाद फरमाते कि तुम अपने काम में रहो (ज़िक्र में) जिस वक्त हक तआला चाहता है आशकारा (ज़ाहिर) करता है।

जिस किसी शहर में आप अलै. तशरीफ लाते थे गैब से एक आवाज़ आती थी कि “महदी मौऊद आये हैं।”

37. बड़ली

पटन में अट्ठारह महीने क़याम रहा था वहाँ से हज़रत महदी—ए—मौऊद अलै. और आपके हमसफर हज़रात बड़ली आये। उस वक्त इमामुना अलै. की उम्र मुबारक अट्ठावन (58) साल थी और 905 हिजरी थी।

हज़रत बदंगी मियाँ सैयद खुन्दमीर रजि. के नाना मलिक मुबाज़र—उल—मुल्क ने मियाँ को अपने महल के ऊपर के कमरे में कैद करवा दिया था। उन्हें डर था कि मियाँ रजि. महदी अलै. के साथ चले जाएंगे। हज़रत बदंगी मियाँ रजिअल्लाहु अन्हु छः (6) महीने नज़रबंद रहकर एक दिन रस्सियों के जरिये ऊपर से उतरे और सीधे हज़रत महदी अलै. की खिदमत अक्दस में चले आए।

पीर का रोज़, सवा पहर का वक्त था। हज़रत महदी मौऊद अलै. खिरनी के झाड़ के नीचे एक साफ और खुले मैदान में तशरीफ फरमाते थे, सब

असहाब बैठे हुए थे। किसी ने यह खबर दी कि मीराँ जी—मियाँ सैयद खुन्दमीर आते हैं, यह सुनकर आप खुश हुए, आगे बढ़कर गले लगाए और फरमाया— ब्रादरम सैयद—खुन्दमीर आओ, तुम्हारा आना खूब हुआ। हक तआला अपना मकसूद खुद बनाता है।

38. दावा—ए—मौकद

तुम्हारी ज़ात सुल्तान—ए—नसीर है— तुम विलायते मुस्तुफा स.अ.व. के नासिर हो— हज़रत मुस्तुफा स.अ.व. ने खुदा ए तआला से अपनी नुसरत (मदद) के लिए नासिर माँगा था कि— “बन्दा दे मेरे लिए अपने पास से सुल्तान—ए—नसीर इस से मुराद तुम्हारी ज़ात है।”

हज़रत महदी मौऊद अलै. ने फरमाया— फरमान हक तआला बगैर किसी वास्ते के होता है कि “ऐ सैयद मुहम्मद तू महदी मौऊद है महदियत को ज़ाहिर कर।”

बन्दे ने कई उज़्र पेश किए और ज़ब्त से काम लेकर हुज़ूर बारी तआला में बजुबान इन्किसारी अर्ज किया कि “ऐ बार ए खुदा इस बार ए गिराँ से जिसको तू चाहता है सरफराज़ फरमा।”

हज़रत ने फरमाया कि हक तआला का फरमान होता है कि “ऐ सैयद मुहम्मद दावा—ए—महदियत ज़ाहिर कर और सुना दे अगर तूने ज़ाहिर न किया और ना सुनाया तो पस हम तुझको ज़ालिमों में शामिल करेंगे। बन्दे को सिवाए गर्दन झुकाने के कोई तद्बीर नहीं।

दावे के अल्फ़ाज:—

बन्दे को कामिल सेहत हासिल है, कोई मर्ज़ नहीं हैं, दीवानगी नहीं है, तवन्गरी है (अल्लाह का दिया है) मोहताजी नहीं है, होशयारी है बेहोशी नहीं है।

फिर फरमाया :-

“हक तआला का फरमान होता है कि ऐ सैयद मुहम्मद तू महदी-ए-मौऊद है।

इस अम्र (बात) को ज़ाहिर कर और खल्क (इन्सानों और जिन्नात) को मेरी तरफ आने की दावत दे।”

चन्द आयात के बाद हज़रत ने मजीद अट्टारह (18) आयात बज़ात-ए-महदी के हक में और बाज़ गिराह-ए-हमीदा सिफात (यानि महदविया कौम) के हक में हैं फरमाया और ये कहा कि “और वो महदी मैं ही हूँ। जो कुछ मानी-ए-कुरआन मेरी जुबान से निकलते हैं अल्लाह के हुक्म से है और अल्लाह की तालीम से है।” (तफसील के लिए पढ़िये शावाहिदुल विलायत)

फिर उसके बाद हज़रत महदी अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला का फरमान यूँ बयान फरमाया “सुम्मा इन्ना अलैना बयानहु (फिर बेशक हमारे जिम्मे है बयान इसका) तेरे हक में है और मुहम्मद (स.अ.व.) की इत्तिबा-ए-ताम हमने रोजी की है।

और फिर फरमान हुआ कि अव्वलीन व आखरीन का इल्म व मानी-ए-कुरआन का इल्म तुझे मैंने दिया है और ईमान के खज़ानों की कुँजी तेरे हवाले की है और दीन-ए-मुहम्मदी का मैंने तुझे नसीर बनाया है, जा और दावत कर, जो तुझे कुबुल करेगा मोमिन होगा। और जो तेरा मुनकिर होगा काफिर होगा।”

नीज़ हज़रत अलै. ने कहा कि हक तआला का फरमान होता है कि-

“ए सैयद मुहम्मद जिसने तुझे पहचाना, मुझे पहचाना, जिसने तुझे नहीं पहचाना मुझे नहीं पहचाना।”

फिर हजरत अलै. ने फरमाया :- “सैयद मुहम्मद बिन सैयद अब्दुल्लाह उर्फ सैयद खान की महदीयत का इन्कार कुफ़्र है।”

और फिर अपना पोस्त दोनों ऊंगलियों से पकड़ कर फरमाया “जो कोई इस जात की महदीयत का मुनकिर हो काफिर है।”

हज़रत अलै. के तफसीली बयान के लिए किताब शवाहिदुल विलायत देखिये।

हज़रत अलै. ने बयान ख़त्म किया तो हज़रत सिद्दीक-ए-विलायत रजि. और तमाम 360 साहाबा ने बुलन्द आवाज़ से आमन्ना व सद्दकना (हमसब इमान लाये और हम सब ने तस्दीक की) कहा।

इसी मकाम बड़ली में उलमा आये और ये सवालात किए-महदी अलै. ने जवाबात इरशाद फरमाये।

सवाल- आप अपने को महदी कहलाते हैं?

जवाब:- बन्दा नहीं कहलाता बल्कि हक तआला का फरमान इस तरह होता है- “तू महदी-ए-मौऊद है, दावा कर।”

सवाल- महदी का नाम मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह होगा आप का नाम मुहम्मद बिन सैयद खां है।

नोट:- महदी अलैहिस्सलाम के वालिद का नाम सैयद अब्दुल्लाह और खिताब सैयद खान था आलिमों ने खिताब को नाम समझा।

इमामुना अलै. का उलमा को जवाब:- खुदा-ए-तआला से कहो कि सैयद खान के बेटे को किसलिए महदी किया? खुदा ए तआला कादिर है जो चाहे सो करे।

हजरत पनाह सल्लल्लाहु अलैही वसल्लम के बाप मुशरिक थे। अब्दुल्लाह उन का नाम कैसे होगा? यह सहबु-ए-कातिब (लिखने वाले की गलती है) असल इबारत मुहम्मद अब्दुल्लाह है। और महदी भी अब्दुल्लाह है।

सवाल:— महदी पर तमाम लोग इमान लाएँगे और कोई भी मुनकिर न होगा।

जवाब:— मोमिन इमान लाएँगे या कुफ़ार?

उलमा का जवाब:—मोमिन इमान लाएँगे।

इमामुना अलै. ने फरमाया:— सब मोमिन इमान ला चुके और फरमाबदार हो चुके।

सवाल— “अल्लाह तआला फरमाता है” – बन्दा कुछ नहीं चाहता मगर वही जो खुदा चाहता है। (वहीं होता है जो मन्जूर-ए- खुदा होता है।) अब पस चाहिये कि जो कुछ बन्दा चाहता है हो जाए बहुत सी चीजें ऐसी हैं कि बन्दा चाहता है वो नहीं होतीं।

जवाब:— जिस किसी शख्स को इल्म-ए-शरीअत में थोड़ी सी वाकफियत हो यह सवाल नहीं करेगा।

इस आयत-ए-शरीफा के माने यह हैं कि इस तरह बन्दों के अफआल और अक़वाल (किए हुए और कहे हुए) हक तआला की मशीअत (मर्जी या हुकुम) के बगैर नहीं हैं इन के तमाम इरादे और ख्यालात भी। हक तआला की मशीअत और इरादे के बगैर नहीं हैं। (खुदा ने न चाहा और बन्दे का नाम न हुआ)

सवाल:— आप विलायत को नबूवत पर फज़ल देते हैं।

जवाब:—बन्दा फज़ल देता है या रसुलुल्लाह फज़ल देते हैं।” अल विलायतु अफज़लुल मिन-नबुवह (विलायत अफज़ल है नबुवत से)

सवाल:— इस हदीस के माने यह हैं कि नबी की विलायत नबी की नबूवत से अफज़ल है।

जवाब:—मैंने यह किस वक्त कहा कि मेरी विलायत नबी की नबूवत से अफज़ल है।

या मैं नबी से अफज़ल हूँ।

या किसी वली को किसी नबी पर फज़ल हैं?

कुछ जानते भी हो कि नबूवत के क्या मायने हैं? और विलायत के मायने क्या हैं?

सवाल:— आप ईमान के घटने और बढ़ने के कायल हैं और इमाम आजम, अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं कि इमान न घटता है न बढ़ता है।

जवाब:— (तर्जुमा आयत) मोमिन वहीं हैं कि जब अल्लाह का ज़िक्र किया जाये तो उनके दिल डर जाते हैं और उन पर जब अल्लाह की आयतें पढ़ी जाती हैं तो उनके ईमान को और ज्यादा कर देती हैं और वो अपने-परवरदीगार पर भरोसा करते हैं।

इस आयत के बाद फरमाया:— जो कुछ ईमाम आजम ने कहा है उन्होंने अपने ईमान की ख़बर दी हैं। ईमाम आजम का ईमान दरजा-ए-कमाल को पहुँच चुका था, और कमाल के बाद ना ज़्यादती होती है और ना नुकसान।

सवाल:— “ आप कसब को हराम फरमाते हैं।”

जवाब:— मोमिन के लिए कसब हलाल हैं लेकिन मोमिन होना चाहिये और कुरआन में गौर से देखना चाहिये कि मोमिन किस को कहते हैं।

सवाल:— आप इल्म पढ़ने से मना फरमाते हैं।

जवाब:—जो कुछ रसूलुल्लाह ने मना नहीं फरमाया बन्दा कैसे मना करेगा। लेकिन खुदा—ए—तआला जिक्र—ए—दवाम (24 घंटे अल्लाह का जिक्र) को फर्ज कहता है। खुदा के हुक्म से किताब—ए—खुदा (कुरआन शरीफ) के हुक्म से जो चीज़ जिक्र में रूकावट डाले (जिक्र में रूकावट डालने वाली या जिक्र में खलल डालने वाली) है ममनून है।

क्या इल्म पढ़ना

क्या कसब करना

क्या खल्क से मिलना जुलना

क्या त्वाना और

क्या सोना

गफलत हराम है और जो कुछ गफलत का मुज़िब (सबब या वजह) है हराम है। मोमिन को इल्म हासिल करना और कसब करना हलाल है चाहिये कि उसके शरायत को मलहूज रखे। और खुदा—ए—तआला के कलाम में गौर से देखना चाहिये कि ईमान के बाब (बारे) में क्या शरायत बयान किये गये हैं।

सवाल:— आप ये फरमाते हैं कि खुदा—ए—तआला को इसी दार—ए—दुनिया (यानि इसी दुनियाँ) में जो एक दार—ए—फानी (मिट जाने वाली जगह) है चश्म—ए—सर (सर आँखों से) देख सकते हैं।

जवाब:— खुदा—ए—ताआला कहता है या बन्दा (कहता है) आयत शरीफ़ “मन काना फी हाज़िही आमा फहोवा फिल आखिरति आमा व अज्जल सबीला (जो इस दुनियाँ में अन्धा है वह आखिरत में भी गुमराह है।)

सवाल:— करार इत्तिफाक अहल—ए—सुन्नत का इस बात पर है कि इस आयत से मुराद खुदा को आखिरत में देखना है।

जवाब:— खुदा ए तआला का वादा मुतलक है, हम भी मुतलक कहते हैं, मुकैय्यद वादा (कैद या महद्द) नहीं करते।

अहल—ए—सुन्नत—वल जमाअत ने भी दार—ए—दुनियाँ में (दीदार—ए—खुदा) को नाजायज़ और ना मुमकिन नहीं कहा है। उनके कलाम को अच्छी तरह समझना चाहिये कि उन्होंने क्या कहा है?

सवाल:— आप रहमत और उम्मीद की आयतें कम बयान फरमाते हैं और क़हर, ख़ौफ़ की आयतें बहुत बयान फरमाते हैं जिससे बन्दा ना उम्मीद हो जाता है।

जवाब:— हदीस कहती है— “तेरा भाई वो है जो तुझे डराये वो नहीं जो मगरूर करे।”

सवाल:—आपसे बहस किस तरह की जाए जबकि आप किसी मज़हब के साथ मुकैय्यद (बन्धे हुए या पाबन्ध) नहीं हैं। जो कुछ आप जवाब में फरमाते हैं। मुतलक कुरान से फरमाते हम कुरान समझने की कुव्वत नहीं रखते इमाम अब्बु हनिफा के मजहब के साथ मुकैय्यद (बन्धे) हुए हैं।

जवाब:— अगरचे मैं किसी मजहब में साथ मुकैय्यद नहीं हूँ मेरा मज़हब अल्लाह की किताब और रसूलुल्लाह (स.अ.व.) की इत्तेबा है।

सवाल:— आप मुसलमानों को काफिर कहते हैं और हुकुम करते हैं कि मोमिन बनो।

जवाब:— हमने अल्लाह की किताब को पेश किया है, यह जिस किसी को काफिर कहती है हम भी काफिर कहते हैं, अपनी तरफ से कुछ नहीं कहते। हम अल्लाह की किताब के ताबे हैं।

सवाल:—हमको आपकी महदवियत में शक पैदा होता है कि यह दावा सच है या झूठ, हम किस तरह कुबूल करें?

इन आलिमों के सवालात के जवाब में इमामुना अलै. ने जो आयतें तिलावत फरमाई उनका तर्जुमा ये है।”

“और (बिल-फर्ज़) यह झूठा है तो इसी पर पड़ेगा उसके झूठ का बवाल। और अगर सच्चा है तो तुम पर आ पड़ेगा। कुछ इस (आज़ाब) में से जिसका यह तुम से वादा करता है। (24 पारा 9 रूक़)

उन सवालात के अलावा और भी कई सवाल किये गये, हजरत अलै. ने अल्लाह के फरमान से जवाब भी दिये।

उलमा की जीत क्या होती। हार कर उन्होंने बादशाह को बरगला कर (गुमराह करके) हुक्म-ए-इख़राज (यानि आप यहाँ से चले जाँँ या ये जगह छोड़ दें।) निकलवाया इस बादशाही हुक्म पर आप रवाना हुए।

ये भी फरमाया :- दोनों तरीकों से आलिमों और हाकिमों के चेहरे स्याह (काले) किये जाएंगे अगर मैं हक़ पर हूँ तो उन्होंने क्यों मदद नहीं की और अगर मैं हक़ पर नहीं हूँ तो उन्होंने मुझे कैद क्यों ना किया? और सबने मिलकर मेरी तफ़हीम (मुझे समझने की कोशिश) क्यों नहीं की, अगर बात न मानकर अपनी बात पर अड़ा रहता तो उन्होंने मुझे कत्ल क्यों नहीं किया। इसलिए मैं जहाँ जाऊँगा अपनी हकीकत-ए-हाल (कामिल सच्चाई और हक़) के मुताअल्लिक दावत करूँगा और इन (दुनियाँदार आलिमों) के दावा-ए-बातिल (झूठे ख़याल) के मुताबिक़ गोया मैं खल्क (अल्लाह की मखलूक)को गुमराह (नऊजोबिल्लाह) करूँगा तो इसका ववाल इन्हीं की गरदनों पर रहेगा।

इसी मुकाम से इमामुना अलै. ने बादशाहों और हाकिमों को खुतूत तहरीर फरमाये।

39. जालौर

बड़ली से रवाना होकर आप और सब साथी हज़रात जालौर पहुँचे। बादशाह ने तस्दीक की उसके दोस्त अहबाब, मुलाज़मीन, फौजी और अवाम ने भी तस्दीक—ए—महदी अलै. की दौलत पाई।

मौजिजात—ए—महदी:—

इसी मुकाम जालौर में हजरत बंदगी मियां शाह दिलावर रजि. इमामुना अलै.को वजू करा रहे थे। ताअज्जुब से अर्ज किया या इमाम—ए—आखिरुज्जमाँ अजीब नज़ारा देख रहा हूँ पानी का हर कतरा जो आपकी रीश—ए—मुबारक (दाढ़ी—ए—पुरनूर) से जमीन पर टपकता है इससे हाज़ा खलीफतुल्ला—हिल—महदी (ये अल्लाह का खलीफा महदी है) की आवाज़ आ रही है, तो क्या ये लोग जो आपका इन्कार करते हैं, इस गवाही को ना सुनते होंगे? हजरत महदी—ए—मौऊद अलै. ने फरमाया:—

मियाँ दिलावर एक कतरा क्या है? जिस तरफ से बन्दे का गुजर होता है। कुल हैवा—नात, नबालात जमादात: बल्कि कण—कण भी गवाही देते है। सुनने के लिए कान वो कहाँ से लाएँगे? ये तुम्हारा हक है। हाँ, तुम्हारे ब्रादान—ए—दीनी ने तुमसे पहले ऐसी आवाज़ सुनी है।

इसी मुकाम जालौर में हजरत बंदगी मियाँ शाह निज़ाम रजिअल्लाहु अन्हु हजरत महदी अलैहिस्सलाम को वजू करवा रहे थे। अचानक ख्याल आया की हदीस शरीफ में अलामते महदी अलै. के तअल्लुक से दरख़तो को तरो व ताजा कर देने का ज़िक्र आया है। इधर से ख्याल आया, उधर महदी अलैहिस्सलाम को मिनजानिब अल्लाह ये बात मालुम हो गई, आप जो मिसवाक कर रहे थे उसी मिसवाक को ज़मीन में लगा दिया, खुदा की कुदरत से मिसवाक उसी वक्त तरोताज़ा हो गई। ये मौजिजा दिखलाकर इमामुना अलै. ने मिसवाक को निकाल लिया तो वो पहले जैसी बन गई और इरशाद

फरमाया “ मियाँ निज़ाम (सूखे को हरा करना) ये काम शोबदे बाज़ों (सड़कों पर बैठ कर झूठे खेल दिखलाकर पैसे कमाने वालों) का है। महदी का ये काम नहीं, अल्फाजे हदीस सही है मगर लोगों ने मफ़हूम गलत लिया है। फिर फरमाया जिसका मफ़हूम ये है।” कि मोमिनों के दिल जो अल्लाह की मुहब्बत के दरख्त हैं, महदी के जमाने से पहले सूखे रहेंगे, महदी इनको ईमान के पानी से दोबारा तरोताज़ा कर देंगे।

बयान—ए—कुरान के वक्त एक आदमी आया उसको उसके मोतियों की फिक्र थी, उसने आपसे पूछा कि मेरे मोती कहाँ होंगे।

हजरत मीराँ अलै. ने फरमाया— तेरे मोतियों को आग लगे, तू खुदा—ए—ताआला का फरमान जो कुछ है सुन तो ले।

इधर इमामुना अलै. ने फरमाया, उधर उसके तहखाने में मौजूद मोती जल गये।

हजरत बन्दगी मियाँ मलिक जी रजिअल्लाहु अनहु:—

जो कश्मीर के शहज़ादे थे जब इमामुना से मिले, इमामुना अलै. ने फरमाया “आओ ए शहज़ादा—ए—लहूत” यह सुनकर आप करीब आये। कदम बोसी की और तर्के दुनियाँ करके हजरत महदी अलै. के साथ हो गये और महदी—ए—मौऊद अलै. की मुबारक जुबान से कतई जन्नती की बशारत पाई।

40. नागौर

जालौर से ये नूरानी काफ़िला नागौर पहुँचा इसी मुकाम नागौर में हजरत महदी—ए—मौऊद अलै. ने कातिलू व कुतिलू की खबर फरमान—ए—खुदा ए तआला से दी थी। चुनाँचे नकल है कि हजरत बन्दगी मलिक इलाहदाद खलीफा—ए—गिरोह रजि. से कि। बंदगी मीराँ सैयद मुहम्मद महदी—ए—मौऊद

अलै. ने नागौर में यह आयत तिलावत फरमाई—“कल्लजीना हाजिरु व उखरिजु मिन दियारी हिम व उजू फी सबीली व कातिलू व कुतिलू”

तजुर्मा:— पस जिन लोगों ने हिजरत की और अपने वतनों से निकाले गये और सताये गये मेरी राह में हजरत महदी—ए—मौऊद अलै. ने अपनी जात—ए—मुबारक की महदीयत की हुज्जत में पेश की। और इस आयत को सुनाया और फरमाया— “कल्लजीना हाजिरु (हिजरत)” हो चुका व “उखरिजु मिन—दियारी हिम (इखराज)” हो चुका “व उजू कि सबीली (ईजा)” हो चुका और कातिलू व कुतिलू रह गया जिस तरह अल्लाह तआला चाहेगा उसका ज़हूर होगा।

लेकिन आँ हजरत अलै. ने इस अम्र (बात) का इज़हार नहीं फरमाया था कि यह आयत फलॉ शख्स के हक में हैं। हजरत खलीफा—ए—गिरोह रजि. की बयान करदा नकल खत्म हुई।

“शहादत की आरजू तो हर किसी को रहती है।”

41. शहादत की फजीलत

हुजूर पुरनूर सल्लल्लाहु अलैही व सल्लम ने शहीदों के ये मरातिब बयान फरमाये हैं इसकी रिवायत—उम्मुल—मोमिनीन बीबी आयशा सिद्दीका रजि. ने फरमाया है। (मफहूम हदीस शरीफ)

अल्लाह तआला ने शहीदों को पाँच बातों में मुमताज़ फरमाया है। जो अम्बिया और औलिया में किसी को अता नहीं हुई। अम्बिया अलै. की मुबारक रूह को मलेकुल मौत कब्ज़ करेगा (करता आया है।) लेकिन शहीदों की रूह ए तआला अपनी कुदरत से जिस तरह चाहे कब्ज़ करेगा और इनकी रूहों पर मलेकुल मौत मुसल्लत न होगा।

तमाम अम्बिया बाद विसाल के गुसुल दिये गये और मैं भी गुसुल दिया जाऊंगा मौत के बाद और शोहदा गुसुल नहीं दिये जाते इनको दुनियाँ के पानी की जरूरत नहीं हैं।

तमाम अम्बिया कफन दिये गये और मैं भी कफन दिया जाऊंगा और शोहदा कफन नहीं दिये जाते अपने कपड़ों में दफन किये जाते हैं।

तमाम अम्बिया जब इन्तेकाल किये तो इनका नाम मौता रखा गया और मैं भी मय्यत कहलाऊंगा शोहदा को मौता नहीं कह सकते।

तमाम अम्बिया को कयामत के रोज शिफाअत की इजाजत होगी और मैं भी कयामत के रोज शिफाअत करूंगा लेकिन शोहदा हर रोज शिफाअत कर सकते हैं। इनको इख्तियार है जिसकी चाहे सिशिफाअत करे। (इन्साफ नामा सफाहात 323–324)

42. जैसलमेर

महदी अलै. का काफिला नागौर से जैसलमेर पहुँचा। जब हजरत महदी अलै. और काफिला यहाँ पहुँचा इमामुना अलै. को इत्तेला दी गई, बैल या गाय मरने के करीब है, आपके हुकुम पर इसको जिबाह कर दिया गया, चूँकि यहाँ गौ कशी (गाय काटना) मना थी, इसलिये राजा को मालुम होने पर वो यहां आया। इमामुना अलै. से मिलने पर कहा बैल या गाय के पैदा करने वाले ने इसको मारा हम किससे जंग करें।

राजा ने अपनी बेटी भानमति को हजरत अलै. की खिदमत में पेश किया जिनसे इमामुना अलै. ने निकाह किया, बीबी की बुजुर्गी का यह आलम हो गया कि गायब (गैब) की बातें बताने लग गई। इमामुना अलै. के हुकुम पर बीबी की आँखों पर पट्टी बाँध दी गई क्योंकि जिस किसी पत्थर पर नज़र डालती तो सोना हो जाता। बीबी की ये कैफियत –खिदमत–ए–इमामुना में आने के बाद हो गई थी।

हज़रत बंदगी मियां मीराँ सैय्यद अली शहीद रजि. आप ही के बतन मुअल्ला (पेट—अजीम) से थे।

हज़रत महदी मौऊद अलै. के परदा फरमाने के कुछ अरसे के बाद सब लोग हज़रत सानी—ए—महदी की ख़िदमत में हिन्दुस्तान वापस आ गये। हज़रत बंदगी मियां मीराँ सैय्यद अली रजि. के साथ वाकिया अहमदाबाद में पेश आया।

अहमदाबाद में हज़रत बंदगी मियाँ शाह नेमत रजि. को सरकारी कारिन्दे गिरफ्तार करके ले जा रहे थे, हज़रत मीराँ सैय्यद अली रजि. ने उन्हें रोका पूछा कि इन्हें क्यों गिरफ्तार करते हो? सरकारी लोगों ने कहा कि ये महदी मौऊद के खलीफा है। इसलिए इन्हें ले जा रहे हैं। आपने पूछा कि अगर महदी अलै. का बेटा मिल जाए तो क्या हज़रत को छोड़ दोगे? तो उन्होंने हाँ कहा जिस पर आपने खुद को पेश किया और हज़रत शाह नेअमत रजिअल्लाहु अन्हु को छुड़वा लिया। इसके बाद मुनकिरीन की जानिब से कहा गया कि अगर महदी अलै. का इन्कार कर दे तो आप को छोड़ दिया जाएगा। हज़रत कि इस्तकामत पर बसदका—ए—महदी मौऊद अलै. और बफजल—ए—खुदा एक बाल बराबर जुम्बिश भी पैदा नहीं हुई। आपको एक लोह पिंजरा में बंद कर दिया गया। और उसको दबा दिया गया। जिससे आपके जिस्म अत्हर से नूर बशक्ल—ए—खून निकलने लगा, जिससे ये शाहजादे बेहोश हो गये, और इसी हाल में अहमदाबाद भादेर दरवाजे के पास दीवार की तामीर के वक्त जिंदा चुन दिया गया, आज तक अहमदाबाद भादेर दरवाजा और इससे करीब के मुक़ामात दरयापुर, कालुपुर के नाम मुस्लिम हिन्दु फसादात के वक्त अख़बारात में आते रहते हैं। और ये मुसीबत उन मुनकिरीन के हाथों की लाई हुई है।

43. मियां रजि. को बदला—ए—जात फरमाया

शहादत—ए—मखसूसा इशतियाक

शहादत—ए—मखसूसा किसको मिलने वाली है। इस बात की जुस्तजू और बैचेनी सब हजरत को थी। चुनाँचि हजरत बंदगी मियाँ रजि. अल्लाहु अन्हु ने हजरत बंदगी मियाँ शाह नेअमत या हजरत बंदगी मियाँ युसुफ रजि. अल्लाहु अन्हु को ईमामुना अलै. से दरयाफत करने को कहा था। जब हजरत ने सवाल किया तो ईमामुना अलै. का जवाब था, सायल (पुछने वाला) है। तब ही मियाँ रजि. ने समझ लिया था।

नोट:— अब जो वाकिआ हम पेश कर रहे हैं वो फराह मुबारक का है। फराह मुबारक में इमामुना अलै. ने मियाँ से फरमाया मियाँ पहली दफा भी सायल हकीकी तुम ही थे, सिफत—ए—कातिलू व कुतीलू के मजहर इस बन्दे के बदले में तुम ही हो (मियाँ को बदला—ए—जात—ए महदी कहा जाता है।)

फिर फरमाया:— इससे पहले दी गई बशारत यानि हिजरत, इखराज (घरो और दायरों से निकाले गए) और ईजा (तकलीफ पहुँचाई गई) तीनों हो चुके।

चौथी सिफत—ए—कातिलू कुतीलू बाकी है। खुदा—ए—तआला का हुक्म है कि जिस तरह तीनों सिफात मुबशिशर (जिनकी बिशारत पहले दी गई है।) हिजरत, इखराज और ईजा तुम से (यानि महदी से) जाहिर हुई, चौथी सिफत कातिलू व कुतीलू भी होनी चाहिए। लेकिन खातिम—उल—विलायत पर कोई चीज कादिर नहीं हो सकती इसलिए हमने तेरे बदले में सैयद खुन्दमीर को मुनतखिब कर लिया, वो इस सिफत का मजहर—ए—हकीमी होगा। इस इरशाद—ए—खुदा बन्दी के बाद हजरत महदी मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया। सैयद खुन्दमीर। देखो होशियार, यह विलायत—ए— मुहम्मदिया (स.अ.व.) का बार है। इस बार का हामिल (उठाने वाला) बहुत

आजमाया जाएगा। सरतन से जुदा होगा और सर से पोस्त जुदा होगा। फौलादी हड्डियाँ भी अगर हों तो घिस जायेंगीं तमाम मख्लूक—ए—खुदा क्या अजीज क्या बेग़ाने (गैर) सब दुश्मन हो जायेंगे। मगर याद रखो यह मुकाबला दो रोज़ रहेगा पहले दिन सारी दुनिया भी तुम्हारे मुकाबले पर आ जाए तो अल्लाह तआला उस को शिकस्त देगा। और तुमको फतह व नुसरत। यह बन्दे की सच्चाई की दलील है। फिर दुसरे रोज़ तुम्हारी शहादत है।

इसके बाद हजरत महदी अलैहिस्सलाम ने दो तलवारे बतौर बिशारत सैयदुश्शोहदा रज़िअल्लाहु अन्हु की कालर से बान्धी जिसके बाद सबको यकीन हो गया कि शहादत के मजहर—ए—खास हजरत बंदगी मियाँ रज़ि अल्लाहु अन्हु की हैं।

अहम नोट:—

जिस तरह इमामुना अलै. ने फरमाया था। उसी तरह इमामुना अलै. के पर्दा फरमाने के कोई बीस साल के बाद हज़रत बंदगी मियाँ रज़ि. को खॉबेल में जंग का सामना हुआ। पहले रोज़ सिर्फ़ सौ निहत्थे बिना हथियार फकीरों के साथ मियाँ ने मुज़पफर की फौज को जो हथियारों से लैस हजारों की तअदाद में थी शिकस्त दी और मियाँ को फतह हुई। फिर सुद्रासन के जागिरदार मलिक शरफुद्दीन के कहने पर पूरा दायरा खाम्बेल से सुद्रासन मुन्तकिल कर दिया गया, यहाँ पर खाम्बेल से भागी हुई फौज ऐनल की सरक़र्दगी में चौदह (14) शव्वाल को जंग के दूसरे (दौर के) रोज़ हमलावर हुई और इस दूसरे रोज़ की जंग में बंदगी मियाँ रज़ि. अल्लाहु तआला अन्हु की शहादत हुई। सर जुदा, तन जुदा पोस्त जुदा की बिशारत पूरी हुई और आप रज़ि अल्लाहु अन्हु को तीन जगह दफन किया गया।

सुद्रासन शरीफ:— सर—ए—मुबारक के बगैर बदन—ए— अतहर।

पटन शरीफः— सर मुबारक की हड्डियाँ

चापानेर शरीफः— सर—ए—पुर नूर का पोस्त मुबारक तसलसुल वाकिआत मुकाम नागौर।

मियाँ नेअमतः— हजरत बंदगी मियाँ शाह नेअमत रज़िअल्लाहु अन्हु ने गुजरात जाने की इजाजत माँगी हजरत अलैहिस्सलाम ने इजाजत दी और हजरत बंदगी मियाँ सैयद खुन्दमीर सिद्दीक—ए—विलायत रजि. को भी गुजरात जाने का हुक्म दिया और फरमाया तुम्हारे जाने में कुछ मकसूद—ए—खुदा है। तुम जाओ।

44. सफर —ए—सिंध

जैसलमेर से यह पुर नूर काफिला काहा पहुँचा इमामुना अलै. की बिना इजाजत दो लोग वापस गुजरात खाना हो गए। इमामुना अलै. ने फरमान—ए—खुदा से उनके मुनाफिक होने का हुक्म सुनाया कि दोनों बीबी शक्कर खातून और मियाँ काजी खान थे। ये दोनो बाद में हजरत बंदगी मियाँ रज़िअल्लाहु अन्हु के पास रूजू लाए।

45. काहा—नसरपुर

काहा व नसरपुर के सफर व कियाम के दौरान चौरासी (84) मुहाजिरीन किराम फाको की शिद्त से वासिल इल्लल्लाह हो गए, जिनके हक में कौम—ए—अम्बिया पर होने की बिशारत दर—बार—ए—इमामुना अलै. से मिली।

इसी दौरान हजरत अलै. ने बीबी बोनजी रज़िअल्लाहु अन्हा से अकद फरमाया। बीबी हजरत ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती रहमत उल्लाही अलैह की औलाद से थी। हजरत बंदगी मियाँ सैयद महमूद सानी—ए—महदी रज़िअल्लाहु अन्हु के मामूँ हजरत बंदगी मियाँ सैयद सलाम उल्लाह रज़ि अल्लाहु अन्हु ने एक खत हजरत सानी—ए—महदी रजि. को लिखा कि इस खत के देखते ही

वो यहाँ चले आये। यह वक्त सोहबत इमामुना महदी अलैहिस्सलाम से दूर रहने का नहीं है। इस खत को सुनकर इमामुना अलै. ने इरशाद फरमाया तुम ब्रादर सैयद महमूद को बन्दे से दूर मत समझो वो हमेशा बन्दे के हूजूर में है। बल्कि यूँ लिखो कि सैयद महमूद से सैयद मुहम्मद (महदी अलैहिस्सलाम) किसी वक्त जुदा नहीं और सैयद मुहम्मद (महदी अलैहिस्सलाम) से सैयद महमूद कभी जुदा नहीं। इस मज़मून का खत मुकाम चापानेर हज़रत सानी-ए-महदी रजि. को रवाना किया गया।

46. फर्ज नमाज-ए-दुगाना फरमाया

फर्ज नमाज-ए-दुगाना इसी मुकाम नसरपुर, काहा में जब रमजान-उल-मुबारक की सत्ताईसवीं (27) रात आई तो खुदा-ए-तआला का हुक्म हुआ कि लय लतुल कद्र की दो रकआत बा जमात अदा करो हज़रत बंदगी मियाँ शाह कासिम मुजतहिद-ए-ग्रोह रहमत उल्लाही अलैह ने हज़रत महदी मौऊद अलैहिस्सलाम का बयान नकल फरमाया है कि- इस बंदे को खुदा-ए-तआला का हुक्म हुआ कि “ऐ सैयद मुहम्मद यह रात शब-ए-कद्र है। अपनी जमात के साथ दो रकआत अदाकर इस हुक्म-ए-खुदाई पर हज़रत महदी अलैहिस्सलाम ने बाजमात नमाज-ए-दुगाना अदा फरमाया और ये दुआ फरमाई।

“या अल्लाह मुझे मिस्कीन जिला (जिन्दा रख, मिस्कीन मार) और कियामत के रोज फुकरा-ए-मसाकीन मिस्कीनों की जमात में उठा।

इमामुना अलै. अगर यह भी फरमाते कि कियामत के रोज मिस्कीनों को मेरे साथ उठा” तो भी मौजू था, क्योंकि तन्हा आपकी मुबारक ज़ात सारी उम्मत को हलाकत से बचाने वाली हैं। लेकिन महदी अलैहिस्सलाम ने दर से नाइस्ती फरमाया यानि मुसद्दिकीन को तालीम देने के लिए ऐसा फरमाया)

अपने आप को कुछ ना समझो ये तालीम फरमाई। रिवायत है कि इस दुआ के वक्त हजरत बंदगी मियाँ सैयद सलामउल्लाह रजि. ने अर्ज किया—मीराँ जी (इस) दुआ में हमें भी शामिल रखिए। तब इमामुना अलै. ने ये फरमाया “ऐ अल्लाह हमें मिस्कीन जिला, मिस्कीन मार और कयामत के रोज मिस्कीनो के साथ उठा” नमाज—ए—दुगाना के ताल्लुक से ये नकल शरीफ भी है। कि बा मुकाम फराह—मुबारक हजरत महदी मौऊद अलैहिस्सलाम ने बा—जमात नमाज—ए—दुगाना अदा फरमाया और बाद नमाज सैयदुशोहदा सैयद खुन्दमीर रजिअल्लाहु अन्हु की तरफ देखकर फरमाया, तर्जुमा। इस (नमाज—ए—दुगाना) को बजाए फर्ज—ए—ऐन समझना चाहिए और सब लोगों पर लाजिम है कि अदा करें। देखिए किताब अल—महदी अल—मौऊद। महदवी जो वजू के बाद दो रकअत नमाज पढ़कर सजदे में जाकर दुआ माँगते हैं इस नमाज को दुगाना कहते हैं। और साल में एक बार रमजान—उल—मुबारक की छब्बीस (26) और सत्ताईसवीं (27) की दरमियानी रात हम महदवी अपने अपने मुर्शिदीन की इक्तिदा में बा जमात फर्ज जानकर जो दो रकाअत नमाज अदा करते हैं उसको भी दुगाना ही कहने का तरीका चला आ रहा है। दीगर इस्तिलाहात की तरह ये भी एक कौमी इस्तिलाह है। कौमी इस्तिलाहत की अपनी अहमियत होती है। और इनमें तब्दीली का ख्याल या रूजहान अहसास—ए—कमतरी की दलील हैं। इसी मुकाम नसरपुर काहा में हजरत महदी अलैहिस्सलाम ने ये फरमाया था कि—

47. “मुनकिरीन की इक्तिदा ना करो”

तर्जुमा:—मुनकिरान—ए—महदी के पीछे नमाज मत पढ़ो। अगर (इत्तेफाकन सहुअन) पढ़ली गई हो तो लौटा कर पढ़ो। बड़ली में दावा—ए—मौक्कद के वक्त इमामुना अलैहिस्सलाम ने अपनी तसदीक करने वाले को मोमिन और इनकार करने वाले को काफिर फरमाया था। और अब इस मुकाम यानि काहा नसरपुर में मुनकिरान के पीछे नमाज पढ़ने से मना फरमाया। हमारे बाज लोग

कुफ़्र को कुबूल करने और मुनकिरान महदी अलै. के पीछे नमाज ना पढ़ने की बात को कुबूल करने से डरते और झिझकते हैं। पहले हम लफज़ कुफ़्र के तआल्लुक से बात करेंगे फ़र्ज कीजिए, अगर किसी मुसलमान ने फ़र्ज नमाज़ का इनकार कर दिया तो वो काफिर हो गया अहले-ए-सुन्नत के यहाँ कुशादा पेशानी से कुफ़्र के फतवे हैं मसलन किसी ने हजरत अबूबकर सिद्दीक रजिअल्लाहु अन्हु की खिलाफत का इनकार कर दिया तो वो काफिर हो गया लफज़ कुफ़्र का मतलब छुपाना भी है। चुनाँचे किसान जो अनाज जमीन में बोता है। उसको भी काफिर कहते हैं। (देखिए कोहलुल जवाहर, मुसन्निफा हजरत अल्लामा सैयद नुसरत रह.) दुसरी बात मुनकिर की इक्तिदा ना करना वजू में सर का मसाह करना फिकहा के चारो ईमामो (रहमत उल्लाही अलैहिम अजमईन) के पास फ़र्ज हैं।

हजरत इमाम मलिक रहमत उल्लाही अलैह के पास पूरे सर का मसाह जरूरी। हजरत इमाम आजम के पास पाऊं सर का मसाह जरूरी और हजरत इमाम शाफई के पास थोड़े से बाल छूले तो वजू हो जाता है। (रिसाला-ए-इक्तिदा मुसन्निफ हजरत अल्लामा सैयद शहाबुद्दीन रह.)।

अब बतलाइए कि अगर इमाम शाफई की फिकहा पर चलने वाला पेश इमाम बने तो क्या उसके पीछे हनफियो और मालिकियो की नामज़ हो जाएगी? क्योंकि इनकी नज़र में इस पेश इमाम का वजू ही नाकिस है। ये बात मशहूर है। कि गुजिशता साठ (60) या सत्तर (70) साल पहले तक काबे की मस्जिद-ए-हराम में इन चारो इमामों के मुसल्ले अलग-अलग बिछे हुए थे। आल-ए-सौद ने आकर इनको उठवा दिया। तो सदियों तक ये मुसल्ले जो बिछे रहे तो कोई मामूली बात पर तो ना बिछते? इन दिनों जो ख्याल किया जाता है, कि किसी की भी इक्तिदा करली जा सकती है। तो इसका मतलब ये होगा कि हर मसलन वाला अपने इमाम की बात को गौर अहम समझता और अपने ख्याल या नजरिए को इमाम के ख्याल से अफजल

समझता है। ये तो हुआ इमामो की बात पर चलना, इस इखिलाफ के बावजूद मुसलमानों के इतिहाद में कोई फर्क नहीं पड़ता। और सब मुसलमान ही कहलायेंगे। फौज में तीन शोबे होते हैं बरी (जमीनी) बहरी (समन्दरी) और फिजायी (हवाई) फौज, तीनों शोबे अपने अपने सरबराहों के अहकायात की तामील करते हैं। किसी भी शोबे का सरबराह दूसरे शोबे को रास्त तौर पर हुक्म नहीं दे सकता और ना ही कोई शोबा ऐसा हुक्म मिले तो उसकी तामील का पाबंद हैं। इसके बावजूद तीनों शोबे फौज ही कहलाएंगे।

महदवियों को इस बात की तलकीन गौर महदवी लोगों की तरफ से होती है। कि इतिहाद—ए—इस्लामी के जज्बे के तहत हमारे साथ (पीछे) नमाज़ पढ़ले। मजकूरा मिसाल से आप समझ गए होंगे कि हम अपने आका व मौला इमामुना महदी मौऊद अलैहिस्सलाम के अहकाम पर चलते हुए मुनकिरान—ए—महदी अलै. की इक्तिदा नहीं करते तो हमारा अमल इतिहाद—ए—इस्लामी के खिलाफ हरगिज़ नहीं होता। फर्ज कीजिए। आप किसी सफर पर निकले हैं। शहरी हुदूद में ट्रॉफिक सिग्नल की सुर्ख बत्ती को देखकर आप न रूकें तो टक्कर यकीनी है। शहर से आगे बढ़े रास्तों पर हिदायत या रहनुमाई के लिए छोटे बोर्डस मिलेंगे रफतार कम कीजिए “सीधे या बाँये मुड़िए” “रास्ता बन्द है।” ऐक्सीडेन्ट जोन (दुर्घटना की इमकानी जगह) वगैरह और आगे बढ़े तो जंगल शुरू होगा बतलाया जाएगा कि यहाँ शेर या दरिन्दे हैं। अब कोई इशारात हिदायात और रहनुमाई को कुबूल ना करें तो वो इन हादसो या हलाकत से कैसे बचेगा? इसी तरह धूप के लिए छाता, बारिश के लिए रेनकोट, सर्दी के लिए स्वेटर वगैरा अब अगर कोई इनको इस्तेमाल ना करना चाहे तो आपका बीमार हो जाना कोई ताज्जुब नहीं। इसी तरह फरामीन पर कोई अमल ना करना चाहे तो ये उस शख्स का शदीद दीनी नुकसान होगा। बल्कि उसकी जात से ये तसदीक—ए—महदी अलै. जैसे ला—जवाल दौलत को ही खो देगा। इसी तरह खुदा के आशिकों और खुदा के देखने वालों के गिरोह (ग्रौह—ए—महदविया) में से कोई शख्स जब घर या

दायरा छोड़कर रवाना होगा तो उसको दुनिया परसती और जाहिरी आमाल पर तकब्बुर सिखलाने वाले रास्तों से पाला पड़ेगा। इनसे बच कर आगे बढ़ने पर उसको दरिन्दों से मुकाबला पड़ेगा जो दीन व ईमान को खत्म करने वाले होंगे अब अगर इसने हिदायतों की पैरवी करली तो वो हादिसात से बच जाएगा और हिदायतों को अमल में ना लाया तो उसका सफर दीनी तौर पर हादेसात का शिकार हो जाएगा।

फरामीन इमामुना अलै. सिर्फ मुसद्दिक को हलाकतों से बचाने के लिए हैं। कि मुनकिर को अपना ना समझो और उसकी इक्तिदा ना करो वरना वो तुमको अपने रंग (इनकार—ए—महदी) में रंग देगा। इससे हटकर और कोई बात नहीं। इमामुना अलै. ने फरमाया जो शख्स ला इलाहा इल्लल्लाह और मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) कहता है। उनसे जिज्या ना ले और ना उनको बेगार बनाएँ और ना इनकी औरतों पर बगैर निकाह तसरूफ करें।

इस कदर हुरमत कलमा की रखनी चाहिए। फरामीन महदी अलै. हर मुसद्दिक को खुदा से करीब करने के लिए हैं। सबसे पहले मुसद्दिक की जात या उसके बातिन के लिए ही हज़रत महदी अलैहिस्सलाम ने ये फराए ज़ बतलाएः— तर्क—ए—दुनिया। दीदार—ए—खुदा की तलब। जिक्र—ए—खुदा दवाम, उजलत, तवक्कुल, हिजरत वगैरा। जात या बातिन के बाद कौम या दायरे की बात आएगी। मसलन सोहबत—ए—सादिकीन उशर, नौबत और सवियत वगैरा। फिर इसके बाद मुसद्दिकीन को गफलतों और इस्तिदाद से बचाने के लिए अजरह—ए—करम इमामुना अलै. ने मुनकिर—ए—महदी को काफिर जानने और उसके पीछे नमाज़ ना पढ़ने का हुक्म दिया है। हुजूर पुर नूर मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैही वसल्लम के ये इरशादात दोबारा लिखे जा रहे हैं।

“महदी किशती—ए—नूह की मानिन्द है। इसमें जो सवार हो गया नजात पाई और जिसने इससे (महदी) मुँह फेरा वो गर्क हो गया।”
(इनसाफ नामा)

“क्यों कर हलाक होगी को उम्मत जिसके अब्बल मैं हूँ महदी दरमियान में और ईसा आखिर में होंगे। लेकिन इसके दरमियान एक तेड़ी (या गुमराह) जमात होगी जो ना मुझसे होगी और ना मैं उनसे। (मिशकात-ए-शरीफ)” बाज हज़रत ने (इमामुना अलै. से) पूछा अगर एक-दो-शख्स चले जाएँ तो क्या करें इमामुना अलै. ने फरमाया जमात के साथ जाओ और अपनी (महदवियों की) जमात के साथ नमाज पढ़ो। और फरमाया किस लिए वहाँ जाते हो जहाँ मुनकिरान-ए-महदी के पीछे नमाज पढ़ने की हाजत हो। (इनसाफ नामा)

इन्हीं फरामीन पर अमल होता आया है। ये वाकियात इमामुना अलै. के पर्दा फरमाने के बाद के हैं। तमाम लोग वापस हिन्दुस्तान आ गए थे। और इन तमाम के अमीर हजरत सानी-ए-महदी रजि. अल्लाहु अन्हु थे। दायरे भीलोट शरीफ में हजरत बंदगी मियाँ सैयद महमूद सानी-ए-महदी रजिअल्लाहु अन्हु की मौजूदगी में मुल्ला महमूद खुंदशाह इमामत को बढ़ रहा था। दायरे के एक ब्रादर ने उसका हाथ पकड़कर इमामत से हटा दिया और कहा कि तू मुनकिर-ए-महदी है। हजरत बंदगी मियाँ सैयद खुन्दमीर सिद्दीक-ए-विलायत ने इमामत को बढ़ने वाले शख्स को जो मुनकिर महदी था। हाथ पकड़ कर पीछे कर दिया और फरमाया तू मुनकिर-ए-महदी है। तेरे पीछे नमाज़ पढ़नी रवा नहीं (इनसाफ नामा)

एक दिन हजरत बंदगी मियाँ शाह निज़ाम रजिअल्लाहु अन्हु के पास एक शख्स आया और सामने बैठा, एक बात करता रेत पर एक लकीर खींचता जाता है। पूछना शुरू किया :- “मियाँ जी एक शख्स है, खुदा को एक कहता है। दीन-ए-खुदा को हक कहता है। और सुन्नत व जमात के तरीके पर है और महदी अलैहिस्सलाम को आमद व गुजर (आए और गए) कहता है। लेकिन मुनकिर-ए-महदी को काफिर नहीं कहता ऐसे शख्स के मुताल्लिक खून्दकार (आप) क्या फरमाते हैं।

हजरत बंदगी मियाँ सैयदना शाह निज़ाम रजिअल्लाहु अन्हु ने रेत पर खींची लकीरों को मिटा दिया और हाथों को झटक दिया। (पंज फजायल)

ऊपर दिये गए हवालों से आप समझ गए होंगे कि हमारा काम है कि खातिमेन अलैहिस्सलाम जो दें वो ले ले और जिससे मना फ़रमाएँ उससे रूक जायें।

नमाज तो खुदा से करीब करने वाली है। नमाज़ी या इमाम के लिए जाहिरी पाकी जिस्म व जगह की पाकी सिम्त-ए-किब्ला का तअय्युन वगैरा जरूरी है। इसके इलावा इमाम का इतिक़ाद भी सही होना चाहिए। तिजारत, नौकरी, मुनकिरो में शादी-ब्याह, समाजी मरतबे की बुलन्दी, राए दहिन्दों की तरफ से वोटों का हुसूल या दौलत वगैरा जैसी मामूली और घटिया बातों के लिए अगर कोई मुसद्दिक मुनकिरों की इक्तदा कर लेता है। तो क्या ये चीज़े बुतों से कम होंगी? ऐसी मुशरिकाना सज़दे कल वापस मुँह पर मार दिए जाएंगे और शिर्क का बदला जहन्नम हैं। आमाल का दारोमदार नीयतों पर हैं। अगर कोई जमात के साथ नमाज़ पढ़ने की ख्वाहिश रखता है। लेकिन इमाम गैर महदवी हो तो तनहा नमाज़ पढ़ लेनी चाहिए। अल्लाह तआला उसको जमात का सवाब ही देगा वैसे भी जमात की नमाज और तनहा नमाज में सत्ताईस दर्जों का तगायर (फ़र्क) हैं। तनहा नमाज पढ़ले तो ना कोई अजाब होगा और ना ही इस्लाम से खारिज हो जाएँगे।

क्योंकि हुक्मे इमामुना अलैहिस्सलाम की तामील में गैर महदवी इमाम के पीछे नमाज अदा नहीं की गई। ये हमारा ईमान और ईकान है कि महदी मौऊद अलै. की एक नजर हजार साल की मकबूला इबादत से बेहतर है। फरमान इमामुना अलै. पर अमल हर जगह और हर वक्त जरूरी है। क्योंकि हुक्म सब जगहों और तमाम औकात के लिए हैं। लिहाजा मुसद्दिक महदवी आबादी और दायरों से बाहर जाए और उसको महदवी इमाम ना मिले (और उसको महदी माऊद अलै. की तसदीक और महदी मौऊद अलै. पर ईमान

अजीज है।) तो वो तनहा ही नमाज अदा कर ले। अब ये एक नमाज हो या बर्स-हा (बरस) की हजारों नमाजे। मुकाम हज में भी मुसदिक इमाम की ही शर्त हैं। यूरोप हो या अमेरिका गर्ज सब जगह इमामुना अलै. का हुक्म इकसाँ है। कि मुनकिरान ए-महदी के पीछे नमाज मत पढ़ो अगर पढ़ली गई हो तो लौटाकर पढ़ो। एक बात का ध्यान रखिए कि जब आप हज को जाएँ तो वहाँ मस्जिद-ए-हराम में चालीस नमाजें पढ़नी लाजमी हैं। वहाँ भी गैर महदवी इमाम की इक्तिदा से बचे। अपने लोग मिल ही जाते हैं ना मिलें तो तनहा नमाज पढ़ ले, ये नमाजे महदी मौऊद अलै. के हुक्म की बिना पर आपने पढ़ ली, अल्लाह तआला महदी मौऊद अलै. की इस फरमाबरदारी से यकीनन खुश होगा मस्जिद-ए-नबवी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम में भी गैर महदवी इमाम की इक्तिदा से बचें। अलबत्ता जब आप मैदान अरफात में हो लाखों हाजियों के दरमियान आप होंगे एक ही वक्त में बामुशिकल पन्द्राह मिनट के वक्फे से दो नमाजें जौहर और असर पढ़ी जाती है। ये नमाजें साल में एक बार मैदान अरफात में ही अय्याम-ए-हज में अदा होती है। इससे हटकर पूरे साल किसी भी वक्त, किसी और जगह पर अदा नहीं होती है। उस वक्त बिना नियत किए आप जमात में शरीक हो जाएँ और बाद में इन दोनों (फौत शुदा) नमाजों को दुबारा पढ़ ले। साहिबे निसाब ना हो तो उस पर जकात की अदाई फर्ज नहीं हज फर्ज नहीं बीमार या मुसाफिर हो तो सेहत और कियाम के बाद रोजे पूरे कर सकता है। वजू करने से शदीद बीमारी का या मौत का डर हो तो तयम्मूम कर सकता है। खड़े होकर ना पढ़ सके तो बैठकर नमाज पढ़ सकता है। अलगर्ज इतनी रियायतें अल्लाह तआला ने दी है। अगर कोई महदवी “बा जमात नमाज पढ़ने का इरादा करें और उसको मुनकिर महदी पेशइमाम मिले तो इमामुना अलै. के हस्बुल हुक्म ये आदमी तनहा ही नमाज पढ़ सकता है। और इस इताअत गुजारी पर खुदा की ज्यादा खुशनूदी हासिल हो सकती है। बाज चालाक दिमाग ये बात पेश करते हैं, कि इमाम को मालूम ही नहीं कि महदी मौऊद अलै. की बेअसत हो चुकी और आप अलैहिस्सलाम ने दावा

फरमाया था। लिहाजा ऐसी ना जानने वाले को मुनकिर नहीं कहा जा सकता इसका जवाब ये है। कि हुकूमत के गोजिटों में कोई चीज छप जाएँ और कोई ला-इल्मी जाहिर करें तो ये बात ना काबिल-ए-कुबूल होती है। ये सड़क पर चलने के भी उसूल होते हैं। अगर कोई इसकी मुखालिफत में चलें तो यकीनन हादसा होगा मसलन जाने की जगह से आना जरूर टक्कर हो जाएगी। तिजारत नौकरी वगैरा के सिलसिले में महदवी नौ जवानों को गैरों में रहना पढ़ता है। जब ये लोग नमाज़ को चलने को कहते हैं। उस वक्त मालूमात की कमी से हम लोग अपने को महदवी जाहिर नहीं कर सकते और नमाज़ के लिए उन लोगों के साथ चले जाते हैं। अल्लाह माफ करें। ये एक नफसियती कैफियत होती है। ऐसी सूरत में सिर्फ इतना कहकर दामन छोड़ा लेना चाहिए। कि नमाज़ बन्दे और खुदा का मामला है। इसके लिए किसी और को पूछताछ की जरूरत नहीं। यह कहकर उन लोगों से दूर हो जाएँ और अपनी रहने की जगह पर तनहा नमाज़ पढ़ लें इन्शा अल्लाह दुबारा साथ वाले तंग ना करेंगे दुबारा फिर कुरैद करें तो ये कह दें कि—

2. भाई अल्लाह के फज्ल व करम से मैं महदवी हूँ और महदवीयों के सरदार महदी मौऊद अलैहिस्सलाम ने गैर महदवियों के पीछे नमाज़ से मना फरमा दिया है।
3. या ये कहें कि आप और हम नौकरी या तिजारत वगैरा की वजह से मिलते हैं। लिहाजा मजहबी मामलात पर कोई गुप्तगू ना हो तो बेहतर हैं।
4. इसके बावजूद भी बात न बने तो बा वसीला-ए-खातिमैन अलैहिस्सलाम अल्लाह से दुआ करें इन्शा अल्लाह फिर कोई जहनी परेशानी बाकी ना रहेगी अम्बिया अलैहिस्सलाम मासूम थे। अगर कोई ये इतिक़ाद रखे कि अम्बिया से गुनाह सगीरा (छोटा गुनाह) सरजद हो गया तो इसका मतलब ये निकलेगा कि कसद (इरादे या नियत) से किया हुआ गुनाह

सगीरा भी गुनाह-ए-कबीरा (बड़ा गुनाह) हो जाता है। और अगर ये सोचें के नबी से बड़ा गुनाह हुआ तो फिर नफस और शैतान ये वसवसे भी डालेंगें कि (नऊजू बिल्लाह) नबी या अम्बिया से कुफ्र भी सरजद हुआ होगा। लिहाजा किसी भी नबी या खलीफतुल्लाह से छोटे से छोटा गुनाह भी सरजद नहीं हो सकता वो मासूम है। अल्लाह ने उनको अपनी खास पनाह में रखा हैं। जिसकी वजह से नफस और शैतान इन पर अपना मकर नहीं चला सकते। खातिमैन अलै. यानि हुजूर पुर नूर मुहम्मद रसूलुल्लाह स.अ.व. और हुजूर पुर नूर महदी मौऊद अलै. को अम्बिया पर फजीलत वो बुजुर्गी अल्लाह तआला ने अता फरमाया है। इसलिए खातिमैन मासूम अनिलखता है। यानि खता और गलती से अल्लाह ने मुकम्मिल तौर पर बचा लिया है। हुजूर पुर नूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ताल्लुक से अल्लाह तआला ने अपने कलाम में फरमाया है, जिसका मफहूम ये है। कि और (अल्लाह का रसूल) अपनी ख्वाहिश से कुछ नहीं कहता है। हजरत महदी मौऊद अलैहिस्सलाम के तआल्लुक से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया जिसका मफहूम ये है कि महदी मुझसे है। मेरे कदम बाकदम चलेगा खता नहीं करेगा। खातिमैन पर ईमान लाना और हर बात को बिना चूँचा मान लेना ही बाअस-ए-नजात है।

दौरे नबूवत का एक वाकिआ है। कि एक यहूदी और एक मुस्लिम कहलाने वाला दोनों खिदमत-ए-रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम में आए, यहूदी उस मामले में सच कह रहा था जबकि मुस्लिम जुल्म पर था। हुजूर ने यहूदी के हक में फैसला सादिर फरमा दिया ये मुस्लिम उस यहूदी के साथ पहले हजरत अबू बकर सिद्दीक रजिअल्लाहु अन्हु के पास गया। हजरत ने हुजूर स.अ.व. के मुबारक फैसले पर आमन्ना व सदकना कहा उसके बाद हजरत उमर रजि. के पास आया कि शायद मेरे हक में फैसला कर दें। तमाम बात सुनकर हजरत उमर रजिअल्लाहु अन्हु ने फरमाया तूने रसूलुल्लाह स.अ.व.

का फैसला सुन लिया, अब उमर का फैसला सुन ये कहकर घर में गए और तलवार लेकर इस मुस्लिम कहलाने वाले (मुनाफिक) की गर्दन उड़ा दी।

48. इताअत गुजारी का दर्स

जालौर में सहाबा-ए-किराम और मुहाजिरीन किराम रिज़वान् उल्लाही अलैहिम अजमईन से हजरत बंदगी मियाँ सैयद खुन्दमीर रजि. अल्लाहु अन्हु मिसाल देते हुए अपने हाथ में एक काड़ी या तिनका लेकर सबको दिखाया और पूछा ये क्या हैं। सब ने जवाब दिया कि ये काड़ी है। मियाँ ने बतौर मिसाल फरमाया अगर इसको महदी मौऊद अलै. ने शाह फरमाया है। तो क्या आप लोग इस बात को मान लेंगे? सब ने एक जुबान होकर फरमाया। ये शाह ही है। दुबारा मियाँ रजिअल्लाहु अन्हु (या किसी और सहाबी) ने एक कंकड़ को हाथ में लेकर पूछा अगर इस कंकड़ को महदी मौऊद अलै. ने जवाहर ला कीमत फरमाया है। आप सब क्या कहते हैं? सब ने आमन्ना व सदकना फरमाया यानि जब महदी अलै. ने इस कंकड़ को जवाहर ला कीमत फरमाया तो यह जवाहर ला कीमत ही है। और यह भी फरमाया कि जो शख्स फरमान-ए-महदी अलै. में शक लाए या ताबील करे आन-ए-महदी अलै. से न होगा।

इस वाकिआत से यह सबक मिलता है कि इमामुना अलै. ने जिसको मकबूल फरमा दिया वो अल्लाह और रसूल (स.अ.व.) के पास भी मकबूल हैं। चूँकि आप अल्लाह के हुक्म और तामील से ही फरमाते थे। लिहाजा आपकी हर बात पर बिना चूँ चर्राँ ईमान रखना ही हर मुसदिक और मुसदिका का फर्ज है। इनकार या शुबा खुद हमारे हक में नुकसान देह होगा। अगर हमको तसदीक की दौलत मिली है, तो इस पर अल्लाह का शुक्र अदा करना है। हमारी तसदीक किसी पर एहसान नहीं है। और न ही किसी का भला होगा बल्कि इसमें हमारी नजात है। गिरोह-ए-मुबारका में रहने वाला खुश नसीब और जाने वाला गया तो बला गई।

49. मुसद्दिकीन कौन?

हजरत बंदगी मियाँ सैयद खुन्दमीर सिद्दीक विलायत रजि अल्लाहु अन्हु ने मुसद्दिक की तारीफ यूँ फरमाई है कि:— मुसद्दिकीन कौन? हजरत बंदगी मियाँ रजि. ने फरमाया: मुसद्दिकीन—ए—महदी वो लोग हैं जो महदी मौऊद अलैहिस्सलाम के तमाम अकवाल (फरमाए हुए) अफआल (आमाल किए हुए) और अहवाल (अल्लाह तआला की खास इनायत और इमामुना अलै. की अल्लाह तक रसाई और नजदीकी) से मुताबिकत रखते हैं। और जिन में ये सिफत न हो उनको मुसद्दिक नहीं कहना चाहिए।

50. नगर ठट्टा (हुकुम—ए—इखराज को कुबूल न फरमाया)

काहा से से ये पुर नूर काफिला सिन्ध के शहर नगर ठट्टा पहुँचा। नगर ठट्टा सिन्ध का पाए—तख्त (सदर मकाम) था, जम निजामुद्दीन उर्फ जाम नन्दा इस मुल्क का बादशाह था। इस सल्तनत का खातिमा उसके बेटे जम फेरोज पर हुआ। दरया खान सिपाहसालार और वजीर—ए—आजम थे। जो तसदीक महदी अलै. से मुशर्रफ हुए थे बाद में यह बादशाह भी हो गये थे। बादशाह जम नन्दा ने महदी अलैहिस्सलाम के इखराज के लिए पहले दरया खान को मुकर्रर किया जब दरयाखान ने महदवियत कुबूल कर ली तो काजी—ए—शहर के जिम्मे ये काम दिया काजी से हुजूर अलैहिस्सलाम के तवील मबाहेस सीरत की किताबों में मिलते हैं। हर तरह से नाकाम होकर काजी ने मुल्क की मिलकीयत का मसला उठाया और कहा कि मुल्क—ए—सिन्ध का मालिक जाम निजामुद्दीन उर्फ जाम नन्दा है। इसलिए इसके एहकाम की तामील जरूरी है। वरना आपको ना जायज कब्जा रखने वाले (गासिब) समझा जाएगा। महदी मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस बात का सख्त जवाब दिया और कहा कि बन्दे (यानि महदी मौऊद) की पूरी जिन्दगी में एक मिसाल ऐसी दी जाए जिसमें किसी की जायदाद पर बन्दे ने कब्जा किया

हो, आपने कहा ये जमीन अल्लाह की है और जहाँ अल्लाह के बन्दे बेखौफ उसकी इबादत कर सकें। गुजरात शाह – ए – गुजरात का, सिन्ध बादशाह – ए – सिन्ध, का इस तरह सारी जमीन बादशाहों में बँट चुकी है। काजी ये सुनकर वापस हो गया।

51. दीदार की गवाही

बहस के लिए उलमा आए, हजरत महदी मौऊद अलैहिस्सलाम इस आयत का बयान फरमा रहे थे।

तर्जुमा:— जो इस दुनिया में अन्धा है। पस वो आखिरत में भी और ज्यादा अन्धा व गुमराह होगा। उलमा ने कहा कि मुराद इस आयत से यह है कि खुदा ए—तआला की कुदरत की कारीगरी को इस जहाँ में पहचानना चाहिए और खुदा—ए—तआला का दीदार इस जहाँ (इस दुनिया) में हासिल होने की उम्मीद रखनी चाहिए। हजरत महदी अलैहिस्सलाम ने फरमाया आयत का मतलब जो जायज है, हमने कह दिया। इसकी तफसीर जवायेद (ज्यादा) से है। यह सुनकर सब उलमा खामोश वापस हो गए फिर कहला भेजा कि आपका कोई शख्स इस मानी का गवाह हो सकता है, और यह कह सकता है कि मैंने जात—बारी—ए—तआला को सिर की आँखों से देखा है। इमामुना अलै. ने दरियाफ्त फरमाने पर कि क्या दीदार की गवाही दोगे?

हजरत बंदगी मियाँ शाह निजाम और हजरत बंदगी मियाँ शाह दिलावर ने अर्ज किया “बसदके—ए—मीराँजी चश्म—ए—सिर से दीदार—ए—खुदा की गवाही (बन्दे) देंगे।

काजी और उलमा से जब कुछ न बन पड़ा तो उन्होंने हाकिम से कहा कि यह सैय्यद ना मुमकिन बातें कहता हैं। और (नाऊजु बिल्लाह) लोगों को फरेबता और गुमराह करता है। मसलेहत इसी में हैं कि जमात को कत्ल कर दिया जाए। बादशाह ने इसके बाद खुद फौज कशी करने का इरादा किया

और इसकी इत्तिला हजरत महदी मौऊद अलैहिस्सलाम को हुई आपने फरमाया के दायरे के अत्राफ काँटों की बाढ़ लगा दो खुदा-ए-तआला का यही हुक्म हुआ है। जैसे कि हजरत रसूलुल्लाह (स.अ.व.) को खन्दक खोदने का हुक्म हुआ था। जिस जगह एक अहल-ए-दिल है। उसकी बरकत से हजार अश्खास। (लोग) फितना-ए-जाहिरी से महफूज रहते हैं। इस मजमुए (लोगों) में तो बहुत से अहल-ए-दिल हैं। कोई भी (दुश्मन) इन पर कादिर न हो सकेगा गौर कीजिए कि एक तनहा जात-ए-महदी मौऊद अलैहिस्सलाम सारी उम्मत को हलाकत से बचाने के लिए आई है। आप यह भी फरमा सकते थे कि तुम तमाम को दुश्मन से कोई तकलीफ नहीं होगी, क्योंकि बन्दा तुम्हारे दरमियान है। लेकिन आपने दर्स-ए-नेस्ती देने के लिए ऐसा फरमाया। काजी कादिन काफिरों का लिबास पहनकर खिदमत-ए-इमामुना अलै. में आए इमामुना अलै. ने दरयाप्त फरमाया काजी कादिन यह क्या लिबास है। जो तुमने इख्तियार किया? उन्होंने अर्ज किया मीराँ जी में देखता हूँ कि बहुत सारे लोग मुसलमानी के दावे के साथ हज़रत के हुजूर में आते हैं और अमर-ए-हक से रूगरदानी (हक से मुँह मोड़कर) और मुखालिफत करके काफिर होकर जाते हैं। इसी बिना पर ये जईफ कुफ्र का लिबास पहनकर आया हैं। हजरत महदी अलैहिस्सलाम ने उनके बदन से वो लिबास निकलवाया फिर उन्होंने हजरत महदी अलैहिस्सलाम का बयान सुनने के बाद हजरत अलै. की महदियत की तसदीक की। हजरत महदी मौऊद अलै. ने काजी कादिन से पूछा के तुम कहाँ के काजी हो? काजी ने जवाब दिया मुल्क-ए-सिन्ध का काजी हूँ। हजरत अलै. ने सवाल फरमाया सिन्ध किसका मुल्क है। जवाब:- जाम (वहाँ के बादशाह जाम नन्दा) का हजरत अलै. ने पूछा जाम किसका है। जवाब:- खुदा-ए-तआला का है। हजरत अलै. ने पूछा:- खुदा-ए-तआला किसका है:- काजी का जवाब- यहाँ तक अपने इल्म से मैंने जवाबात दिए हैं हमारा इल्म खत्म हो चुका है। जो कुछ खून्दकार (यानि आप)

फरमाएँ वो तहकीक (हक) है। महदी अलैहिस्सलाम ने फरमाया काजी खुदा उसी का है, जो खुदा को हासिल करें।

हजरत मौलाना शैख सदरुद्दीन सिन्धी, सिन्ध के आलिमों के सदर थे, बादशाह ने हजरत सदरुद्दीन सिन्धी को कहला भेजा कि हजरत महदी मौऊद अलैहिस्सलाम से मिलें तहकीक करें हजरत शैख सदरुद्दीन सिन्धी इमामुना अलै. से मिलने आए। उस वक्त आप फौजी लिबास में थे, ये देखकर मुल्ला सदरुद्दीन को ख्याल हुआ कि ये महदी मौऊद नहीं हो सकते, वो मिले बगैर वापस जाना चाह रहे थे। कि एक दरख्त से आवाज आई सदरुद्दीन कहाँ जाता हैं। एक बार मुलाकात कर फिर देख कि हक का जहूर कैसा है। शैख इस आवाज पर ला-हौल पढ़कर बढ़े। एक पत्थर से आवाज आई सदरुद्दीन कहाँ जाता है। एक बार मुलाकात कर फिर देख के जहूर-ए-हक कैसा है। शैख ने इन आवाजों को शैतानी समझा लेकिन वो रहमानी थी। खिदमत-ए-इमामुना अलै. में आए, बयान कुरआन सुना, ख्याल किया कि ये बयान-ए-कुरआन सिवाए हजरत महदी अलैहिस्सलाम के किसी और शख्स के लिए मुमकिन नहीं क्योंकि ऐसा बयान न किसी किताब में देखा था, और ना किसी से सुना था। इसके बाद वो इल्मी सवालात जो लिखकर लाए थे। एक-एक सवाल पूछा और हजरत महदी मौऊद अलैहिस्सलाम के जवाबात से मुतमईन हुए। अर्ज किया:- मीराँ जी जो कुछ आप फरमाते हैं हक हैं, लेकिन कहीं ऐसा न हो के, हुजूर महदी मौऊद न हों हम कैसे कुबूल करें?

हजरत महदी अलै. का इरशाद:-

“जैसा तुमको खुदा का खौफ झूठे दावा-ए-महदियत को कुबूल करने में है क्या इतनी मिकदार में भी खुदा-ए-तआला का खौफ मुझे नहीं हैं? कि मैं खुदा की तरफ से महदी ना होकर झूठ से खुद को महदी कहलाऊँ फिर इस आयत की तिलावत फरमाई:-

तर्जुमा:— क्यों हैं। ज्यादा जालिम उस शख्स से जो इफितरा (गलत बात) करे खुदा—ए—तआला पर झूठ कहकर या झुठलाए खुदा—ए—तआला की आयतों की, बेशक नजात नहीं पायेंगे जालिमीन।”

फिर फरमाया:— तुम को बन्दे महदवियत का कुबूल करना क्यों अजीब मालूम होता है? हम ने कोई नई शरिअत नहीं लाई हैं। और शरिअत—ए—हकीकी के अहकाम में कोई तब्दीली नहीं की है। हमारे और तुम्हारे दरमियान, इत्तिबा—ए—शरिअत के मामले में कोई फर्क नहीं हैं। तुम्हारे लिए कलमा कहना। पाँच वक्त की नमाजें पढ़ना, एक महीने के रोजे, हज, जकात की अदाई और चार औरतों को हलाल जानना है। हमारे लिए भी, कलमा कहना, पाँच वक्त की नमाज पढ़ना, एक महीने के रोजे, हज, जकात की अदाई और चार औरतों को हलाल जानना है। मगर मुझे हक तआला का फरमान होता है, कि तू महदी मौऊद है। ताज्जुब का मुकाम वो है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैही व सल्लम के सहाबा (रिजवान उल्लाही अलेहिम, अजमईन) ने आँ हजरत (स.अ.व.) की तसदीक की, इसके बावजूद कि आँ हजरत (स.अ.व.) ने पिछले (गुजिश्ता) अम्बिया की शरिअतों को मनसूख किया और शरिअत—ए—नासिखा (पिछली शरिअत को मनसूख करके नई शरिअत) लाए मसलन साबिका किताबे आसमानी थी। और आँ हजरत (स.अ.व.) ने फरमाया कि वही मेरे दिल पर होती है। अगले अम्बिया वो मुरसिलीन का किब्ला बैत—उल—मुकद्दस की सिम्त था और आँ हजरत (स.अ.व.) ने काबातुल्लाह की सिम्त का हुक्म फरमाया। उम्मत के सब मर्दों के लिए हुक्म चार औरतों के हलाल होने का मुकर्रर हुआ और खुद आँ हजरत (स.अ.व.) के हक में नौ (9) औरतें हलाल हुईं नीज ये भी खुदा—ए—तआला ने खबर दी कि ऐ मुहम्मद (स. अ.व.) जो कोई औरत तेरी नजर में पसन्द आए हमने उसको तेरे लिए जायज किया। चुनाँचे किस्सा जैनब बिनत—ए—हजश का है। इस जैसे अहकाम आँ हजरत स.अ.व. ने फरमाए तो आँ हजरत रिसालत पनाह के असहाब की खूबी बयान होनी चाहिए कि सब इश्कालात (ब) जाहिर जिनको कुबूल करने में

दुश्वारी महसूस हो) के बावजूद उन्होंने इताअत की और तसदीक से मुशर्रफ हुए।

बन्दे ने कोई भी बात रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैही व सल्लम) के खिलाफ की नहीं लाई है। जिससे कुबूल करने वालों को दुश्वारी का सामना है। इसके बाद शैख ने इमामुना अलै. से छः महीनों का वक्त माँगा कि वो हजरत अलै. की सोहबत में रहकर आपके मुबारक अहवाल को देखकर मजीद तहकीक करेंगे। इसके बाद तसदीक करें।

इमामुना अलै. ने फरमाया:— “बन्दे ने किस वक्त तुमसे कहा कि इसी वक्त मेरे दावे को कुबूल कर लो? जो कुछ बन्दा कहता है। उस पर अमल करो, जो कुछ हक है, तुमको मालूम हो जाएगा।” आखिरकार मौलाना को जिक्र-ए-खफी का तरीका बतलाकर एक हुजरा दे दिया। छः महीनों का वक्त माँगा था, लेकिन जिक्रुल्लाह की बरकत से तीन दिन बाद हुजरे से बाहर आया और सबकी मौजूदगी में हजरत महदी अलैहिस्सलाम की तसदीक कर ली। हर तरफ से नाकाम होकर हाकिम सिन्ध जाम नन्दा ने महदी अलैहिस्सलाम पर फौजकशी का इरादा किया। इधर मुकाबिले के लिए ना जाहरी रूपिया पैसा था और ना ही फौजी तैयारियाँ, हजरत बंदगी मियां मलिक गौहर रजिअल्लाहु अन्हु ने ढाई सेर अक्सीर, जिससे टनों सोना तैयार किया जा सकता था। और जब हजरत महदी मौऊद अलै. को फौजी मदद की जरूरत पड़ेगी उस वक्त ये बतौर अमानत काम आएगी इस ख्याल से अपने पास रख छोड़ी थी। यानि फाकों की तकलीफ के बावजूद कभी भी इसको अपनी जात पर खर्च करने का ख्याल नहीं फरमाया था। जाम नन्दा के इमकानी हमले की इत्तिला पर हुजूर-ए-महदी अलै. में अर्ज किया कि उनके पास ढाई सेर कीमिया (अक्सीर) मौजूद है। जिससे बारह हजार फौजियों का लश्कर जरूरी हथियारों के साथ तैयार कर सकते हैं। ये सुनकर इमामुना अलै. ने बतौर आजमाइश दरयाप्त फरमाया अगर ये तमाम अक्सीर खर्च हो जाए तो उसके

बाद क्या होगा? हज़रत मलिक गौहर रजि. ने अर्ज किया उनको इस कीमिया (अकसीर) का नुसखा मालूम है। जिस कदर चाहे अकसीर तैयार करली जा सकती है। हज़रत मलिक गौहर रजि. की बात पूरी होने पर इमामुना अलै. ने फरमाया, मियाँ गौहर इस दुन्यावी बुत को बगल में दबाए हुए तुम अब तक बन्दे की सोहबत में रहे। मौजूद हज़रात को हुक्म दिया कि इनको दायरे से निकाल दें हुक्म पाकर मलिक रजि. को दायरे से बाहर कर दिया गया। इस कुसूर पर हज़रत बंदगी मियां मलिक गौहर रज़िअल्लाहु अन्हु तीन दिन तक बिना कुछ खाए—पिये नादिम और गमगीन रहे हज़रत बंदगी मियाँ शाह नेअमत रज़िअल्लाहु अन्हु ने हुजूर—ए—महदी मौऊद अलै. में हज़रत मलिक का हाल अर्ज किया इमामुना अलै. ने फरमाया “मलिक गौहर से जाकर सुना दो कि अगर बन्दे के पास रहना चाहते हो तो इस बुत को फेंक दो और सच्चे तारिकुद्दुनिया बनकर आओ।

हुजूर अकरम सल्लल्लाहु अलैही व सल्लम ने फरमाया था कि जो चीज तुझको खुदा से गाफिल करके अपने में मशगूल कर ले वो तेरा बुत है। हज़रत बंदगी मियां मलिक गौहर रजि. को मालूम हुआ की अकसीर फेंक कर आने की इजाजत है। इस इत्तिलआ से खुश हुए, जान में जान आई, फौरन अकसीर को कुएं में फेंक दिया, नमाज शुक्राना अदा की और गुसुलकर हज़रत महदी मौऊद अलैहिस्सलाम की खिदमत में हाजिर हुए। जिस वक्त ये अकसीर कुएं में डाल दी गई, किनारे पर एक जौ के दाने बराबर रह गई, हज़रत बंदगी मियाँ सैय्यद सलामउल्लाह रज़िअल्लाहु अन्हु ने इसको आजमाने के लिए एक ताम्बे के लौटे पर डाला जो सोना बन गया खिदमत—ए—इमामुना अलै. में लाकर अर्ज किया मीराँ जी इस बन्दे से एक खियानत हो गई। आजमाने के लिए कुएं के किनारे की अकसीर को इस लौटे पर डाला था। ये सुनकर इमामुना अलै. ने हज़रत बंदगी मियां गौहर रजि. को सूरज और चांद से बढ़कर फरमाया और ये फरमाया कि इनके सिद्क (सच्चाई) का क्या इम्तिहान करते हो। गौहर, गौहर

हैं और उन्होंने जो मशक्कत इस कीमिया को उठा रखने में बर्दाशत की है। इसको भी हक तआला ने कुबूल फरमाया।

फिर आपने इस लौटे को तोड़-फोड़कर सवियत कर देने का हुक्म दिया। जिसके बाद दायरे के बिरादरान बाजार को गए, जिससे इमामुना महदी अलैहिस्सलाम की मुबारक सोहबत, बयान-ए-कुरआन और नमाज-ए-बाजमात से महरूम हो गए, जिस पर इमामुना अलै. ने अफसोस का इजहार किया और फरमाया अगर खुदा न ख्वास्ता वो सारी अक्सीर का सोना बन जाता तो ना मालूम क्या हाल होता। जब महदी मौऊद अलैहिस्सलाम को जाम नन्दा की तरफ से दायरे पर हमले की तैयारियों की इत्तिला हुआ तो आपने अल्लाह के हुक्म से दायरे के अत्राफ काँटों की बाड़ लगाने का हुक्म दिया। जाम नन्दा जब अपनी फौज लेकर दायरे की तरफ बढ़ा तो सिपाह सालार दरया खान ने बादशाह को एक बार फिर समझाया कि ना आकिबत अन्देशों (अनजाम की परवाह ना करने वालों) के मश्वरों पर अमल करके आपने हमला कर दिया तो, या तो आप इन लोगों को कत्ल कर देगे या वो (हजरत महदी मौऊद अलै.) अपनी बातिनी कुव्वत यानि विलायत की कुव्वत से आप पर गालिब आ जाएँगे, दोनों सूरतों में नुकसान है। इस कत्ल की वजह से कुल इस्लामी दुनिया में बदनाम होंगे। अगर आपको शिकस्त (हार) हो जाए तो जिल्लत व बदनामी के साथ ममलूकात (मुल्क और हुकूमत) हाथ से निकल जाएगी। मुनासिब है कि आप अपने इरादे से रूक जाएँ, वो खुद ही रवाना हो जाएँगे।

दरया खान की इस समझदारी की बात से मुतास्सिर होकर बादशाह ने फौजों को वापस हो जाने का हुक्म दिया।

बहर-हाल बादशाह, अपनी तमाम तर मुखालिफतों के बावजूद अपने मुल्क से हूजूर अलैहिस्सलाम को न निकाल सका और न ही आप अलैहिस्सलाम को कोई तकलीफ पहुँचा सका। इस वाकिए से ये बात भी वाजेह हो गई कि महदी अलैहिस्सलाम को निसबतन कमजोर बादशाहों, छोटे जमीनदारों और

सरदारों ने जब भी इखराज का हुक्म दिया उस वक्त खुदा-ए-तआला का हुक्म भी आगे सफर का मिलता रहा, वरना बिना अल्लाह के हुक्म के आप अलैहिस्सलाम को कोई इखराज नहीं करा सकता था। मुल्क-ए-सिन्ध के खुरासान की तरफ रवाना हुए।

52. सफ़र-ए-खुरासान

अल्लाह तआला के हुक्म पर हजरत महदी अलैहिस्सलाम ने खुरासान का सफर शुरू फरमाया। दो रास्ते थे। एक रास्ते को इख्तियार किया।

किसी ने कहा कि मीराँ जी यह रास्ता बहुत पुराना है। वीरान हो चुका है। साँप और शेर पैदा हो चुके हैं। लेकिन हजरत अलै. ने इसी रास्ते को इख्तियार फरमाया इस में इस बात की निशान देही भी हैं, कि हुजूर पुर नूर सल्लल्लाहु अलैही व सल्लम के बाद से दीन के रास्ते भी मख़दूश (खतरात से भरे हुए या बोसीदा) हो चुके थे। इन रास्तों पर साँपों और शेरों से ज्यादा खतरनाक इन्सानों ने सबको परेशान कर रखा था और दीनी व इल्मी हलको ने खताएँ भी ख़ूब की थी। तो रास्तों को साफ करने और पुर-सुकून बनाने को आपने यह सफर फरमाया।

इमामुना अलैहिस्सलाम ने फरमाया था कि बन्दे का आना उस वक्त हुआ है। जब ईमान मजजूबों में रह गया था। और दीन के तमाम काम दुनिया के लिए हो रहे थे। एक जगह यह पुर-नूर काफिला रुका, हजरत शाह निजाम रज़िअल्लाहु अन्हु ने अपनी बेटी को एक झोली में डालकर एक दरख्त की डाल पर बान्ध दिये थे, काफिला चल पड़ा और आप बेटी को लेना भूल गए याद आने पर वापस आए बच्ची महफूज थीं। एक शेर उनकी हिफाजत कर रहा था, वापसी में रास्ता साफ नहीं लेकिन तमाम दरख्तों पत्थरों और पहाड़ों से ये आवाज आ रही थी। **“हाजल महदी-ए-मौऊद”** यानि यह महदी-ए-मौऊद है। वापस आने के बाद हजरत बंदगी मियाँ शाह निजाम

रजि. ने ये बात इमामुना अलै. को सुनाई इमामुना अलै. ने फरमाया— हाँ ऐसा ही है लेकिन मियाँ निजाम तुम्हारे कानों जैसे कान चाहिए ताकि यह आवाज़ सुने। हजरत बंदगी मियाँ सैयद खुन्दमीर रज़िअल्लाहु अन्हु ने हजरत महदी मौजूद अलैहिस्सलाम के दौर के कियाम और सफर के हालात यूँ बयान फरमाए, ये बातचीत इमामुना के इन्तिकाल फरमाने के बाद की है। ये सफर और वाकियात बहुत सब्र तलब थे। एक शख्स के इस अफसोस पर कि काश हम भी हजरत महदी अलै. के जमाने में होते, हजरत बंदगी मियाँ सैय्यद खुन्दमीर सिद्दीक—ए—विलायत रज़िअल्लाहु अन्हु ने जवाब में फरमाया। खुदा—ए—तआला का शुक्र अदाकरों की तुम आँ हजरत महदी अलैहिस्सलाम के जमाने में न हुए अगर उस वक्त मौजूद होते तो काफिर या मुनाफिक होते, उन तकलीफो का बर—दाश्त करना आँ हजरत के सहाबा और मुहाजिरीन ही के लिए खास था। तीन चीजें ऐसी सख्त थी, कि अगर हाथी की हड्डियाँ और फौलाद की पस्लियाँ भी होती तो मिट जाती। एक तो हमेशा का सफर, इस तरह के अट्ठारह (18) महीने से ज्यादा किसी जगह कियाम नहीं फरमाया। सफर हो या कियाम अल्लाह के हुक्म से रहा अल्लाह तआला के हुक्म पर सफर शुरू कर दिया जाता, दिन हो या रात सर्दी हो या गर्मी सफर जारी रहता। बाज दफा हजरत महदी अलैहिस्सलाम ने फुतूह तैयब भी वापस फरमाया दी। हालाँकि इज्तिरार (फाकों की बैचेनी) की नौबत भी थी। बाज वक्त फुतूह को कुबूल नहीं किया। (फुतूह का मतलब अल्लाह के नाम पर कोई नकद या खाने पीने की चीज आना) किसी दिन एक वक्त से ज्यादा की गिजा पहुँच जाती तो आप फरमाते—

होशियार हो खुदा—ए—तआला तुम्हारी परवरिश फिरऔन जैसी करता है। तीसरी जजर यानि सबसे सख्ती के साथ जवाब तलब किया जाता कि “तुमने क्या हासिल किया है। क्या देखा है। और क्या सुना है। बतलाओं दोनों हाथ खाली जमीन पर न रखे रहो, यानि तुमने दुनिया बर्बाद की जात—ए—बारी

तआला की तलब में पस तुमने क्या हासिल किया है। बतलाओ।” हजरत बंदगी मियाँ रजि. के फरमाए हुए इरशादात खत्म हुए।

इसी सफर में हजरत बंदगी मियाँ युसुफ रजिअल्लाहु अन्हु अपनी भूख मिटाने को दरख्तों के पत्ते खाने से बीमार हो गए। पैर जख्मी, पहनने को कपड़े बराबर नहीं। इन तकलीफो के बावजूद पूछा मीरों जी वो वक्त कहाँ है। जिसकी निस्बत कहा गया था कि खातिम—ए—विलायत—ए—मुहम्मदिया के जूहूर के जमाने में (यानि महदी अलैहिस्सलाम के जमाने में) असहाब को सख्त मशक्कत (सख्त तकलीफ) पेश आने वाली है।

हजरत महदी अलैहिस्सलाम ने फरमाया मियाँ यूसुफ ये वही वक्त है। मगर तुम्हारी आली हिम्मती और आला हौसले की वजह से और लज्जत—ए—दीदार—ए—इलाही की वजह से ये तकलीफ तुमको तकलीफ नहीं महसूस हो रही हैं। मियाँ यूसुफ ये जज्बा—ए—हक तुम्हारे आखिरी दम तक तुम्हारे साथ रहेगा।

53. बारगाह—ए—ईलाही में अर्ज

दौरान सफर महदी मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक पहाड़ी पर ठहरकर काफिले को देखा जो मन्जर हुजूर अलैहिस्सलाम की नजरों के सामने आया वह नाकाबिल—ए—बयान हद तक तकलीफ देता हजारों अल्लाह वाले बच्चे, जवान, बुढ़े, औरतें, अमीर, फकीर आलिम, उम्मी, बिला, तख्सीस, प्यादा (पैदल) बरहना पांव (नंगे पांव) फटेहाल, फाकोंजदाँ, सिर्फ रजा—ए—इलाही के हासिल करने के लिए दुनियावी राहत और भूख—प्यास और तकलीफ से बे—परवाह हुजूर अलैहिस्सलाम के पीछे चले आ रहे हैं, इन हजारों खुदा रसीदा अशखास में से किसी एक की भी जुबान पर हर्फ—ए—शिकायत या मसाएब का जिक्र नहीं था, और ना किसी को हुजूर अलैहिस्सलाम की सोहबत छोड़कर दुनियावी आराम की तरफ जाने का ख्याल तक आता था। यह मंजर देखकर हजरत महदी

मौऊद अलैहिस्सलाम आबदीदा हो गये यानि आँखों में आँसू आ गये थे। और दरबार-ए-खुदा-बन्दी में अर्ज किया “इलाही तू जाहिर व नाजिर है। मेरे और इनके हाल से खूब वाकिफ है। मैंने उनका क्या छीन लिया है, और मेरे पास बजुज तेरी जात के कोई ऐसी चीज नहीं जिसके इश्क-व-मुहब्बत में इस जमात-ए-मुहाजिरीन ने ऐसी शदीद मशक्कत तकलीफो को गवारा कर लिया। फक्त तेरी रिज़ाजूई और तेरे दीदार की आरजू उनको इस तरह खींचती ला रही है। उसी वक्त खुदा-ए-तआला कि तरफ से हुक्म हुआ कि ऐ सैयद मुहम्मद इस जमात के तमाम छोटे और बड़े गुनाह बख्शा दिए और उनसे हमेशा के लिए राजी हो गए हमारी तरफ से उनको ईमान की बिशारत सुना दे। इमामुना अलैहिस्सलाम ने जमात-ए-मुहाजिरीन को यह खुश खबरी सुना दी।

54. कन्धार

इसके बाद आप और सब साथी हजरात कन्धार पहुँचे यहाँ शोहरत हुई कि सैयद आए है। जो कहते है कि “मै महदी-ए-मौऊद हूँ और मेरी तस्दीक तमाम खलाइक (यानि इनसानों और जिन्नो) पर फर्ज है। शुरू में तो हाकिम कन्धार ने बेअदबी की, बाद में इमामुना अलै. के बयान-ए-कुरआन को सुनकर तस्दीक से मुशर्रफ हो गया और मीर जून्नून को लिखा कि एक सैयद यहाँ आए हैं। इसके बाद सारी तफसीलात लिखकर भिजवाया।

55. फराह मुबारक

अल्लाह तआला ने इल्म की वजह से मुल्क खुरासान को दुसरे मुल्को पर फजीलत दी है। अल्लाह ने मुरव्वत के दस हिस्से पैदा फरमाए। नौ हिस्से खुरासान को मिले और एक हिस्सा दुसरों को।

मीर जुन्नून आजमाने आएः—

“मीर जुन्नून अर्गून हाकिम—ए—वक्त थे। यह भी आए और कहा “महदी की अलामत में से एक ये भी है, कि तलवार उन पर काम न करेगी, आग न जलाएगी, और पानी गर्क न करेगा। यह सुनकर महदी अलैहिस्सलाम ने अपनी तलवार मीर जुन्नून के हवाले फरमाई मीर जुन्नून ने तीन बार तलवार चलाई लेकिन उनका हाथ शल हो गया। एक और रिवायत में है कि उनके गुलाम ने इशारा पाकर तीन दफा तलवार चलाई, लेकिन उसका हाथ शल हो गया।

हजरत महदी अलैहिस्सलाम ने फरमाया तलवार की सिफत काटना, आग की सिफत जलाना और पानी की सिफत गर्क करना है। लेकिन हदीस के मानि ये है कि कोई भी महदी को मारने पर कादिर न होगा। एक आलिम मौलाना नूर कूजागर ने कहा कि अगर महदी—ए—मौऊद का आना बरहक है तो यही जात है। वरना कोई नहीं, मीर जुन्नून ईमान लाए और कहा हम महदी अलै. के नासिर है। जहाँ कहीं तलवार चलाना होगा, तलवार चलाएंगे। यह सुनकर हजरत महदी ने फरमाया के महदी का मददगार खुदा है। और तलवार अपने नफस पर मार ताकि तुझे गुमराही में न डाले। ये इरशाद फरमाकर महदी अलैहिस्सलाम अपने हुजरे को तशरीफ ले गए। मीर जुन्नून ने फराह के आलिमों के मश्वरे पर बादशाह को खत लिखा कि :—

बनी फातिमा (रज़िअल्लाहु अन्हा) हुसैनी नसब सैयद मुहम्मद हिन्दुस्तान से तशरीफ लाए हैं।

रोजाना बयान—ए—कुरआन करते हैं।

इस बात का दावा फरमाते हैं कि वो महदी मौऊद है जिनके आने का मुसलमान इन्तेजार कर रहे थे।

और कहते हैं कि खुदा ने उन पर विलायत—ए—मुहम्मदी (स.अ.व.स.) को खत्म किया है।

कहते हैं कि दीदार—ए—खुदा सर की आँखों से इस दुनिया में जायज है।

अपनी दावत (दावत—ए—महदियत) इन्सानों और जिन्नों पर पेश करते हैं।

खुदा के दीदार की तलब हर मर्द और औरत (मोमिन मरदों और मोमिन औरतों) पर फर्ज बतलाते हैं।

अपनी तस्दीक को फर्ज बतलाते हैं।

मीर जुन्नून का खत तावील है। देखना हो किताब अल महदी अल मौऊद में देखिए।

इस खत के मिलने के बाद बादशाह मिर्जा हुसैन ने शेख—उल—इस्लाम मुल्ला शाह बेग को कहला भेजा कि आप मुअमला—ए—महदियत की तहकीक करके वाजेह फरमायें ताकि अमल हो, और ये भी कहा कि इस मुद्दा—ए—महदीयत का दावा करने वाले को अपने दावे में (नाऊजु बिल्लाह) जर्ग भर काजिब (झूठा) पाओ तो तुमको इख्तियार दिया जाता है। कि इस फित्ने को वही बुझा दो ताकि अहल—ए—इस्लाम महफूज व मामून रहे और अगर तहकीक के बाद वो अपने दावे में सच्चे पाए गए तो मुझे फौरन खबर दो ताकि मैं उनकी सोहबत और हिदायत से फायदा उठाऊँ।

56. दावा—ए—महदियत की तहकीक के लिए आलिमों की आमद

बादशाह के इस हुक्म के बाद शैख—उल—इस्लाम ने अपने सात सौ (700) शार्गिदों से कहा कि दावा—ए—महदियत की तहकीक करे। बहस व मुबाहिसा के बाद उन्होंने चार सवालात तैयार किये और बादशाह के हुक्म से एक वफद खिदमत—ए—महदी अलै. में हाजिर हुआ और चार सवालात पूछे।

सवाल— हुजूर खुद को महदी—ए—मौऊद किस दलील से कहलाते हैं ।

जवाब— इमामुना अलै. ने जवाब में फरमाया बन्दा नहीं कहलाता है हक तआला का फरमान अमर—ए—मौऊद (शदीद ताकीदी हुक्म) की सूरत में होता है, जिसकी बिना पर कहता है आलिमों ने इमामुना अलैहिस्सलाम के इस जवाब को “बजा व दुरस्त कहा।

सवाल—हुजूर (फिक्ह के चार इमामों में से) किस (के) मजहब के साथ मुकैयद (पाबन्द या पैरो) है।

जवाब:— हम किसी मजहब के साथ मुकैयद (बन्धे हुए या पाबन्द) नहीं है। हमारा मजहब अल्लाह की किताब (कुरआन) और इत्तिबा—ए—रसुलुल्लाह (स.अ.व.) है।

सवाल— हुजूर किस तफसीर पर से बयान—ए—कुरआन फरमाते हैं?

जवाब:— हम किसी वक्त भी किसी तफसीर का मुतालिआ नहीं करते, बयान के वक्त जो आयत बे—वास्त सामने आती है और उस आयत का बयान अल्लाह की तरफ से सिखलाया जाता है। अल्लाह के अमर (हुक्म) से अल्लाह की मुराद बयान करते हैं।

57. दीदार—ए—ईलाही के गवाह

सवाल— खुदा—ए—तआला का दीदार इस जहान (इस दुनिया) में जायज होने पर क्या दलील रखते हैं, आँ हजरत अलैहिस्सलाम ने अपने सीधे और बाएँ जानिब इशारा करके फरमाया: कि “यहीं मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैही व सल्लम) और इब्राहिम खलीलुल्लाह (अलैहिस्सलाम) मौजूद हैं जो इस बाब में (इस बात के) गवाह है जो कुछ पुछना चाहते हो पूछ लो।” इस जवाब को सुनकर उलमा खामोश हुए, और उनके दिलो को इत्मिनान हासिल हुआ।

उलमा ने तय कर लिया था कि इन जवाबात से हटकर कोई और जवाबात मिले तो यह महदी-ए-मौऊद न होंगे।

1. महदी-ए-मौऊद का दावा खुद उनकी (यानि महदी की) जात से न होगा बल्कि फरमान हक तआला से होगा।
2. किसी मजहब के साथ वो मुकैयद न होंगे इसलिए कि वो खुद साहब-ए-मजहब होंगे।
3. अल्लाह के कलाम की तफ्सीर अल्लाह के अमर (हुक्म) से बयान फरमाएँगे न कि मुज्तहदीन के कलाम की मुवाफिकत में जिसमें खता (गलती) और सवाब (दुरूस्तगी) दोनों बातें मौजूद होती हैं।
4. चौथी बात अल्लाह-तआला का दीदार-ए-दुनिया (इस दुनिया में) होने के सबूत का बयान खास्ता-ए-हजरत महदी ही है। यानि इस दुनिया में अल्लाह का दीदार होने के बारे में बयान करने और दीदार की तालीम देने ही की आपकी खुसूसियत थी, या मनसब-ए-जलीला था। अगरचे कि बाज उलमा-ए-मजाहिब अहल-ए-सुन्नत ने भी इस दीदार की बात को जायज रखा है। लेकिन इसको साबित करने की किसी को ताकत नहीं थी। इसके बाद चारों उलेमा ने अपने उस्ताद शैख-उल-इस्लाम को लिखा।

“हमारा सारा इल्म इन सैयद (यानि हजरत महदी-ए-मौऊद अलैहिस्सलाम) के इल्म के आगे दरया के मुकाबिले में एक कतरा है।

अगर आप चाहते हों कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैही व सल्लम के बाद एक जात पैगम्बर सिफात ताब-ए-ताम (मुकम्मिल और पूरी-पूरी पैरवी करने वाले) को कायम मुकाम आँ हजरत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जिस में एक सर-ए-मू बाल बराबर) शरअ (शरिअत) के खिलाफ न पाया जाए देखें तो इसी जात-ए-गिरामी (यानि हजरत महदी अलै.) को देख ले। आलिमों के इस

खत के मिलने के बाद हिरात के बादशाह सुल्तान हुसैन मिर्जा, शैख-उल-इस्लाम और उनके शागिर्द तस्दीक-ए-महदी अलै. और फर्ज-ए-तर्क-ए-दुनिया से मुशर्रफ हुए और बादशाह बीमार होने के बावजूद आँ हुजूर अलैहिस्सलाम के दीदार के लिए निकले, लेकिन रास्ते ही में उनका विसाल हो गया। महदी मौऊद अलैहिस्सलाम को फरह मुबारक में मिन जानिब अल्लाह यह बात मालूम हुई और आप अलैहिस्सलाम ने बादशाह की ये गायबाना नमाज-ए-जनाजा अदा फरमाई। एक मुल्ला दरवेश खिदमत इमामुना अलै. में आए और कहा- मेरा हाल बहुत खराब है, नफस कहता है कि हुजूर महदी है या नहीं? इमामुना अलैहिस्सलाम ने फरमाया लफज-ए-महदी को उठाकर रख दो, जो कुछ महदी का हुक्म है। कलाम-ए-खुदा और कलाम-ए-नबी से है, या नहीं है? मुल्ला ने कहा हाँ है। फरमाया आओ कलाम-ए-खुदा और कलाम-ए-मुस्तफा (स.अ.व.) पर अमल करो इसके बाद जो कुछ हक हैं तुमको मालूम हो जाएगा। मुल्ला ने दो तीन रोज बाद आकर बहुत माफी माँगी और अपने सुस्त-ए-इतिकाद से रूजू किया। (यानि इतिकाद पक्का कर लिया) और कहा कि अब मुझे अल्लाह की तरफ से मालूम हो रहा है। कि आप ही महदी-ए-मौऊद अलै. हैं।

58. फरमाया : हमारा ईमान मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) का ईमान है।

एक दिन आलिमों ने सवाल किया?

आप रसूलुल्लाह (स.अ.व.) की उम्मत में दाखिल हैं-

फरमाया- हाँ

आलिमों ने कहा हदीस शरीफ में आया है कि अबू बकर-ए-सिद्दीक (रजि अल्लाहु अन्हु) का ईमान तमाम उम्मत पर फजल रखता हैं। महदी अलैहिस्सलाम ने फरमाया।

मुहम्मद मुस्तफा (स.अ.व.) के ईमान का वजन ज्यादा है। या अबू बकर के ईमान का? आलिमो ने कहा, हजरत मुहम्मद मुस्तफा (स.अ.व.) के ईमान का वजन ज्यादा है। इमामुना अलैहिस्सलाम ने फरमाया हमारा ईमान मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ही का ईमान है।

नोट:— इमामुना अलै. के इस फरमान से रसूल (स.अ.व.) और महदी अलैहिस्सलाम की बराबरी और तस्विध्यत साबित हो जाती है।

आलिमों ने फिर पूछा कि आप आँ हजरत (स.अ.व.) की उम्मत में हैं। तो फिर आपका ईमान आँ हजरत (स.अ.व.) का ईमान क्यों कर होगा? इमामुना अलै. ने फरमाया। “मैं उस उम्मत में उसी तरह दाखिल हूँ जिस तरह आँ हजरत (स.अ.व.) उस उम्मत में दाखिल है। फिर यह आयत पढ़ी जिसका तर्जुमा यह है। “अल्लाह इनको अजाब न देगा इस हाल में कि तु उन में से है।”

इमामुना अलैहिस्सलाम बयान-ए-कुरआन फरमा रहे थे। जिन्नों का लश्कर गुजर रहा था, सुनकर ठहर गया, बयान पूरा होने पर मुलाकात की तसदीक और तलकीन की दौलत हासिल की और उनकी कौम में जाकर ये खबर पहुँचा दी और भी जिन्नात ने आकर तस्दीक की आज तक भी महदी से जुड़े हुए बाअमल मुर्शिदीन के पास बिल्खुसुस दुगाने की रात (शब-ए-कदर) को जिन्नों के आने की बात सुनने को मिलती है।

महदी कौन से खजाने तकसीम करेंगे?

एक दिन आप अलैहिस्सलाम तहारत के लिए जा रहे थे। हजरत बंदगी मियाँ सैयद सलाम उल्लाह रज़िअल्लाहु अन्हु साथ थे। यह कुछ सोच रहे थे, इमामुना अलै. ने मुस्करा कर पूछा।” तुम्हारे दिल में क्या बात आई? हजरत सैयद सलामउल्लाह रज़ि. ने अर्ज किया मीरों जी उलमा कहते हैं। कि महदी की एक अलामत यह है कि वो जहाँ से गुजरें वहाँ के दफ़ीने खजाने उभरकर

निकल पड़ेगें और वो इसको लोगों में तकसीम करेंगें तहारत से वापिस आते वक्त एक तरफ नजर डाली फरमाया देखो तो

मियाँ सैयद सलाम उल्लाह रजि. ने देखा कि तमाम पहाड़ सोना हो गया और रेती जवाहरात बन गई है। इमामुना अलै. ने फरमाया जो कुछ तुमको लेना है। ले लो और दूसरो को भी इतिलआ दे दो कि जिस किसी को माल चाहिए ले ले। मियाँ सैयद सलाम उल्लाह ने लोगों को दिखलाने और इमामुना अलै. के हुक्म पर एक मुट्ठी जवाहरात अपने दामन में बान्ध ली, दायरे में आने के बाद सबको दिखलाकर कहा कि हजरत महदी अलै. ने फरमाया है कि जिस किसी को माल की हाजत हो जाए और ले ले तो सब ने एक जुबान होकर कहा— **हमको सिवाए “जात—ए—बारी तआला के और किसी चीज की हाजत नहीं है।** लोगों की इस माल बेजारी और खुदा तलबी का सुनकर हजरत अलै. ने फरमाया— जो कोई माल का तालिब होगा, खुदा—ए—तआला को न पहुँचेगा। और जो खुदा—ए—तआला का तालिब होगा माल नहीं चाहेगा तो फिर महदी माल जमीन से निकालकर किसको दे। फिर फरमाया— उलमा हदीस (शरीफ) का असली मतलब जानने से महरूम रहे। माल जमीन से निकालकर लोगों को देना और गुमराह करना दज्जाल की सिफत है। हदीस की मुराद ये है कि महदी खजाना—ए—विलायत मुक्यदा को आशकारा करेगा और कुरआन के वो मायने जो हजरत रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के हुजूर में नहीं सुने गए थे। वो सुनाएगा।

फुतूह (खुदा का दिया हुआ जो बे—गुमान आये) तकसीम करेगा ताकि तालिबान—ए—खुदा इससे कुव्वत पाएँ या उनकी मदद हो, अल्लाह तआला की तरफ से हजरत महदी अलैहिस्सलाम को अब्वलीन को आखिरीन की पेशवाई का हुक्म मिला था आपको तमाम अम्बिया औलिया, मौमिनीन, मोमिनात के मरातिब और जुमला मौजुदात के हालात बतला दिए गए थे। अस्थाब—ए—नबी की फजीलत के तआल्लुक से यूँ फरमाया:—

इरशादात—ए—इमामुना अलै.

हजरत अबु बकर सिद्दीक रज़ि अल्लाहु अन्हु के मर्तबे का ज़रा सा फर्क मलूहज रखकर अली करम अल्लाहु वज्हू की बुजुर्गी बयान करो।

हजरत अली और हजरत मआविया की जंग का जिक्र आया, आपने फरमाया— अली हक ब जानिब थे और मआविया इज्तिहाद में खता पर थे। रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के सहाबा जो मुबशिशर थे, जानि बैन में हुक्म—ए—नजात उनके लिए है। लेकिन नए आने वाले जो मुर्तुजा अली की तरफ थे जन्नती हैं और जो मआविया की तरफ से हालिक (हलाक हो चुके) हैं। एक शख्स ने (इसी जगह पर या किसी और जगह पर) पूछा मीराँ जी यजीद पर लआनत भेजना कैसा है। हजरत महदी अलैहिस्सलाम ने इर्शाद फरमाया: यजीद पर लआनत मत भेजो, अपने नफ्स पर लआनत भेजो, यजीद का नफ्स ही था जिसने उससे ऐसा काम करवाया।

यानि नफ्स के बहकाने पर यजीद ने हजरत इमाम हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हु को शहीद करवाया। इसी तरह एक बार मुकाम न मालूम किसी ने पूछा कि मीराँजी शैतान पर लआनत करना कैसा है। आप अलैहिस्सलाम ने फरमाया— शैतान पर लआनत मत भेजो वो इससे खुश होता है। इसके बजाए जिक्र करते रहो। अहल—ए—सुन्नत वल जमात के मुजतहिदो और मुफस्सरो के लिए आप अलै. की बशारत है कि यह लोग दीन के पहलवान थे। उन्होंने दीन (की बातों) में मूशिगाफी की हैं। (यानि मअमिलात की बारिकी से छानबीन की और बयान किया था।) फरमाया:— यह लोग तालिबान—ए—हक थे। जो कुछ उन्होंने कहा और किया है। महज अल्लाह के लिए कहा और किया। फरमाया बाज (कुछ मुजतहिदो और मुफस्सरो की जुबान से सुखन—ए—हक, हक तआला ने निकलवाया है। ताकि इस बन्दे की बात की गवाही रहे।

किसी शख्स ने आपसे एक फुरुई बात (वह मसायल जो अमल से मुतअलिक) दरयाफत किया तो आँ हजरत अलैहिस्सलाम ने उस बात का जवाब देकर फरमाया:— बन्दे से वही चीज पूछो जिसके लिए खास तौर पर हक तआला ने मुझे भेजा है। हजरत महदी अलैहिस्सलाम ने इमाम आजम और इमाम शाफई दोनों के बाज आमाल को दुरुस्त करार दिया। बाज मअमिलात इमाम आजम के बयान फरमाए, आमाल व इतिक़ादात की तारीफ़ फरमाए और अमल भी फरमाया। बाज औलिया अल्लाह के तआल्लुक से फरमाया कि हमारे भाई किस लिए नजदीक का रास्ता छोड़कर गर्दिश के रास्ते से मन्जिल मकसद को पहुँचे। सहाबा (रज़ि अल्लाह अन्हु) ने पूछा मीरा जी नजदीक का रास्ता कौनसा है? और गर्दिश वाला कौनसा? आपने फरमाया क्यों यह लोग खुदा—ए—तआला के रास्ते में बे इख्तियार नहीं हो गए। शरअ—ए—मुहम्मदी की मुवाफिकत के साथ तो खुदा—ए—तआला तक पहुँचने का रास्ता है। किस वजह से उन्होंने अपने इख्तियार से बारह साल की मुद्दत का तअयुन करके रोज़े रखे, शरअ—ए—मुहम्मदिया (शरिअत—ए—मुहम्मदी सल्लल्लाहु अलैही व सल्लम) के मुताबिक़ तमाम उम्र तवक्कुल का रोज़ा क्यों ना रखा। हलाल चीजों को छोड़े, बाज तो कुंए बावलियों में बरसों उलटे लटके रहे। खुदा—ए—तआला ने तो ऐसा नहीं फरमाया था, क्यों बे इख्तियार नहीं हो गए।

59. सात (7) सलातीन की अरवाह (रूह) मुबारक की हाजरी

एक दिन आपने ब हुक्म—ए—खुदा अपनी पीठ मुबारक के पीछे देखा और तीन मरतबा फरमाया—तुम भी बुरे नहीं हो इस जमात में दाखिल हो। सहाबा के पूछने पर फरमाया कि सात सलातीन की अरवाह हाज़िर होकर आरजू करती थी कि “काश हम भी मीरों सैयद मुहम्मद महदी खातिमे—विलायत—ए—मुहम्मदी के जमाने में फ़ैज—ए—विलायत—ए—मुक़ैयदा से बहरामंद होते। (यानि अल्लाह तआला तक पहुँचने के करीबी रास्तों के तआल्लुक से मअलूमात मिलती और हम अल्लाह का दीदार हासिल करते।)

इमामुना अलै. ने जवाब में फरमाया कि तुम भी बुरे नहीं हो इस ग्रोह (यानि गिरोह—ए—महदविया) में दाखिल हों। जिन सात (7) हजरात की अरवाह हाजिर हुई थी उनके नाम ये हैं।

1. सुलतान बा—यजीद बुस्तामी रहमतुल्लाही अलैह।
2. सुलतान इब्राहीम बिन अदहम रहमतउल्लाही अलैह।
3. सुलतान अबू—बकर शिबली रहमतउल्लाही अलैह।
4. सुलतान अब्दुल कादर जीलानी (हजरत गौस—ए—आजम दस्तगीर) रहमतउल्लाही अलैह।
5. सुलतान सनजर माजी रहमतउल्लाही अलैह।
6. सुलतान अब्दुल खालिफ इज्दा—लाना रहमतउल्लाही अलैह।
7. सुलतान अबू सईद अबुल खैर रहमतउल्लाही अलैह।

चार (4) किताबों के पढ़ने की इजाजत:—

इमामुना अलैहिस्सलाम ने चार किताबों के पढ़ने की इजाजत दी है। मुब्तदियो (खुदा की सच्ची तलब लेकर नए आए हों उन) के लिए हजरत शैख नूर रहमतउल्लाही अलैह की अनीस—उल—गुरबा और हजरत शैख शम्सुद्दीन रहमतउल्लाही अलैह की मर्गूब उल—कुलूब और मुन्तहियो (खुदा तलबी में खुदा के फज़ल से जिन्होंने ज्यादा रास्ता तय कर लिया है। उन को सआदात हुसैन की दो किताबे जाद—उल—मुसाफिरीन और नुज्हन—उल—अरवाह।

खलीफ़तुल्लाह की तालीम ऐसी थी, जब यह जिक्र आया कि सैयदना शैख अब्दुल कादर जीलानी (हजरत गौस—ए—आजम दस्तगीर) रहमतउल्लाही अलैह ने फरमाया था कि बेशक यह मेरा कदम सब औलिया की गरदनों पर है। हजरत महदी अलैहिस्सलाम ने फरमाया कि सैयद अब्दुल कादर जीलानी

ने अपना कदम जो औलिया अल्लाह के कान्धे पर रखा बेहतर यह था कि फरमाते, सब औलिया अल्लाह के कदम मेरे कान्धे पर है। महदवी और मुवाफिक अहल-ए-सुन्नत इस तआल्लुक से ये सुतूर (लाइने) हमने हजरत अबू सर्ईद सैयद महमूद उर्फ मुर्शिद मियाँ साहब किब्ला के एक रिसाला मकातीब-ए- अबू सर्ईद से लिए है। फरमाते है। महदवियों की तरफ से अहल-ए-सुन्नत की मुवाफिकत से मुराद :- नबुवत के खैर-उल-कुरून सहाबा, ताबईन तबा ताबईन रिजवान उल्लाही अलैहिम अजमईन होते हैं। ये वो आइम्मा व औलिया और उनकी पैरवी करने वाले सुफिया और उलमा-ए-दीन रहमत-उल्लाही-अलैहिम अजमईन हैं जो सय्यदना इमामुना महदी मौऊद अलैहिस्सलाम के दावा-ए-महदियत से पहले गुजरे हों। (मकातीब-ए-अबू सर्ईद) यानि इमामुना महदी मौऊद अलैहिस्सलाम की मुबारक पैदाइश से पहले तक या ज्यादा से ज्यादा इमामुना अलै. के दाव-ए-मौक्कद (905) हिजरी तक के तमाम बुजुर्ग हमारे लिए अहम हैं (905) हिजरी के बाद से ईसा अलैहिस्सलाम के नुजूल तक के तमाम लोग जिन्होंने महदी मौऊद अलै. का इकरार न किया हमारे लिए अहम नहीं ख्वाह (चाहे) दुनिया में उनके नाम के डंके ही क्यों न बजे हों।

दीदार-ए-खुदा के लिए कुछ छोड़ना मुश्किल नहीं:-

हजरत महदी मौऊद अलैहिस्सलाम की तालीमात का असल मकसद यही है कि आपकी तस्दीक करने वाला बा अमल बनें, खुदा का तालिब बने और खुदा के दीदार का आरजू मंद रहे। खुदा का दीदार हासिल होना कोई आसान बात तो नहीं इसके लिए बहुत कुछ छोड़ना पड़ता है। फरायज-ए-विलायत की तफसील जब पढ़ते हैं तो मालूम होता है कि दीदार के लिए अपनी जान से गुजर जाना भी मामूली बात है। दुनिया छोड़ना और तालीमात-ए-महदी अलै. पर अमल करना तालिब-ए-खुदा के लिए खुदा के फजल से दुश्वार नहीं।

खुदा के तालिब या खुदा के दीदार की तलब रखने वाले के लिए फरमान खुदावन्दी जो हदीस-ए-कुदसी है, अल्लाह फरमाता है:-

जब मेरा बंदा एक बालिशत मेरी तरफ करीब होता है। तो मैं एक हाथ उसके नजदीक होता हूँ और अगर वो एक हाथ मेरी जानिब चलकर आता है तो मैं उसकी तरफ दौड़कर आता हूँ। खुदा के दीदार की लज्जत और हलावत क्या होगी? इस फरमान महदी अलै. से मालूम होगा फरमाया:- किसी शख्स की नाक में रस्सी डालकर तमाम जमीन पर फिराएँ और उसको खुदा-ए-ताआला की बीनाई सुई के सुराख में हो जाए तो उसको ऐसी राहत हो कि वो फिर कहे कि हमको हजार साल जमीन पर फिरा ताकि हमको दुबारा ऐसी राहत हों।” और खुदा न ख्वास्ता कोई दीदार से महरूम रहा तो उसके लिए ये आयत है। जो इस दुनिया में अन्धा है। सो वो आखिरत में अन्धा और ज्यादा गुमराह होगा। खुदा-ए-ताआला की नजदीकी ना मिलना या खुदा की जात का ना मिलना किस कदर नुकसान देय है जेल (नीचे) की हदीस कुदसी से मालूम होगा।

मफहूम ये है:- “अगर मेरे जाकिरों को मालूम होता कि मेरा कुर्ब (नजदीकी) ना मिलने से वो किस निअमत से महरूम रहे तो वो थोड़ा हँसते और बहुत रोते, और अगर मेरे मुकर्रिबों (खुदा से कुर्ब और नजदीकी रखने वालों) को मालूम होता कि मेरा उन्स (मुहब्बत) न होने से वो किस निअमत से महरूम रहे थे तो वो खून रोते और अगर मेरे गाफिलीन उन्स (मुहब्बत)-ए-खुदा से गफलत बरतने या मुहब्बत के ना हासिल करने वालों को मालूम होता कि मेरी जात ना मिलने से वो किस निअमत से महरूम रहे थे। तो वो अपनी शहरगों को काट लेते।”

ये साँसें ही है जो हम को मिली हैं और इनके जरिए अल्लाह से नजदीकी हो सकती है, ऊरुज के हासिल करने की उमंग, बा अमल बनने की

भरपूर कोशिशें और फजल—ए—खुदाबन्दी से उस तक पहुँचने और उसका दीदार हासिल होने का पूरा यकीन, यही तो आज का हमारा सरमाया है। जो गुजर गया उसको ना देखना और कल क्या होगा इसकी फिक्र किए बिना ही फरामीन खातिमैन (अलैहिस्सलाम) पर अमल करना जो कुछ करना है। आज ही करना है। क्योंकि कल गुजर चुका हमारे लिए कल आएगा भी या नहीं? अल्लाह ही जानता है।

60. फरायज—ए—विलायत

फरायज—ए—विलायत जिनको हजरत महदी मौऊद अलैहिस्सलाम ने अल्लाह के हुक्म से फर्ज फरमाया इनकी फरजीयत का सुबूत कुरआन—ए—शरीफ से मिलता है।

1. **तर्क—ए—दुनिया:**— सूरह—ए—हूद में इर्शाद—ए—खुदावन्दी हैं।

तर्जुमा:— “जो लोग दुनिया की जिन्दगी और उस की जेब—व जीनत के तालिब हों तो उनके आमाल का बदला उन्हें दुनिया ही में दे देते हैं। और इसमें उनकी हक तलफी नहीं की जाती। ये वो लोग हैं, जिनके लिए आखिरत में आतिश जहन्नम के सिवा और कुछ नहीं और जो कुछ वो करते रहे सब जाया हुआ।” एक हदीस शरीफ का मफहूम ये है। कि “दुनिया की मुहब्बत तमाम गुनाहों की जड़ है। और उसको छोड़ना तमाम नेकियों का हासिल करना है।”

2. **तलब—ए—दीदार—ए—खुदा:**— सूरह—ए—कहेफ, 110— “जो शख्स अपने रब से मिलने की आरजू रखता है, तो नेक काम करता रहे और अपने रब की इबादत में किसी को शरीक ना करें।”

3. **उज्लत—अज—खल्क** :- सूरह—ए—मुज्जम्मिल की आयत— “और सबसे टूटकर खुदा के हो जाओ।”

4. **जिक्र-ए-दवाम:-** सूरह-ए-निसा 103- “पस्स याद करो अल्लाह तआला को खड़े बैठे और लेटे हुए।”
5. **तवक्कुल:-** सूरह-ए-आल-ए-इमरान 159- “पस्स तू अल्लाह तआला पर इतिमाद कर, बेशक अल्लाह तआला इतिमाद करने वालों से मुहब्बत फरमाते हैं।”
6. **सोहबत-ए-सादिकीन:-** सूरह-ए-तौबा 119- “ऐ ईमान वालो अल्लाह से डरो और सादिकीन के साथ हो जाओ।”
7. **हिजरत:-** सूरह अननिस्सा 97- “वो कहते हैं कि क्या अल्लाह तआला की जमीन वसी (बड़ी) ना थी? तुमको तर्क-ए-वतन करके उसमें चला जाना चाहिए था। सो इन लोगों का ठिकाना जहन्नम है, और वो बुरी जगह हैं।”
8. **उशर:-** हजरत महदी मौऊद अलै. के हुक्म पर अल्लाह की राह में निकालना और फकीरों, मिस्कीनों और जरूरत मंदों में तकसीम कर देना हम पर फर्ज है। (अपनी आमदनी का दसवां (10) हिस्सा)

नोट:- फरायज-ए-विलायत में से दो फरायज पर कुछ लिखा जा रहा है।

9. **तलब-ए-दीदार-ए-खुदा:-** हजरत महदी मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया हर मर्द और औरत पर खुदा के दीदार की तलब फर्ज है। और जब तक चश्म-ए-सर, या चश्म-ए-दिल, या ख्वाब में खुदा को ना देखे मोमिन नहीं, लेकिन तालिब-ए-सादिक-जिसने अपने दिल की तवज्जोह गैर-ए-खुदा से उठा ली हो और अपने दिल की लौ तवज्जो (कामिल पुरी तवज्जोह) खुदा की तरफ लगा दी हो ऐसे शख्स पर भी महदी मौऊद अलै. ने ईमान का हुक्म फरमाया है।

10. **जिक्र-ए-द्वामः-** फरायज-ए-विलायत के एक और अहम फर्ज जिक्र-ए-द्वाम के तआल्लुक से भी पढ़िए। इन्शा अल्लाह जिक्र की पाबन्दी से हुदूद-ए-कसब पर चलना आसान हो जाएगा और उसके बाद तर्क-ए-दुनिया आसान हो जाएगी। फिर तो तमाम फरायज-ए-विलायत पर अल्लाह तआला अमल करवाएगा। और बिल आखिर इसी दुनियाँ में अल्लाह का दीदार होता जाएगा और अल्लाह तआला से नजदीकी बढ़ती ही जाएगी।

इमामुना अलैहिस्सलाम ने कुल मुसद्दिकीन पर चौबीस घंटे अल्लाह का जिक्र फर्ज फरमा दिया। अब सवाल ये है, कि जिक्र-ए-द्वाम किस तरह हासिल होता है। जवाब ये है कि सुल्तान-उल-लैल और सुल्तान-उन-नहार की पाबन्दी करने से जिक्र-ए-द्वाम हासिल होता है। चूंकि कौम-ए-महदविया में जिक्रुल्लाह पस्स अनफास (साँसों से) कलमा-ए-लाइलाहा-इल्लल्लाह से किया जाता है। इसलिए जब कोई बंदा अल्लाह सुब्हानहु व तआला को सुबह के वक्त याद करता है। तो उसकी साँस दिनभर कलमा-ए-ला इलाहा इल्लल्लाह से आते जाते रहती है। इसी तरह शाम के वक्त में जिक्रुल्लाह में मस्रूफ रहने से रात भर उसकी साँस ला-इलाहा- इल्लल्लाह से आती जाती रहती है। इस तरह इसका जिक्र जिक्र-ए-द्वाम यानि हमेशा जिक्र में तब्दील हो जाता है। (देखिए किताब "हिदायत" मुस्सन्निफ- हजरत सैयद याकूब सलीम साहब मरहूम)

जिक्र-ए-खफी सुल्तान-उल-लैल और सुल्तान-उन-नहार की मज्दीद तफसील के लिए ये आयत और हदीस मुबारक पढ़िये "ऐ मुहम्मद (स. अ.व.) तुम अपने दिल में गिड़गिड़ा कर और डरकर जुबानी आवाज के बगैर अपने परवरदीगार का जिक्र करते रहो और गाफिल ना रहो।"
(सूरह 7 आयत 205.1)

“जो लोग सुबह व शाम अपने परवरदिगार को याद करते हैं
(सूरह 18, आयत 28)

हुजूर पुरनूर सल्लल्लाहु अलैही व सल्लम ने फरमाया—
“नमाज—ए—फजर के बाद तुलू—ए—आफताब तक एक जमात के साथ जिक्र
करते रहना मुझे दुनिया व माफिहा से ज्यादा महबूब है। (देखिए कोहलुल
जवाहर मुसन्निफ हजरत अल्लामा सैय्यद नुसरत रहमत उल्लाह अलैह)।”

चिराग—ए—दीनी नबवी” में सुल्तान—उल—लैल और सुल्तान—उन—नहार
के मुतअल्लिक यूँ तहरीर फरमाया गया है:— नमाज—ए—असर से इशा के
दरमियान का वक्त सुल्तान—उल—लैल और आगाज—ए—नमाज—ए—फजर से
तुलू—ए—आफताब के दरमियान का वक्त सुल्तान—उन—नहार है।

हदीस—ए—कुदसी— “मेरे बन्दे याद कर मुझको एक साथ सुबह
को और एक साथ शाम को मैं पूरा कर दूँगा उसको जो इनके
दरमियान है।”

हजरत बंदगी मियाँ सैय्यद महमूद सैदन जी खातिम—उल—मुर्शिद रजि.
ने वादा फरमाया है। कि जो लोग सुल्तान—उल—लैल और सुल्तान—उन —
नहार के वक्त की जिक्र के साथ हिफाजत करेंगे उनके लिए आठ पहर के
जिक्र की तकमील का बंदा जिम्मेदार है। यानि उनका हशर आठ पहर
जिक्र—ए—दवाम करने वालों के साथ होगा, हजरत (खातिम—उल—मुर्शिद रजि.)
ने (अपने बाद आने वाले) दुनिया के कुल मुसद्दिकीन पर एहसान अजीम
फरमाया है। बशर्त कि इससे बेहद सुहूलत और आसानी से इस्तिफादा हासिल
करें।

हजरत महदी मौऊद अलैहिस्सलाम के हुजूर से लेकर हाल से कुछ
पहले तक कुल मसाजिद और जमात खानों में तमाम फुकरा और
अहल—ए—कसब भी (जमात के साथ) सुल्तान—उल—लैल और सुल्तान—उन

नहार के वक्तों में किबलारू (किबला की तरफ मुँह) करके जिफ़्रुल्लाह में मसरूफ नज़र आते रहे। (देखिए चिराग-ए-दीन नबवी) ब फज़ल-ए-खुदा आज भी हमारी मसाजिद में ये अमल जारी है। और इन्शाअल्लाह कियामत तक जारी रहेगा। हर नौजवान के लिए जरूरी हैं कि वो फजर से तुलु-ए-आफताब तक और असर से मगरिब तक बा-जमात किबलारूह मुसल्ले पर बैठकर जिफ़्रुल्लाह करें इसी तरह हमारी माँए और बहने भी अपने घरों में जिफ़्र की पाबन्दी करें ताकि व सदका-ए-खातिमैन अलैहिमुस्सलाम जिफ़्र द्वाम के पाबन्द हो जाएँ बल्कि बुजुर्गों की रविश और इर्शादात से मालूम होता है, कि सुल्तान-उल-लैल और सुल्तान-उन-नहार की पाबन्दी को ही काफी ना समझा जाए बल्कि रात के दरमियान भी उठकर बाद वजू वो दो रकात दुगाना अदा करके फिर जिफ़्र में मशगुल हो जाएँ इस सिलसिले में हुज़ूर पुर नूर सल्लल्लाहु अलैही व सल्लम का ये इर्शाद गिरामी भी पेश-ए-नज़र रहे कि “रब-ए-तआला बन्दे से आखिरी रात के वक्त (दरमियान) में बहुत करीब होता है। अगर तुम ये कर सको कि उस वक्त जाकिरीन में से बनो तो बन जाओ” (तिर्मिजी शरीफ)

इसके इलावा किताब “हाशिया-ए-इनसाफ नामा की एक नकल-ए-शरीफ भी पढ़िए- एक बुजुर्गवार ने फरमाया के जो शख्स इन छह: अवकात में खुदा-ए-तआला का जिफ़्र करता है। तो खुदा-ए-तआला उसकी हर दिन और रात की बन्दगी को जयेय (ज़ाया) नहीं करता।

1. वक्त-ए-फजर की नमाज के बाद से आफताब तुलू होने तक।
2. असर से इशा तक।
3. खाने के वक्त।
4. वजीफा-ए-जौजियत के वक्त।
5. कजा-ए-हाजत के वक्त।

6. सोने (नींद) के वक्त ।

महदी अलैहिस्सलाम की ये तालीम है:— दर्वेशी फकीरी का कमाल तसलीम व (और) तवक्कुल में हैं। यानि बे—इख्तियार रहें और अपने अकवाल, अफ़आल और अहवाल में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैही व सल्लम की इत्तेबा कायम रखे। हर कौल फेअल और हाल में आँ हजरत (स.अ.व.) की मुवाफिकत पैदा करें। और ये भी फरमाया:— शरिअत पर अमल करते रहो। एक साहब नमाज की एक रक्आत होने पर आकर जमात में शरीक हुए इमाम के पहले सलाम पर ही उठ खड़े हुए और अपनी रकात पूरी कर ली सलाम फेरने के बाद इमामुना अलैहिस्सलाम ने उनसे फरमाया तुमने इस कदर जल्दी क्यों की? इमाम के दूसरे सलाम से पहले ही क्यों उठ खड़े हो गए? अगर इमाम पर सजदा सहू वाजिब होता तो उस सूरत में तुम्हारी नमाज़ जाआया हो जाती, इन सहाबी ने कहा कि मीराँजी मुझे मालूम हो चुका था कि इमाम पर सजदा—ए—सहू वाजिब नहीं हैं। हज़रत महदी अलै. ने फरमाया इसको कश्फ नहीं कहा जा सकता जिससे शरीआ—ए—मुहम्मदी की रिआयत कायम ना रहे। फिर फरमाया तुम्हारी मालूमात पर खाक पड़े तुमने शरीआ—ए—मुहम्मदी के खिलाफ किया हैं। नमाज़ लौटाकर पढ़ो। इस वाकिए से मालूम होता है कि हजरत महदी अलैहिस्सलाम ने शरीअत—ए—मुहम्मदी (स. अ. व.) की मुकम्मिल और बारीकी से पैरवी करने की तामील फरमाई। हजरत बन्दगी मियाँ सैयद महमूद सानी—ए—महदी रजिअल्लाहु अन्हु चापाँनेर में ब जाहिर तो मसरूफ—ए—कसब थे। लेकिन कोई लम्हा महदी मौऊद अलै. से दूरी नहीं थी, खुदा के सिवा तमाम से बेनियाज थे। सुलतान महमूद बेगड़ा आपसे बेहद मुहब्बत रखता था, चुनाँचे जब आपने इजाजत—ए—रूखसत माँगी तो उसने इजाजत नहीं दी। बंदगी मियाँ शाह नेअमत रजि. और बंदगी मियाँ सैयद खुन्दमीर रजि. खिदमत—ए—महदी में जाना चाहते हैं इस इत्तेला के बाद इरादा फरमा लिया कि अब हम (सानी—ए—महदी) भी यहाँ से चलें।

हजरत सानी-ए-महदी रजि. का ख्वाब:-

एक रात हजरत सानी-ए-महदी रजि. ने ख्वाब में देखा कि खातिमैन अलैहिमुस्सलाम तशरीफ लाए हैं। दोनों हजरात बिल्कुल एक जैसे हैं, पहचानने में दुश्वारी हो रही थी, कि हजरत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कौन से हैं। और वालिद बुजुर्गवार हजरत महदी-ए-मौऊद अलैहिस्सलाम कौनसे हैं। उसी वक्त हजरत महदी अलै. ने फरमाया बिरादर सैयद महमूद अपने जद अमजद हजरत मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) की कदम बोसी करो, हजरत सानी महदी ने कदम बोसी की। हुजूर (स.अ.व.) ने अपने सीना-ए-पुर अनवार से लगाया फिर हजरत सानी-ए-महदी रजि. ने महदी अलैहिस्सलाम की कदम बोसी की महदी मौऊद अलै. ने अपने सीना-ए-पुर अनवार से लगाया। खातिमैन अलैहिमुस्सलाम ने सानी-ए-महदी रजि. के दोनों हाथ पकड़े और फरमाया। “यें जगह तुम्हारे रहने की नहीं।” हजरत सानी-ए-महदी रजि. ने होशियार होकर खुद को अपनी ख्वाब गाह (यानि जिस कमरे में सोते हैं) से दूर सहन में खड़ा हुआ पाया, अहलिया मुहतरमा बीबी कद बानू रजि अल्लाहु अन्हा से ख्वाब बयान फरमाया। हजरत पर कुछ कर्ज था बीबी ने मौजूद जेवर (जो उनके वालिदैन की तरफ से मिला था) लेकर रख दिया जो बेचकर कर्ज अदा किया गया और मुलाजमीन की तनख्वाहों की अदाई की गई। इस तरह हजरत सानी-ए-महदी रजि अल्लाहु अन्हु ने हुदूद-ए-कसब की पूरी पाबन्दी का अमली मुजाहिरा फरमाकर ये दिखलाया कि मोमिन जखीरा ना कुनद। (यानि मोमिन जखीरा नहीं करता या मोमिन को जखीरा ना करना चाहिए।)

हजरत सानी-ए-महदी रजि. ने हुदूद-ए-कसब पर इस तरह अमल फरमाया कि इमामुना अलै. ने फरमाया कि सैयद महमूद सैयद मुहम्मद से कभी जुदा नहीं। दुआ है कि हर कासिब को सदका-ए-सानी-ए-महदी (रजि.) मिले और हुदूद-ए-कसब की पाबन्दी की तौफीक नसीब हो। (आमीन) हजरत-सानी-

ए— महदी रज़िअल्लाहु अन्हु ने बीबी कद बानू रज़ि अल्लाहु अन्हा से फरमाया कि मैं हजरत महदी अलैहिस्सलाम के पास जा रहा हूँ तुम वालिदेन के घर चली जाओ। इन्शा अल्लाह मैं तुम को बाद में बुला लूंगा।

बीबी कदबानू रज़ि. ने अर्ज किया :-

ये सुनकर बीबी ने कहा इस बाँदी का भी एक मअरूजा है। ऐ वली—ए—निअमत, आका—ए—दुनियाँ व दीन! मैं आपसे दुनियावी दौलत कुछ भी नहीं चाहती, सिर्फ़ ये आरजू है कि आका—ए—निअमत जिस तरह मईशत—ए—दुनियावी जैसे खाने, कपड़े और अपनी तवज्जौह से सरफराज फरमाते रहे, निअमत खुदा तलबी में भी अपने साथ रखें, जुदा ना फरमाए, फाका होगा तो पेट पर पत्थर बान्ध लूंगी, चलने से पावों में आब्ले पड़ जाएंगें तो कपड़े लपेट लूंगी और ये क्या इन्साफ होगा कि आप तो मशक्कत—ए—सफर और फाकाकशी में मुब्तिला हों और ये नाशुदनी अपने वालिद के घर आराम से जिन्दगी बसर करें।” हजरत सानी—ए—महदी रज़ि अल्लाहु अन्हु और बीबी कद बानू रज़ि अल्लाहु अन्हा के दरमियान ऐसी मुहब्बत थी कि बीबी फरमाती कि “जैसी मुहब्बत हमारे जोड़े के दरमियान है। खुदा—ए—तआला तुम्हारे जोड़ों के दरमियान अता करें। बीबी कद बानू रज़ि. के साथ चलने की दरख्वास्त को हजरत ने कुबूल फरमाया। सफर फराह मुबारक का आगाज हुआ लेकिन सफर के खर्च को पैसे ना काफी थे। चापानेर से राधनपुर तक यह रकम काम आई। राधनपुर में पहले हजरत शाह नेअमत रज़ि. से फरमाया कि बतौर कर्ज रकम दें मीराँजी अलैहिस्सलाम को देने के लिए रकम आई हुई थी, लेकिन हजरत बंदगी मियाँ शाह नेअमत रज़ि अल्लाहु अन्हु ने अमानतदारी के ख्याल से रकम नहीं दी। हजरत बंदगी मियाँ सैयद खुन्दमीर रज़िअल्लाहु अन्हु ने रकम की जरूरत का सुनकर वो तमाम रकम जो हजरत महदी अलैहिस्सलाम को देने की थी। हजरत सानी—ए—महदी रज़ि. के हवाले फरमाकर कहा हमारी मुलाकात जात—ए—मीराँ जी से इसी जगह हो

गई। और फरमाया:— और अगर यह रकम खर्च हो जाएँ तो बन्दे को बेचकर अपना सफर जारी रखिए।

रूए जमीन के मुबारक जोड़े का सफर:—

सफर का आगाज हुआ हजरत सानी—ए—महदी रजि. बीबी कद बानू रजि., हजरत बंदगी मियाँ रजि., हजरत शाह—ए—नेअमत रजि अल्लाहु अन्हु वगैरा इस काफिले में थे। जब ठहरने की मन्जिल आती मियाँ रजि अल्लाहु अन्हु अपनी सवारी को तेज करके आगे बढ़ जाते और जरूरी सामान की तकमील फरमा देते, जगह ठीक करवाकर खैमे नसब करवा देते पानी का छिड़का—ऊ— (छिड़काव) होता जिससे जमीन नर्म और ठंडी हो जाती फिर इस मुबारक जोड़ें को ठहराया जाता। इसी तरह ये सफर आराम से तकमील पाया। काफिला पहुँचने से पहले इमामुना अलै. ने बैचेनी से इन्तिजार फरमाना शुरू कर दिया था। उम्मुल मुसद्दिकीन बीबी बोनजी रजिअल्लाहु अन्हा ने पूछा क्या आप को भी अपने फरजन्द का इन्तिजार है। इमामुना अलै. ने फरमाया:— “क्यों ना हो पूत, पूत होकर आ रहा है। और फरमाया:— इन मुसाफिरीन में से बाज ऐसे हैं। जिनकी सोहबत में कई लोग महदी यानि हादी बनेंगे। पूछा गया वो कौन हैं। ताकि उनके साथ अकीदत रखें। फरमाया:— सैयद महमूद और सैयद खुन्दमीर (रजि अल्लाहु अन्हु)

61. काफिला आ पहुँचा

काफिला दायरे में दाखिल हुआ सबसे पहले हजरत सानी—ए—महदी रजि. ने इमामुना अलै. की कदमबोसी की हजरत महदी अलैहिस्सलाम ने एक आयत पढ़ी फारसी का एक शेर पढ़ा फिर दूसरे तमाम हजरात ने भी इमामुना की कदमबोसी की और दुआ हासिल की। हजरत—सानी—ए—महदी रजि अल्लाहु अन्हु ने अर्ज किया:— मीरों जी मैं खिदमत—ए—आली में क्यों कर ना आता कि सैयद खुन्दमीर ने मेरे साथ बहुत हुसन—ए—सुलूक किया अगर ब्रादर

सैयद खुन्दमीर रास्ते में ना होते तो यह बंदा रास्ते ही में जान देता (सफर की तकलीफ से जान का धोखा हो गया था।) लेकिन सैयद खुन्दमीर ने ऐसी भलाई की है। इमामुना अलै. ने फरमाया:— इसमें ताज्जुब क्या हैं। सैयद खुन्दमीर तुम्हारे ब्रादर हकीकी हैं। हजरत सानी—ए—महदी रज़ि अल्लाहु अन्हु के बीबी कद बानू रज़ि अल्लाह अन्हा से तीन फरजन्द और एक दुखतर हुई। सैयद अब्दुल हई उर्फ रौशन मुनव्वर रज़ि., सैयद अहमद रज़ि. जिनका इन्तिकाल बचपन ही में हो गया, और तीसरे सैयद याकूब हसन—ए—विलायत रज़ि. और बेटी बीबी खूनजा गौहर रज़ि अल्लाहु अन्हा।

62. फरमाया “सैयद महमूद की औलाद हमारे सर का ताज है।”

फराह मुबारक के दौरान—कियाम ही हजरत बंदगी मियाँ अब्दुल हुई उर्फ रौशन मुनव्वर रज़ि अल्लाहु अन्हु की पैदाइश हुई थी। इमामुना अलैहिस्सलाम को इत्तिलआ दी गई, आप मुस्कुराते हुए तशरीफ लाए, और बच्चे को हाथों में लिया, कानों में अजान और इकामत के अल्फाज फरमाए। और फरमाया इस बच्चे का नाम सैयद अब्दुल हुई या सैयद याकूब रखो ये सुनकर हजरत सानी—ए—महदी ने अपने जामअ को गिराह डाल ली और फरमाया: कि ये दूसरे फरजन्द की बिशारत है।

हजरत महदी मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया औलाद—ए—भाई सैयद महमूद ताज सर—ए—मा अस्त यानि भाई सैयद महमूद की औलाद हमारे सर का ताज है।

63. हसनैन—ए—विलायत

हजरत बंदगी मियाँ सैयद अब्दुल हई उर्फ रौशन मुनव्वर रज़ि अल्लाहु अन्हु। जैसे कि ऊपर बतलाया गया, इन फरजन्द का नाम सैयद अब्दुल हई रखा गया और उर्फियत रौशन मुनव्वर है। आप इमामुना अलै. के पर्दा फरमाने

के वक्त छः माह के थे। हजरत महदी मौऊद अलैहिस्सलाम ने आपको जिक्र-ए-खफी का दम दिया था और हजरत इस मुशाहिदे पर कायम थे। जब आप बड़े हुए तो किसी ने आपसे पूछा कि आपकी उम्र गिरामी महदी अलैहिस्सलाम क हुजूर (6) छः माह थी क्या हजरत अलैहिस्सलाम का मुशाहिदा और जिक्र का दम याद हैं फरमाया: हजरत महदी मौऊद अलैहिस्सलाम के सदके से बन्दे को कालु बला का दिन याद है। इमामुना अलै. के बाद आपने इलाका-ए-सोहबत हजरत सानी-ए-महदी रज़ि अल्लाहु अन्हु से किया। जब आप बारह साल के थे वालिद बुजुर्गवार का विसाल हो गया। तमाम सहाबा-ए-किराम रज़ि अल्लाहु अन्हु ने अपने दरमियान आपको सविध्यत दी हैं। बाज बुर्जुगों ने आपकी अजमत को पेश-ए-नजर रखकर आपसे इलाका किया हैं। हजरत रौशन मुनव्वर रज़ि अल्लाहु अन्हु का विसाल सत्तर (70) या एकहत्तर (71) साल की उम्र शरीफ में हुआ।

हमारे बुजुर्गों ने किस तरह नेस्ती और इन्किसारी का सबक दिया इस वाकिए से मालूम होगा। एक बार हजरत बंदगी मियाँ सैयद अब्दुल हई उर्फ रौशन मुनव्वर रज़ि अल्लाहु अन्हु हजरत बंदगी मीरों सैयद महमूद सैदनजी खातिम-उल-मुरशिदीन रज़ि अल्लाहु अन्हु के दायरे को तशरीफ ले गए और अदबन अपनी जूतियाँ दायरे के दरवाजे पर उतार दी। हजरत खातिम-उल-मुरशिदीन और फुख्खा-ए-किराम आपके इस्तिकबाल के लिए दायरे के दरवाजे पर मौजूद थे। जब ये देखा तो हजरत खातिम-उल-मुरशिदीन रज़ि अल्लाहु अन्हु ने अपने फकीरों से फरमाया तुम यही रहो ये मेरा काम है। और दौड़कर हजरत रौशन मुनव्वर रज़ि अल्लाहु अन्हु की जूतियाँ उठाली और अपनी बगल में लेकर हजरत के साथ दायरे में तशरीफ लाए। वापसी के वक्त हजरत खातिम-उल-मुरशिदीन रज़ि अल्लाहु अन्हु ने हजरत रौशन मुनव्वर की जूतियाँ सीधी करके रखदीं। इस तरह दो बुजुर्गों ने अना को फना करने की अमली तालीम हम को दी। हजरत बंदगी मियाँ सैयद शहाबुद्दीन शहाब-उल-हक रज़ि. अल्लाहु अन्हु ने कुछ सुपारियाँ

हजरत रौशन मुनव्वर रज़ि अल्लाहु अन्हु के पास भेजकर उसका पस खूर्दा करवाकर मँगवा लिया और नौश फरमाया करते थे। हजरत शहाब—उल—हक रज़ि. अल्लाहु अन्हु ने अपने फरजन्द मियाँ सैयद यहया रहमत उल्लाही अलैह को हजरत रौशन मुनव्वर रज़ि अल्लाहु अन्हु की खिदमत में भेजकर तर्बियत करवाया है। जब मियाँ सैयद सादुल्लाह रहमत उल्लाही अलैह फरजन्द हजरत बंदगी मियाँ सैयद तशरीफुल्लाह तशरीफ—ए—हक रज़ि. अल्लाहु अन्हु तर्बियत होने हजरत शहाब—उल—हक रज़ि अल्लाहु अन्हु की खिदमत में आए और अर्ज किया चिचा बावा मेरे दिल में हजरत (यानि आप) की अजमत बहुत है। मुझे तर्बियत कीजिए तो हजरत शहाब—उल—हक रज़ि अल्लाहु अन्हु ने फरमाया, इस बन्दे के दिल में जिसकी अजमत है। मैं तुमको वहाँ भेजता हूँ फिर हजरत रौशन मुनव्वर की खिदमत में रवाना किया। हजरत ने मियाँ सैयद सादुल्लाह को तर्बियत किया। अलगर्ज कौममें हजरत का फ़ैज और सद्का जारी वसारी है और इन्शा अल्लाह कियामत तक जारी रहेगा हजरत रौशन मुनव्वर रज़ि अल्लाहु अन्हु के विसाल के बाद भी जिक्र (इल्लल्लाह) की आवाज आ रही थी।

हजरत बंदगी मियाँ सैयद याकूब उर्फ़ शाह याकूब हसन—ए—विलायत रज़ि अल्लाहु अन्हु:— हस्ब—ए—फरमान इमामुना महदी मौरुद अलै. ।

हजरत बंदगी मियाँ सैयद महमूद सानी—ए—महदी रज़ि अल्लाहु अन्हु के दूसरे फरजन्द हजरत बंदगी मियाँ शाह याकूब हसन—ए—विलायत रज़ि अल्लाहु अन्हु हैं। पैदाइश भीलोट शरीफ में हुई अपने वालिद बुजुर्गवार से तर्बियत हैं और जिक्र की तल्कीन भी हासिल की है। जिक्र की तल्कीन के बाद हजरत सानी—ए—महदी रज़ि. ने फरमाया मेरे बाद जिस मुहाजिर—ए—महदी को पाओ उनसे जिक्र के दम की तहकीक करलो जब आप सात (7) साल के थे। उस वक्त हजरत सानी—ए—महदी रज़ि. का विसाल हुआ। पहले आप हजरत बंदगी

मियाँ शाह निजाम रजि. और उसके बाद हजरत बंदगी मियाँ मलिक इलाहदाद खलिफा—ए—गिरोह रजि. और हजरत बंदगी मियाँ शाह दिलावर रजि अल्लाहु अन्हु की मुबारक सोहबतों में रहें। हजरत बंदगी मियाँ शाह नेअमत रजि. ने तल्कीन—ए—जिक्र की तजदीद फरमाई और ईरशाद की इजाज़त हजरत शाह नेअमत रजि. और हजरत शाह दिलावर रजि अल्लाहु अन्हु ने दी। आपके तआल्लुक से हजरत बंदगी मियाँ शाह दिलावर रजि. अल्लाहु अन्हु ने फरमाया:— कि हजरत महदी अलैहिस्सलाम के फ़ैज की नहरें (हजरत शाह याकूब रजि. अल्लाहु अन्हु के जरिए) ऐसी तेजी से बह रही है। कि उनकी बड़ बड़ाहट की आवाज बन्दे के कानों में आ रही हैं।

इन्शा अल्लाह इन (हजरत शाह याकूब रजि अल्लाहु अन्हु) का फ़ैज कियामत तक रहेगा। हस्ब—ए—इरशाद हजरत बंदगी मियाँ शाह दिलावर रजि अल्लाहु अन्हु कौम में हजरत का फ़ैज़ और सदका जारी व सारी है। और इन्शा अल्लाह ये कियामत तक जारी रहेगा। नकल है। कि, हजरत शाह याकूब रजि अल्लाहु अन्हु ने मुअमिला में अपने लिए हजरत याकूब अलैहिस्सलाम का मुकाम देखा, ख्याल फरमाया कि हजरत याकूब अलैहिस्सलाम को बारह फरजन्द थे और मुझे (आठ) फरजन्द हैं। इसके बाद आपने अपनी चारों दुख्तरों को देखा कि इनके सरों पर दस्तारें रखीं हैं। यानि ये चारों दुख्तरें भी अपने भाईयों के मुकाम की थी। (हजरत मियाँ सैयद हुसैन नबीरा—ए—हजरत बंदगी मियाँ सैयद अली सतून—ए—दीन रहमत उल्लाही अलैही की किताब “तजकिरतुस्सालिहीन से ये रिवायत ली गई)। हजरत महदी मौऊद अलैहिस्सलाम ने खुदा की तलब और दीदार की तलब न सिर्फ़ मर्दों पर बल्कि औरतों पर भी फर्ज फरमाई है। आज भी खुदा के फज़ल और महदी के सद्के से बाज औरतें जब सोती हैं तब भी उनका जिक्र जारी रहता है। और ये सिलसिला इन्शा अल्लाह कियामत तक जारी रहेगा।

हमारी माँओ, बहनों को जिक्र का हर वक्त ख्याल रखना जरूरी है। और हर लम्हा जिक्र की पाबन्दी करनी लाज्मी हैं। क्योंकि जो साँस जिक्र के बगैर गई वो मुर्दा हो जाती है। हर मुसद्दिक को इस बात की कौशिश में रहना चाहिए कि जहाँ से फ़ैज़ मिले हासिल कर लिया करें। क्योंकि माल व असबाब की हिर्स बुरी बात है। लेकिन फ़ैज़ और बुजुर्गों के दिए हुए को हासिल करने में कोताही ना करना चाहिए। जब हजरत बंदगी मियाँ शाह याकुब हसन-ए-विलायत रज़ि अल्लाहु अन्हु अपने दोनों शहजादों (हजरत बंदगी मीराँ सैयद युसुफ और हजरत बंदगी मीराँ सैयद खुन्दमीर बाराबनी इस्राईल रहमत उल्लाही अलैहिम) को हुसूल फ़ैज़ के लिए हजरत सैदनजी खातिम-उल-मुर्शिदीन रज़ि अल्लाहु अन्हु की खिदमत में रवाना फरमा रहे थे। तो उस वक्त किसी ने कहा कि अल्लाह का दिया मौजूद हैं। यानि क्यों इन शहजादों को भिजवाया जा रहा है। हजरत रज़ि. अल्लाहु अन्हु ने जब जवाब में फरमाया वो हमारे लिए बेहद फायदेमंद है।

आपने फरमाया:- घर का जो है वो तो मिलेगा, मर्द वो है जो बाहर से (फ़ैज़) कमाकर लाए। हजरत बंदगी मियाँ सैयद खुन्दमीर सिद्दीक-ए-विलायत के बीबी फातिमा (दुखतर-ए-महदी-ए-मौऊद अलै.) खातून-विलायत रज़ि अल्लाहु अन्हा से एक फरजन्द सैयद महमूद हुए।

हजरत बंदगी मियाँ महमूद सैदनजी खातिम-उल-मुर्शिदीन रज़ि अल्लाहु अन्हु:- हजरत महदी मौऊद अलैहिस्सलाम ने हजरत सैदनजी खातिम-उल-मुर्शिदीन रज़ि अल्लाहु अन्हु के ताअलुक से जौनपुर में बिशारत फरमा दी थी। हस्ब-ए-इरशाद इमामुना अलै., आपकी पैदाइश इमामुना अलै. के पर्दा फरमाने के बाद हिन्दुस्तान में हुई। वालिद बुजुर्गवार हजरत बंदगी मियाँ सैयद खुन्दमीर सिद्दीक-ए-विलायत की शहादत के वक्त आपकी उम्र-ए-शरीफ सात (7) साल की थी। मियाँ की शहादत के बाद आपकी

तालीम व तर्बियत हजरत बंदगी मियाँ मलिक इलाहदाद खलीफा-ए-गिरोह रजि. ने फरमाई थी। आप हजरत बंदगी मियाँ मुबारक उर्फ मियाँ भाई मुहाजिर रजि अल्लाहु अन्हु के भी तर्बियत हुए और जिक्र की तलकीन भी आप ही से हासिल हुई। अपने जमाना-ए-इरशाद में हजरत सैदनजी खातिम-उल-मुरशिद रजि. जब किसी को तर्बियत फरमाते तो उस वक्त हजरत बंदगी मियाँ भाई मुहाजिर या हजरत खलीफा-ए-गिरोह (रजि. अल्लाहु अन्हु) दोनों में से जिन बुजुर्ग का मुशाहिदा हासिल होता उन्हीं के नाम से तर्बियत फरमाते। हस्ब-ए-फरमान इमामुना अलै. आपसे मुद्दआ-ए-महदी पुरा हुआ, व नीज़ दीन ने करार पकड़ा और जिस तरह इमामुना अलै. ने फरमाया था:- जब दीन हर तरफ से उठ जाएगा तो खुनजा (यानि दुख्तर-ए-इमामुना बीबी खूनजा फातिमा खातून-ए-विलायत रजि अल्लाहु अन्हा) के पेट पर काइम होगा। आमन्ना व सदक्कना। ये बिशारत भी अल्लाह ने पूरी फरमा दी। इमामुना अलै. के बाद और सहाबा-ए-किराम के विसाल के बाद लोगों ने हजरत खातिम-उल-मुर्शिद से अपने अपने सिलसिलों की तजदीद खुद आकर या खुतूत के जरिए करवाई। इस तरह सारी कौम में आपके जरिए फ़ैज-ए-महदी अलै. और सद्का-ए-महदी अलै. जारी व सारी है। और इन्शाअल्लाह कियामत तक जारी रहेगा। हमारे बुजुर्गों ने हमेशा आमाल की तलकीन फरमाई, क्योंकि खुदा के पास आमाल की पुर्शिष होगी नसब या निस्बत की नहीं, जिसको आमाल पीछे कर दे उसको नसब आगे बढ़ा नहीं सकता।

ये वाकिआ पढ़िए:- एक मैयत कबर में उतारी गई चेहरे पर नूर को देखकर किसी ने कहा कि मरहूम पर ये नूर उनके हसब व नसब की वजह से है। ये सुनकर हजरत खातिम-उल-मुर्शिद रजि. ने फरमाया ये क्या कह रहे हो? बन्दा इन से ज्यादा फजीलतों का हामिल है। (यानि मेरा हसब और नसब इनसे ज्यादा भारी है।) मेरे नाना हजरत महदी मौऊद अलैहिस्सलाम है। और नानी बीबी अलाहदादी रजि. है।

वालिद मियाँ सैयद खुन्दमीर रजि. वालिदा बीबी फातिमा रजि. (खातून-ए-विलायत) और मामू मीराँ सैयद महमूद रजि. है। लेकिन ईमान फरमुदा-ए-महदी मौऊद अलै. और आपके मुद्दआ पर है।

नोट:- हसन-ए-विलायत के वाकिआत खत्म हुए। अब फराह मुबारक के वाकिआत मुलाहिजा कीजिए।

फराह मुबारक के वाकिआत:-

दरबार-ए-इमामुना अलै. से सहाबा को बिशारतें- जिस तरह हुजूर पुर नूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया था कि:- मेरी उम्मत के उलमा बनी इसराईल के अम्बिया के जैसे है। इस तरह हजरत महदी अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला का ये इरशाद बयान फरमाया कि:- सैयद मुहम्मद जहाँ विलायत-ए-मुहम्मदिया का खत्म होता है। वहाँ बाज लोग (पिछले अम्बिया के जैसे) मसील व नजीर अम्बिया-ए-मा साबिक होते हैं। बाज असहाब को सैर-ए-इब्राहीम अलैहिस्सलाम बाज को सैर-ए-मूसा अलैहिस्सलाम बाज को सैर-ए-ईसा अलैहिस्सलाम की बिशारत इमामुना अलै. ने फरमाई। ये सुनकर हजरत बंदगी मियाँ रजि अल्लाहु अन्हु ने अर्ज किया:- “या इमामुना। भला किसी को सैर-ए-नबी (स.अ.व.) और सैर-ए-मुहम्मद महदी (अलैहिस्सलाम) भी हासिल है। फरमाया हँ। एक रोज बयान-ए-कुरआन के वक्त फरमाया “फरमाने-ए-इलाही होता है। इन दो नौ जवानों को जो तेरे दाहिने और बायें तरफ बैठे हैं। मेरी दरगाह से (मेरी जानिब से) बे वास्ता फैज पहुँच रहा है। बीबी बोनजी रजि अल्लाहु अन्हा के पूछने पर (के वो कौन है) इमामुना अलै. ने फरमाया:- सैयद महमूद और सैयद खुन्दमीर। सहाबा-ए-किराम मसलन हजरत बंदगी मियाँ सैयद महमूद सानी-ए-महदी, हजरत बंदगी मियाँ सैयद खुन्दमीर, हजरत बंदगी मियाँ शाह नेअमत हजरत बंदगी मियाँ अब्दुल मजीद नूर-ए-नोश रिजवान-उल्लाही अलैहिम अजमईन के फराह मुबारक पहुँचने के बाद हजरत महदी अलैहिस्सलाम की मुबारक हयात छ: (6) महीने रही (6) माह

के बाद होने वाले विसाल मुबारक की इतिलआ अल्लाह तआला की तरफ से हजरत महदी अलैहिस्सलाम को और हजरत बंदगी मियाँ शाह दिलावर रजि अल्लाहु अन्हु को हो गई थी।

64. तालीम—ए—सैयदैन

इस अर्से में दोनों सैयदैन की तालीम इस तरह पूरी फरमाई कि:— हजरत मीराँ सैयद महमूद सानी—ए—महदी रजि. अल्लाहु अन्हु को दिनभर सैर—ए—नबूवत की तालीम फरमाई: और हजरत बंदगी मियाँ सैयद खुन्दमीर सिद्दीक—ए—विलायत को रातभर “ सैर—ए—विलायत की तालीम फरमाई।

एक रोज इसी मुकाम फराह मुबारक में हजरत महदी अलैहिस्सलाम को फरमान—ए—खुदा हुआ कि:— ऐ सैयद मुहम्मद जाओ और हमारे बंदे नेअमत को ईमान की बिशारत दो और अपने दामन में ले लो। इस हुक्म—ए—ईलाही पर हजरत अलैहिस्सलाम ने हजरत शाह नेअमत रजि. को अपने दामन में लिया शाह नेअमत रजि अल्लाहु अन्हु ने ऊपर देखा और महदी अलैहिस्सलाम से कहा नेअमत इस मुशाहदे पर फिदा है। हजरत महदी अलै. ने फरमाया—बन्दा खुदा के फरमान से आया है। खुदा के फरमान से तुमको ईमान की बिशारत देता हूँ। शाह नेअमत रजि. ने अर्ज किया मीराँ जी खुन्दकार (यानि महदी अलैहिस्सलाम) के सदके से ईमान मिलता है, लेकिन अपने ईमान की बिशारत अता हो, हजरत महदी अलैहिस्सलाम ने मुस्कुराकर फरमाया कि— ऐ मियाँ नेअमत नबी और महदी का ईमान दूसरे बशर (आदमी) के लिए रवा नहीं हैं।

नोट:— इमामुना के इस फरमान से भी रसूल और महदी यानि खातिमैन अलै. की बराबरी और तस्वियत साबित हो रही हैं।

लेकिन “खुश रहो कि तालिब के लिए यही तलब लाजिम है। गुजरात से जिस वक्त रवानगी हो रही थी। उसी वक्त अल्लाह तआला का फरमान

हुआ था कि:— ऐ सैयद मुहम्मद खुरासान की तरफ हिजरत कर वही तेरे इन्तिकाल की जगह है और वही उलमा—ए—खुरासान से तेरे इल्म की शान का इअतिराफ करवा लूंगा। सब अस्थाब किराम को भी अल्लाह तआला की तरफ से मालूम करवा दिया गया था कि महदी (अलै.) का इन्तिकाल इसी जगह (खुरासान में) होगा। जुम्मे का दिन था अपने कियाम गाह से हजरत महदी अलैहिस्सलाम सहाबा के साथ जुम्मे की नमाज़ के लिए रवाना हुए। कस्बा—ए—रच की जामा मस्जिद पहुँचने से पहले रास्ते में एक जगह थी कुछ देर को ठहरे हालाँकि धूप सख्त थी। बाद में रूकने की वजह पूछने पर फरमाया:—

यह बन्दा जब यहाँ पहुँचा तो हक सुब्हानहु व तआला की तरफ से फरिश्ते नूर व रहमत के तबक निसार करते मैंने देखा और वहीं अल्लाह तआला का फरमान पहुँचा।

ऐ सैयद मुहम्मद इस जगह तवक्कुल कर (ठहर जा) ताकि तेरे साथी इस नूर और जहूर—ए—रहमत के फ़ैज से बहरा मन्द हो (इनको भी ये मिल) मस्जिद आने से पहले रास्ते में हजरत के बाजू हजरत सानी—ए—महदी रजि. चल रहे थे, हजरत महदी अलै. ने फरमाया— भाई सैयद महमूद आगे चलो या पीछे होकर आओ क्योंकि हर दो जात बराबर हो गए हैं। खुदा—ए—तआला गयूर (गीरत वाला) है। इनमें से एक को उठा लेगा। फराह मुबारक के बाज उलेमा जो तस्दीक नहीं किए थे उन्होंने तय किया कि जुम्मे के दिन हजरत की महदियत का सबूत तलब करने के लिए हम सब जाएँगे, और तहकीक कर तस्दीक कर लेंगे।

हजरत महदी मौऊद अलैहिस्सलाम जामा मस्जिद तशरीफ लाए, नमाज़—ए—जुम्मा पढ़ी और नमाज़—ए—वितर की नीयत बुलन्द आवाज से बान्धी और वितर अदा फरमाई।

उसी वक्त एक आलिम ने कह दिया कि:— यह जात महदी—ए—मौऊद है। आप आइन्दा जुम्मा को नहीं आएँगे (या आइन्दा जुम्मा आप पर नहीं आएगा, उससे पहले पर्दा फरमा लेंगे) इसलिए कि हजरत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैही व सल्लम भी नमाज—ए—जुम्मा की अदाई के बाद वितर अदा फरमाए थे और पीर के दिन जुम्मा आने से पहले रहलत फरमाए। (पर्दा फरमा लिया) कोई शक नहीं कि यह जात—ए—आली सिफात महदी—ए—मौऊद है। यह हुज्जत काफी है।

आलिमों के सवाल और आप के जवाब:—

1. सवाल :— आपका तवल्लुद किस रोज हुआ? (यानि आप किस रोज पैदा हुए?)

जवाब:— आप पीर के दिन पैदा हुए।

2. सवाल:— आपको दावा करने का हुक्म कौन से दिन हुआ?

जवाब:— पीर के दिन।

3. आपको दावा—ए— महदियत किए हुए कितने साल हुए?

जवाब:— पाँच (5) साल

4. सवाल:— हदीस—ए—(शरीफ) में दो रिवायते आई है। एक में पाँच (5) साल का जिक्र है। और एक में तेईस (23) साल

जवाब:— दोनों रिवायतें दुरुस्त हैं बन्दे को अट्टारह (18) साल तक गैर ताकीदी हुक्म था कि:— “तू महदी—ए—मौऊद है। दावाकर और अपनी महदियत को जाहिर कर दे।” बन्दे ने जब्त किया और (पाँच) साल हुए हैं कि अमर—ए—मौक्कद (ताकीदी) हुआ है। और इताब के साथ फरमान होता है कि:— “ऐ सैयद मुहम्मद तू महदी—ए—मौऊद है। इस अमर (बात) का इज्हार कर, तू खल्क (लोगों) से डरता है? अपनी महदियत को आशकार कर वरना

जालिमों के जुमरें में तुझे शामिल करूंगा। बिना बर्रि (इस वास्ते) हुक्म-ए-खुदाबन्दी के आगे बन्दे ने गर्दन झुका दी। ये सुनकर सब आलिमों ने कहा कि महदी-ए-मौऊद अलै. की अलामतें अहादीस-ए-सहीहा में यही बयान की गई थी। इसके बाद आप वापस अपने दायरे को हुए। बुखार की जहमत शुरू हुई पहले आपने बीबी बोनजी रज़ि अल्लाहु अन्हा के यहाँ कियाम फरमाया, उसके बाद बारी के खत्म पर बीबी मलकान रज़ि अल्लाहु अन्हा के पास ले चलने को फरमाया। सहाबा ने भी दरखास्त कि यहीं रहिए और बीबी मलकान ने अर्ज किया:- मीरों जी। मैंने अपनी नौबत। हुजूर को बख्श दी।

65. शरअ की पासदारी (पाबन्दी और ख्याल)

हजरत महदी अलैहिस्सलाम ने फरमाया खूब तुमने अपना हक बख्श दिया लेकिन शरअ-ए-मुहम्मदी (स.अ.व.) की हद जो खुदा-ए-तआला ने मुकर्रर की है। कौन इसको बख्शेगा? दूसरी बार इमामुना के फरमाने पर सहाबा-ए-किराम ने दुबारा अर्ज किया कि मीरों जी की जात-ए-अक्दस को तकलीफ बहुत है।

तीसरी बार आँ हजरत अलैहिस्सलाम ने फरमाया:- हमारे ब्रादर हमारी रिआयत करते हैं लेकिन शरअ-ए-मुहम्मदी की रिआयत नहीं करते। फिर हजरत ने खुद से उठने की कोशिश फरमाई, और बीबी मलकान रज़ि. के मकान ही में आपको पहुँचा दिया गया। और एक बोरिए पर लेट गए। बंदगी मियाँ के आने पर अपना सर-ए-मुबारक बंदगी मियाँ रज़ि अल्लाहु अन्हु के जानु पर रखकर तमाम वसियतें फरमाई। बुखार की हरारत पर सबको फिकर शुरू हो गई अचानक हजरत बंदगी मियाँ शाह नेअमत रज़ि अल्लाहु अन्हु की हिचकी की आवाज पर दर्याप्त फरमाया कौन रोता है? हजरत शाह नेअमत ने अर्ज किया बन्दा नेअमत, इमामुना अलै. ने फरमाया:- “रोने का ये वक्त नहीं, अभी तो बन्दा तुम में मौजूद है। फिर फरमाया बन्दे की जुदाई के आसार ये हैं।

1. खुदा ना ख्वास्ता खुदा की याद और उसकी तलब तुम्हारे दिलों से निकल जाए।
2. दौलत मंद और अहल-ए-दुनिया का मिलन तुम्हारी तरफ शुरू हो जाए, अहल-ए-दुनिया तुम से अदावत व नफरत करना छोड़ दें और तुमको ईजा ना दें।
3. तुम्हारा नफ़स हुब्ब-ए-शहवात (बे-हुदा-ख्वाहिशात की मुहब्बत) से मअमूर हो जाए।

मुद्दआ-ए-महदी (महदी के आने का मक्सद) तुम से जाता रहा तो यकीन करलो कि बन्दा तुम में नहीं रहा।

मगर इन्शा अल्लाह महदी और महदवियाँ कियामत तक रहेंगे। हजरत शाह नेअमत रजि अल्लाहु अन्हु के रोने की वजह से हुई कि जब इमामुना अलैहिस्सलाम ने यूँ फरमाया:— ब्रादरो मुहम्मद नबी (सल्लल्लाहु अलैही व सल्लम) और मुहम्मद महदी (अलैहिस्सलाम) को फना नहीं, इनकी मौत सिर्फ नक्ल-ए-मकनी (एक घर से दूसरे घर को मुन्तकिल होना) है। मौत एक पुल है। जो दोस्त को दोस्त अल्लाह तआला तक पहुँचा देता है।

नोट:— इस फरमान से भी तस्वियत और बराबरी साबित हो रही है।

अगर बन्दे के महदी होने में शुब्ह हो तो कब्र में उतारने के बाद देखो कि अगर मेरी लाश (पुर नूर मैयत) कफन में पाओ तो समझो कि मैं झूठा और अल्लाह पर इफितरा करने वाला हूँ मैं महदी मौऊद नहीं हूँ। उसके बाद अस्सलामु अलैकुम फरमाकर सबको रूख्सत फरमाया।

मजलिस-ए-आम बरखास्त हुई सैयदैन को करीब बुलाया और नसीहत फरमाई, हजरत सानी-ए-महदी रजि. को अहल-ए-बैत और जुमला

मुहाजिरीन पर अपनी तरफ से खलीफा मुकर्र्र किया और फरमाया:— बन्दे के असहाब की मिसाल आग में कोयलों की सी है। बाज पूरे रौशन हो चुके हैं बाज आधे, बाज पाव मगर जो नाकिस हैं सैयद महमूद के हुजूर में इनकी तालीम व सोहबत से कामिल हो जाएंगे। हजरत बंदगी मियाँ सैयद खुन्दमीर रजि. को सिफत—ए—कातिलू व कुतिला का मजहर और अपना बदल फरमाया, और इस वक्त बतौर ताकीद फरमाया। बन्दे के इन्तिकाल के बाद तुम गुजरात चले जाओ कातिलू—व—कुतिलु का मअर्रिका गुजरात में पेश आएगा इसके पहले शुम्बे के दिन इस आयत—ए— शरीफा को अपने तमाम सहाबा (मर्द व औरतें) जो मुहाजिरीन मुसाहिबीन, मनजूरीन और मुबशिरीन (रिजवान—उल्लाही अलैहिम अजमईन) थे इन तमाम के हक में सुनाया कि ऐ असहाब तुम्हारे हक में खुदा—ए—तआला का फरमान होता है कि:—

तर्जुमा:— आज मैंने कामिल किया तुम्हारा दीन और तमाम की तुम पर अपनी निअमत और पसन्द किया तुम्हारे लिए दीन—ए—इस्लाम।

फिर आपने फरमाया:—

दीन बवजह शरिअत कामिल होने पर हजरत रसूलुल्लाह (स.अ.व) ने अपने असहाब को इस आयत से मुखतिब फरमाया था।

दीन बवजह विलायत कामिल होने पर फरमान हक तआला होता है कि:—

ऐ सैयद मुहम्मद तू भी अपने असहाब को इस आयत से मुखतिब कर। नीज हजरत महदी अलैहिस्सलाम ने यह भी फरमाया:— हम अम्बिया के गिरोह में हैं जो किसी जाहिरी असासे के वारिस नहीं होते हैं। और नाही किसी को (जाहिरी असासे का) वारिस करते हैं। वक्त विसाल करीब आ रहा था। पैर दराज फरमाकर लेट गए और फरमाया:— “अब मुझे तसकीन व इतमिनान है। सब खामोश रहो” और चादर सर से पैर तक ओढ़ ली।

66. हजरत इजराईल अलैहिस्सलाम ने अन्दर आने की इजाजत तलब की

(पीर का दिन) बहुक्म-ए-खुदा-ए-पाक व बरतर:- हजरत इजराइल अलैहिस्सलाम ने अन्दर आने की इजाजत चाही इमामुना अलै. की इजाजत मिलने पर हाजिर हुए और अल्लाह का पयाम पहुँचा दिया।

67. इमामुना अलै. ने पर्दा फरमा लिया तदफ़ीन

इमामुना अलै. ने लब्बैक फरमाया और हजरत इजराईल अलैहिस्सलाम रूह-ए-पुर-नूर के हमराह रवाना हो गए। हजरत बंदगी मियाँ रजि. ने सीना-ए-पुर अनवार पर हाथ रखकर फरमाया। “रजि अम-बी खजाअल्लाह कहकर इन्ना लिल्लाही व इन्ना इलैही राजिऊन” की तिलावत फरमाई। यह सुनकर अहल-ए-बैत-ए-महदी (अलै.) के सरो पर आसमान-ए-गम टूट पड़ा खुसूसन हजरत सानी-ए-महदी रजि अल्लाहु अन्हु के सदमा-ए-दिली का अन्दाजा ना मुम्किन है। उसके बावजूद आपने मौजूद तमाम हजरात को तसल्ली व तशफकी दी।

हजरत सानी-ए-महदी रजि. ने जनाजा-ए-मुबारक को उठाकर चार पाई पर रखा सैयदैन और सहाबा ने चार पाई (पलंग) मस्जिद में लाकर रखा और सुन्नत के तरीके से गुसल दिया गया। गुसल के बाद नाफ-ए-मुबारक में रह जाने वाले पानी को हजरत बंदगी मियाँ शाह नेअमत रजि. ने नोश फरमा लिया।

इधर गुसल दिया जा रहा है, उधर फराह और रच वालों के दरमियान बहस छिड़ गई कि हजरत महदी अलैहिस्सलाम का मजार-ए-पुर अनवार इनके इलाके में रहे सैयदैन के इस फैसले को हजरत बंदगी मियाँ शाह निजाम रजि अल्लाहुं अन्हु ने सुना दिया कि:- हजरत महदी-ए-मौऊद अलैहिस्सलाम का मदफन (दफन होने की जगह) तुम्हारी या हमारी राए पर

नहीं हैं खुद आँ हजरत महदी मौऊद अलै. का जनाजा मुबारक जहाँ ठहरे वहीं आपका मद्फन है। इस पर सब राजी हो गए और जौहर की नमाज के बाद जनाज-ए-पुर-अनवार को दायरे मुकद्दस से उठाया गया और सब शरीक थे। फराह और रच के दरमियान आने पर जनाजा मुबारक इस कदर वजनी हो गया कि पलंग ले जाने वालों के कदम ना उठ सके सबने मिलकर तय कर लिया कि बस इसी जगह आपका मद्फन होगा। ये वही जगह थी जहाँ इमामुना की हायत-ए-तैयबा ही में जुम्मा के रोज आप पर और तमाम साथी हजरात पर फरिश्तों ने नूर के तबक न्यौछावर किए थे। यह जगह सुलैमान खुरासानी महदवी की थी जिसको सुलैमान बाग कहते थे। फराह और रच के लोगों को यह जगह पसंद आई हजरत सानी-ए-महदी रज़ि अल्लाहु अन्हु ने जब खरीदने की बात की तो सुलैमान खुरासानी ने अर्ज किया “गुलाम का जान-व माल महदी पर से फिदा है बाग को अल्लाह ने दिया है। और हिबाह है। यानि अल्लाह वास्ते आपको दे दिया गया है। लेकिन हजरत सानी-ए-महदी रज़ि अल्लाहु अन्हु ने इनको बहुत ही इसरार फरमाकर कीमत अदा फरमा दी। इस बाग में कब्र खुदवाई गई।

68. आखरी मौजिजा

हजरत सानी-ए-महदी रज़ि. कब्र में उतरे: आखरी मौजिजा (मुअजिजा) कफन मुबारक खाली था और हाजिरीन से मुखातिब होकर फरमाया इमामुना अलैहिस्सलाम ने फरमाया था कि “बन्दे को कब्र में उतारने के बाद (कफन में) ना पाओगे यह आखरी मौजिजा-ए-महदी अलै. भी महदियत की सच्चाई की दलील है। ये फरमाकर आपने कफन-ए-मुबारक में हाथ डाला तो कफन खाली पाया इमामुना अलै. का जिस्म ए-पुर-नूर कफन में ना था। इस मौजिजे से सहाबा ऐनुल यकीन से हक्कुल-यकीन के दरजे को पहुँच गए। सबसे पहले हजरत सानी-ए-महदी रज़ि. ने मुश्त-ए-खाक दी फिर सहाबा ने मुश्त-ए-खाक दी।

69. मीराँ सैयद महमूद हूबहू महदी हो गए

गिलाफ कर देने के बाद जब हजरत सानी-ए-महदी रजि. ऊपर आ गए तो महदी-ए-मौऊद अलै. के हूबहू और मुशाब्ह (बिलकुल महदी मौऊद अलै. जैसे) हो गए रेश-ए-मुबारक (आपकी मुबारक दाड़ी) जो पूरी सियाह थी आधी सफेद हो गई।

बन्दगी मियाँ रजि. ने सानी-ए-महदी” के प्यारे लकब से मुख़ातिब फरमाया:—

ये देखकर हजरत बंदगी मियाँ सैयद खुन्दमीर रजि. अल्लाहु अन्हु ने लोगों से फरमाया:— ब्रादरों हजरत सानी-ए-महदी रजि. की तरफ इशारा फरमाते हुए:— यह देखो “सानी-ए-महदी का जिल्ल-ए-आतिफत (साया-ए-पुर शफक्कत) खुदा ने हमको दे दिया है। इस इरशाद-ए-बन्दगी मियाँ रजि. को सुनकर सबने मुतवज्जा होकर देखा तो हजरत बन्दगी मियाँ सैयद महमूद सूरत-उल-शबाहत में सानी वो नजीर, शबीह व मसील-ए-महदी हो गए। पस्स इस रोज से कौम-ए-महदविया में आपको सानी-ए-महदी रजि. के प्यारे लकब से याद किया जाता है। और इन्शा अल्लाह कियामत तक यही लकब नुमायाँ और मुनफरिद रहेगा। इमामुना महदी मौऊद अलैहिस्सलाम के पर्दा फरमाने के बाद हजरत सानी-ए-महदी रजि. अल्लाहु अन्हु की मुबारक हयात तक मौजूद तमाम सहाबा मुहाजिरीन मुसद्दिकीन वगैरा को हजरत महदी मौऊद अलैहिस्सलाम की कमी महसूस ना हुई, क्योंकि हजरत सानी-ए-महदी रजि. के दौर और हजरत महदी अलै. के दौर में हस्ब-ए-फरमान महदी मौऊद अलै. एक सानियत रही कोई फर्क ना रहा और विसाल के बाद सारी कौम पर हजरत सानी-ए-महदी रजि. की दस्तगिरी और इनायात जारी व सारी हैं यह अल्लाह तआला का हमारी कौम पर एहसान अजीम और फजल-ए-बे पायाँ है। जो इन्शा अल्लाह कियामत

तक रहेगा हजरत महदी मौऊद अलैहिस्सलाम की कब्र—ए—मुनव्वरा को मिट्टी से ढाँक कर सब लोग दायरे को वापस हुए।

तमाम की दरखास्त पर हजरत सानी—ए—महदी रजि. अल्लाहु अन्हु ने बयान—ए—कुरआन फरमाया। जिससे सुनने वालों को हजरत महदी अलैहिस्सलाम के बयान की हलावत मिली और सबके दिलों को तसकीन हुई।

70. महदी से खुन्दमीर जुदा नहीं

हजरत मौलाना मियाँ अलाहदाद हमीद रजि. अल्लाहु अन्हु (जिनको तसबीह के अलफाज मालूम हुए थे) ने एक कसीदा—ए—तारीख लिखा और फिर सबको सुनाया खुद भी रोए और सब लोग भी रो दिए तारीख—ए—विसाल महदी—ए—मौऊद आमदा व रफत 910 हिजरी निकाली गई। लेकिन सबसे ज्यादा और सबसे प्यारा जो मादा—ए—तारीख बरआमद हुआ वो इअजाज ही इअजाज है और इस बात की शहादत देते हैं कि महदी से खुन्दमीर जुदा नहीं (यानि इस्म—ए—मुबारक “खुन्दमीर”)

अबजद के हिसाब से मियाँ रजि. अल्लाहु अन्हु के इस्म मुबारक के हुरूफ और अअदाद

	हुरूफ	अअदाद (नंबर)
1	ख—ए	600
2.	वाऊ	6
3.	नून	50
4.	दाल	4
5.	मीम	40
6.	ये	10
7.	रे	200
		910

सीरत पर बयान खत्म हुआ।

अर्ज है कि:-

इमामुना मीरों सैयद मुहम्मद महदी-ए-मौऊद अलैहिस्सलाम की सीरत-ए-मुबारका के तआल्लुक से किताब आपने पढ़ ली। हस्बे इरशाद हजरत बंदगी मियाँ सैयद युसूफ बाराह बनी इसराईल रहमतुल्लाही अलैह “सीरत-ए-मुबारका महदी ही हजरत महदी अलैहिस्सलाम के दावे का सुबूत है। इस नाचीज की ये ख्वाहिश है कि हर वक्त और बिल खुसूस जब सीरत इमामुना अलै. बयान करूँ तो हजरत बंदगी मियाँ शाह नुसरत मखसूस-उज-जमाँ रहमतुल्लाही अलैह का सदका नसीब हो कि हजरत बंदगी मियाँ शाह कासिम मुजताहिद-ए-गिरोह रहमतुल्लाही अलैह ने इमामुना अलैहिस्सलाम के हालात-ए-सफर हजरत शाह नुसरत से सुनकर फरमाया था। कि सैयद नुसरत नकल करना तुम्हारा हक है। इस तम्हीद के बाद आगे बढ़ते हैं। फरमान-ए-महदी अलै. मैं वली था। इस हाल में कि आदम पानी और मिट्टी के दरमियान थे यानि महदी नबी के साथ अजल में अल्लाह की विलायत के जहूर के नूर से बहुत करीब थे। (हाशिया-ए-इनसाफ नामा) सीरत का हर वाकिआ इस बात की गवाही देगा कि यही जात-ए-मुबारका थी, जिसको अल्लाह ने हुजूर सल्लल्लाहु अलैही व सल्लम के जैसा बनाया था। जो सूरत में, सीरत में, खुलक में आप सल्लल्लाहु अलैही व सल्लम जैसी थी और जो शरिअत में आपके ताबे थी और जिनको अल्लाह तआला ने अहकाम-ए-विलायत में हाकिम बनाया था। यह मरतबा ना आपसे पहले किसी को मिला था और ना ही आपके बाद कियामत तक किसी को मिलेगा।

इस किताब की तैयारी का मकसद व मन्शा हजरत महदी-ए-मौऊद अलैहिस्सलाम के अस्वह-ए-मुबारका अफआल-ए-मुबारका और अहवाल-ए-मुबारका के तआल्लुक से उन नौ जवानों को जो उर्दू पढ़ नहीं सकते लेकिन समझ सकते हैं बतलाना है।

हजरत बंदगी मियाँ सैयद शाह बुरहान रहमतुल्लाही अलैह ने अपनी किताब “हदीकतुल हकाइक में फरमाया है। जिसका मफहूम ये है कि रसूल और महदी अलैहिमुस्सलाम का दर्जा व मरतबा एक हैं। इनमें मरातिब का कोई फर्क नहीं है और दूसरे अम्बिया और अवलिया में से रोज-ए-अजल से कियामत तक कोई इनके बराबर है। ना था और ना होगा। खातिमैन मत्बू हैं मुर्शिद व मुकतदा मुख्बिर-ए-सादिक हैं (आमन्ना व सदकना) बयान का मफहूम खत्म हुआ।

हजरत शाह बुरहान ने जो कुछ फरमाया है इसकी तसदीक खातिमैन अलैहिस्सलाम के इरशादात-ए-मुबारका से हो गई।

हम मुसद्दिकीन के लिए खातिमैन अलैहिस्सलाम के तआल्लुक से एक मिसाल यूँ भी है। जैसे मोती एक दो सुराख, समा-अत एक दो कान, बीनाई एक दो आँखें। किताब सीरत-उल-महदी की तैयारी में सबसे ज्यादा मदद हजरत बंदगी मियाँ सैयद शाह बुरहान की ही एक और मशहूर व मअरूफ किताब “शवाहिदुल विलायत से ली गई है। बाज वाकिआत दूसरी कुत्ब जैसे अल-महदी-अल-मौऊद (मुस्सन्निफ हजरत सैयद हुसैन रजि. अल्लाहु अन्हु) और अंग्रेजी किताब “दी प्रॉमिस्ड वन (मुसन्निफ हजरत सैयद याकूब रौशन यदुल्लाही) और हजरत फकीर मुहम्मद नुरुद्दीन अरबी साहब की कुतुब “वालियान-ए-विलायत” (तीन जिलदें) वगैरा से भी लाए गए हैं। तहरीर को जहाँ तक हो सादा और आम फहम रखा गया है। ताकि अंग्रेजी से कम वाकिफ और ऊर्दू नहीं पढ़ सकने वाले भी इसको आसानी से पढ़ ले मुश्किल अल्फाज और खालिस मज़हबी इस्तिलाहात आ गए हैं। जिनसे यकीनन मुताल्लिए में दिक्कत होगी, हम इस सिलसिले में बेहद माफी चाहते हैं। इन अल्फाज और इस्तिलाहात के समझने के लिए इल्म वालों से और मुरशिदीन से पूछना और समझना बेहद जरूरी है। इस किताब की तैयारी में हजरत सैयद याकूब सलीम साहब किब्ला मरहूम व मगफूर ने पहल फरमाते हुए कम्प्युटर

टाइप करवाने को कहा अफसोस बीमारी के बाद वो इन्तिकाल फरमा चुके हजरत के फरजन्द अजीज़म मियाँ सैयद खुन्दमीर साहब ने वालिद मरहूम के कहे हुए को पूरा किया और कम्प्यूटर टाइप के अखरजात अदा कर दिए। अल्लाह तआला इनको अज़्र अता फरमाए और फरामीन ए—इमामुना पर चलाए। दूसरी अहम बात इस किताब की तैयारी में हजरत सैयद याकूब रौशन यदुल्लाही साहब से मुझे काफी मदद मिली। आपने मतन सुना, मुफीद इजाफों का या हजफ का मश्वरा दिया मैं तह दिल से मौसूफ का मशकूर हूँ छोटा मुँह बड़ी बात अल्लाह तआला मौसूफ को अपने रास्तों पर आने में मजीद तेजगाम करे।

सेन कम्प्यूटर्स के जनबा सैयद ईसा साहब का भी मशकूर हूँ आपने काफी मेहनत और दिलचस्पी से काम लिया। सिर्फ छपना बाकी था, एक अहल—ए—खैर ने इसकी छपवाई का जिम्मा लिया और नाम जाहिर ना करने की ख्वाहिश की क्योंकि नाम का इज़हार रियाकारी में आ जाता है जो शिर्क के बराबर है। अल्लाह तआला मौसूफ के दरजात बुलन्द फरमाए आमीन।

मैं जनाब शैख चान्द साजिद साहब का भी मशकूर हूँ। बाज अहम् वाकिआत को तवालत के खौफ से छोड़ दिया गया है। गलतियों से बचने की पूरी कोशिश की गई है। फिर भी गलतियां हो गई होंगी। अल्लाह तआला माफ फरमाए भूल चूक या गलतियों को नजर अन्दाज फरमाते हुये, उम्मीद है कि इत्तेलआ से नवाजेगें, ताकि अगले एडीशन में ऐसी गलतियां ना रहे।

दुआ है कि खुदा—ए—तआला अपना फजल हमारी कौम पर जारी रखे और हमें बाअमल बनाए और खातिमीन अलैहिस्सलाम के सामने शर्मिन्दा होने से बचाले—आमीन।

कम तरअज भाई कालू व भाई लालू

फकीर सैयद रफ़त जावीद (अहल—ए—कालाडेरा)

बिस्मिल्लाह हिरहमानिरहीम

हिन्दुस्तान में इस्लामी लिटरेचर अरबी और फारसी में दस्तियाब था। जब अट्ठारहवीं ई. (सदी) में उर्दू को उरूज मिलना शुरू हुआ तो मजहबी मवाद की उर्दू में मुन्तकीली का काम शुरू हुआ। यह काम दो तरह से शुरू हुआ, एक तो अरबी और फारसी से अहम किताबों के उर्दू तराजिम हुए और दूसरा नई किताबे भी उर्दू में तहरीर होना शुरू हुई। इस सिलसिले में कलकत्ते का फोर्ट विलियम कॉलेज और हैदराबाद का दारुत्तरजुमा खास अहमियत के हामिल हैं। देवबन्द, बरेली और नाड़बा वगैरह की खिदमत भी काबिले जिक्र है।

एक ज़माने तक महदवी कुतुब अरबी और फारसी में गैर मतबूअ हालत में मुख्तलिफ खान वादों में महफूज़ थी। महदवी लिटरेचर की उर्दू में मुन्तकीली का काम बड़े पैमाने पर दारूल-इशाअत कुतुब-ए-सल्फुस्सालिहीन जामिआत-ए-महदविया, दायरे जामिस्तानपुर, मुशीराबाद ने किया। और इस काम की खूबी ये है कि तरजुमे के साथ असल फारसी या अरबी मतन भी शाये किया जाता है। इस तरह ना सिर्फ किताबों का तुर्जमा उर्दू में हुआ बल्कि असल किताबे अरबी या फारसी की भी महफूज़ हुई। इस सिलसिले में इदारा-ए-शम्सिया वगैरह भी काबिल-ए-जिक्र हैं। इनफ़रादी तौर पर लोगों ने जुस्तजू की और कई अहम तसनीफ मन्जर-ए-आम पर आई।

अभी उर्दू का काम अपने वाम-ए-उरूज पर था कि अचानक उर्दू का चलन कम होना शुरू हुआ और अंग्रेजी तालीम का चर्चा आम हुआ। ये बात पूरे हिन्दुस्तान पर लागू होती है। आजादी के बाद के दौर में एक नसलें उर्दू और अंग्रेजी से एक साथ इस्तिफादा कर सकती थी, लेकिन अब जो नस्ल तैयार हो रही है। वो उर्दू पढ़ने-लिखने से मजबूर और अंग्रेजी हिन्दी से वाकिफ है। बड़े पैमाने पर इस्लामी लिटरेचर तिजारती अन्दाज़ में अंग्रेजी में मुन्तकिल होना शुरू हो गया और आज तकरीबन तमाम अहम किताबें अंग्रेजी

में मुन्तकिल हो चुकी है। मगर एक अलमिया है कि महदविया मज़हबी लिटरेचर की तरफ गिरोह-ए-महदविया के इदारो ने कोई तवज्जो नहीं की।

आज तक भी बीसियो मज़हबी किताबें हर साल उर्दू में शायी होती हैं। अंग्रेजी में तनज़ीम-ए-महदविया की तरफ से पहले किताब सवानेह महदी-ए-मौऊद "दी प्रोमिस्ड वन" शायी हुई। कुछ इनफिरादी कोशिश से एक ओर सवानेह "दी महदी-ए-मौऊद" और अन्जुमन-ए-महदविया की तरफ से एक ओर सवानेह "दी फ्रॉगेन्स ऑफ खलीफतुल्लाह" शायी हुई। फिर एक अरसे दराज के बाद "चिराग-ए-दीन-ए-नबी (स.अ.व.)" का तर्जुमा और नकलियात की एक किताब "इन्साफ नामा" अंग्रेजी में शायी हुई, लेकिन यह बहुत ही ना काफी कोशिश है। जरूरत इस बात कि है कि दारूल कुतुब-ए-सलफुरस्सालिहीन के पैमाने पर पूरे महदविया लिटरेचर की अंग्रेजी में मुन्तकिल किया जाये, ताकि हमारी आने वाली नसलें कौमी विरसे से महरूम ना हों। इस मसले को हल करने के लिये जनाब सैयद रफत जावीद साहब ने एक नए अन्दाज में कोशिश की है, जो एक तरह से हमारे गिरोह के लिए रहनुमाई भी हो सकती है। उन्होंने रोमन इंग्लिश में तहरीर किया और एक सवानेह "महदी-ए-मौऊद" तैयार कर ली, जो कि यह एक बहुत ही छोटी कोशिश है, लेकिन रहबराना अन्दाज लिए हुए हैं। अगर हम हमारी कौमी किताबों को इस अन्दाज में भी शायी कर ले तो बड़ी हद तक हमारा मसला हल हो सकता है। क्योंकि अन्दुरन-ए-मुल्क तकरीबन सारे अफराद इससे इस्तिफ़दा कर सकते हैं। और कुछ हद तक बेरून मुल्क जिन घरों में उर्दू बोल-चाल बाकी है उनके लिये भी यह चीज मुफीद साबित हो सकती है।

जनाब रफत जावीद हजरत सैयद सादुल्लाह साहब मरहूम के इकलौते साहबजादे हैं। इस तरह यह कौम के एक कदीम और मशहूर खान्दबादे यानि कालाड़ेरा के चश्म-व-चिराग है। और ननिहाल की तरफ से हजरत अल्लामा सैयद शहाबुद्दीन साहब कबलह रहमतुल्लाही अलैह (मौलवी साहब) के नवासें

हैं। इस तरह जावीद मियां को ददहियाल और ननिहाल हर दो तरफ से मजहबी और इल्मी जौक विरसे में मिला है। और इसी जौक की वजह से उन्होंने इस किताब की तहरीर के लिये काफी जुस्तजु की।

जनाब सैयद रफत जावीद ने बड़ी ख्वाहिश से सवानेह तैयार की है, जिसमें ना सिर्फ वाकियात की सेहत पर तवज्जोह दी गई है, बल्कि तसल्सुल का भी ख्याल रखा गया है। जुबान भी आसान रखी गयी है। तवक्को की जाती है कि ये किताब नौजवानों में काफी मकबूल होगी, और इस नाहिज काम को आगे बढ़ाया जायेगा।

खुदा से दुवा है कि हमारे गिरोह को सोहबत, इल्म और अमल की दौलत से मालामाल कर दे।

“आमीन”

फकीर सैयद याकूब रोशन यदुल्लाही

नोट:—कौम की जरूरत के लिहाज से अब इस सवानेह को रोमन इंग्लिश से हिन्दी में छपवाया गया है।